वार्षिक पत्रिका : 2018-19 (वि.स. 2075-76)

तमसो मा ज्योतिर्गमय

चमन संदेश

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

हमारे प्रेरणा पुंज

कीर्तिशेष पंडित चमन लाल शम

जगमग रहेंगे दीपक तुम तो जला गये हो, रोशन रहेंगी राहें तुम जो दि गये हो।
कर्म रहा जिन का धर्म शिक्षा को पूर्ण समर्पण, उस मानव को नमन प्रभु च पर अर्पण।।

चमन संदेश

वार्षिक पत्रिका : 2018–19 (वि.स. 2075–76)

मुख्य संरक्षक
श्री ईश्वर चन्द शर्मा, संस्थापक
(चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार)
श्री राम कुमार शर्मा, अध्यक्ष, प्रबंध समिति

संरक्षक
श्री अरुण कुमार हरित, सचिव, प्रबन्ध समिति
श्री अतुल हरित, कोषाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

मार्गदर्शक
डॉ. सुशील उपाध्याय, प्राचार्य

सम्पादक
डॉ. तरुण कुमार गुप्ता

सम्पादक मंडल
- श्री आशुतोष शर्मा
- डॉ. अनिता रानी
- डॉ. अपर्णा शर्मा
- डॉ. किरन शर्मा
- डॉ. ऋचा चौहान

छात्र सम्पादक
- अंशुल (B.Sc. Ist)
- अब्दुल समद (B.Com. Ist)
- युसरा (B.Sc. IInd)
- प्रतिभा (B.Com. IInd)
- तनु (B.A. Ist)
- स्वाति (B.A. IInd)

प्रकाशक
प्राचार्य, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा (हरिद्वार)

मुद्रक
समय साक्ष्य, 15 फालतू लाईन
देहरादून–248001
फोन: 0135–2658894

ISBN : 978-93-88165-44-0

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा
जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

आगामी अंक के लिए आपके सुझाव हेतु
Email:editorclm@gmail.com
Ph.: 9997998050, 9917489599

महाविद्यालय के संस्थापक

पंडित ईश्वर चन्द शर्मा

श्री राम कुमार शर्मा, अध्यक्ष, प्रबंध समिति

आज चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम बन चुका है। यहाँ सुयोग्य अध्यापकों द्वारा विषयों के अध्यापन के साथ–साथ छात्र–छात्राओं के अन्दर समाज के प्रति सेवा भाव, राष्ट्र के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम को ओर दृढ़ किया जाता है। ग्रामीण परिवेश में स्थित यह महाविद्यालय युवाओं का बहुमुखी विकास करेगा, इस आशा के साथ सभी अभिभावकों एवं छात्र–छात्राओं से राष्ट्र निर्माण के यज्ञ में सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। हम सभी कीर्तिशेष पं. चमन लाल जी के जीवन–आदर्शों को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। इस अखण्ड यात्रा मे सभी सहयोगी, शुभचिंतकों, प्रबन्ध समिति के समस्त पदाधिकारी गण, प्राचार्य, शिक्षकवृंद एवं कर्मचारी और बड़े लक्ष्यों के लिए कार्य करेंगे, ऐसी कामना है।

श्री अरुण कुमार हरित
सचिव, प्रबंध समिति

श्री अतुल हरित
कोषाध्यक्ष, प्रबंध समिति

प्रकाश पन्त
मंत्री
विधायी, संसदीय कार्य, भाषा, वित्त,
आबकारी, पेयजल एवं स्वच्छता,
गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग

उत्तराखण्ड सरकार

विधान भवन
देहरादून – 248001
दूरभाष : 0135–2665088 (का.)
0135–2665988 (फै.)
0135–2740844 (आ.)
Email : pant174@gmail.com

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'चमन संदेश'' का गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से लण्ढौरा (रूड़की) के ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र समुदाय को उच्च शिक्षा से सम्बन्धित शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी मिलेंगी। महाविद्यालय द्वारा उच्च शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने एवं छात्र समुदाय की प्रतिभा को निखारने में यह पत्रिका ''चमन संदेश'' महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी। उम्मीद करता हूँ कि पत्रिका के माध्यम से पाठकों को उच्च शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होंगी, जो कि उनके भविष्य के लिए भी सहायक सिद्ध होगी। महाविद्यालय का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

''चमन लाल महाविद्यालय'' की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए वार्षिक पत्रिका ''चमन संदेश'' के उद्देश्यपूर्ण सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(प्रकाश पन्त)

पुण्य-स्मरण

इस पत्रिका के प्रकाशन की प्रक्रिया के दौरान दिनांक 05 जून, 2019 को श्री प्रकाश पंत जी का आकस्मिक निधन हो गया। महाविद्यालय परिवार एवं सम्पादक मण्डल उनके प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

सम्पादक

डॉ. हरक सिंह रावत
मंत्री
वन एवं जीव, पर्यावरण एवं
ठोस अपशिष्ट निवारण, श्रम, सेवायोजन,
कौशल विकास, आयुष एवं आयुष शिक्षा

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन उत्तराखण्ड
कक्ष सं. : 07
देहरादून - 248001
दूरभाष : 0135-2665155 (का.)
0135-2665399 (फै.)
0135-2531210 (आ.)
9411114793 (मो.)

संदेश

यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि चमन लाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लण्ढौरा, जनपद हरिद्वार द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका '**चमन संदेश**' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में विभिन्न विषय विशेषज्ञों, पत्रकारों, सहित्यकारों व लेखकों के लेख प्रकाशित किये जाएंगे। पत्रिका में महाविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी, विभिन्न समसायियक विषयों पर आधारित लेख, कहानी कविता, सामान्य जानकारियां व महत्वपूर्ण जानकारियां का भी प्रकाशन किया जायेगा। पत्रिका के माध्यम से ही महाविद्यालय की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की महत्वपूर्ण जानकारी व संस्कृति, धार्मिक तथा पारम्परिक रीति-रिवाजों का ज्ञान पाठकों एवं आम जनमानस को सहजता से प्राप्त हो सकेगी।

चमन लाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लण्ढौरा, जनपद हरिद्वार के द्वारा प्रकाशित पत्रिका '**चमन संदेश**' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. हरक सिंह रावत)

Email : info@cldcollege.com
cldegree21@gmail.com
Website : www.cldcollege.com

Mob. : 9997998050
Mob. : 09927027669

चमन लाल महाविद्यालय

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA

सम्बद्ध- श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी (गढ़वाल)
लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

पत्रांक :

दिनांकः .....

शुभ संदेश

यह हम सभी के लिए प्रसन्नता का विषय है कि चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) की वार्षिक पत्रिका 'चमन संदेश' का नवीन संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। यद्यपि इस तरह की पत्रिकाओं में महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की रचनाओं को प्राथमिकता के आधार पर स्थान दिया जाता है, तथापि विद्यार्थियों की रचनाओं से संस्था की गुणात्मक झलक दिखाई पड़ती है।

महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के अनुशासनात्मक परिवेश में अध्ययन करने, प्रतियोगी परीक्षाओं में स्थान बनाने तथा सामाजिक क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करते रहने संबंधी खबरें पढ़कर मुझे काफी प्रसन्नता होती है।

मैं महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों व विशेष रूप से सम्पादक, सम्पादक मण्डल एवं प्राचार्य को बधाई देता हूँ। जिनके रचनात्मक प्रयास से पत्रिका के आगामी अंक का सफल प्रकाशन होने जा रहा है। इस श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं

R Sharma

(राम कुमार शर्मा)
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

Email : info@cldcollege.com
cldegree21@gmail.com
Website : www.cldcollege.com

Mob. : 9997998050
Mob. : 9927027660

चमन लाल महाविद्यालय
CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA

सम्बद्ध- श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी (गढ़वाल)
लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

पत्रांक :

दिनांक: ....

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका "चमन संदेश" का आगामी अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

आशा है, पत्रिका में महाविद्यालय से संबंधित विभिन्न प्रकार की जानकारियां, कतिपय ज्ञानवर्द्धक, रूचिपरक एवं सारगर्भित जानकारियों का समावेश होगा। इस पत्रिका में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के सारगर्भित लेख भी छात्र-छात्राओं के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई। महाविद्यालय परिवार को नववर्ष 2019 की हार्दिक शुभकामनाएं।

(अरुण कुमार हरित)
सचिव, प्रबंध समिति

Email : info@cldcollege.com
cldegree21@gmail.com
Website : www.cldcollege.com

Mob. : 9997998050
Mob. : 09927027669

चमन लाल महाविद्यालय

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALYA

सम्बद्ध- श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी (गढ़वाल)
लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

पत्रांक :

दिनांकः .....

शुभ संदेश

हम सबका जीवन लक्ष्य एक हो, हृदय और मन एक हों ताकि हम परस्पर मिलकर जीवन में उस एक लक्ष्य को प्राप्त करें जो समन्वय और सहयोग की भावना से अनुप्राणित हो। कुछ भी बनने से पूर्व हम मनुष्य बनें और बनाये।

अस्तु 'चमन संदेश' को एक नये कलेवर में सादगी से सजाकर आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय हैं। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'चमन संदेश' का प्रकाशन शैक्षणिक, समृद्धता, अर्थगाम्भीर्यता युक्त हो, ऐसी मै आशा करता हूँ।

मै माँ सरस्वती का वरदहस्त प्राप्त करने वाले महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक, संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(अतुल हरित)
कोषाध्यक्ष, प्रबंध समिति

उठो, जागो, लक्ष्य की ओर बढ़ो....

उठो, जागो, लक्ष्य की ओर बढ़ो...'चमन संदेश' का दूसरा अंक आपके सामने है। इस पत्रिका में गुणात्मक और रचनात्मक, दोनों स्तरों पर बदलाव दिखाई देंगे। यह रचनात्मक मंच और बड़े रूप में आपके सामने है। महाविद्यालय प्रबंध समिति के माननीय अध्यक्ष श्री रामकुमार शर्मा जी लगातार इस बात पर जोर देते रहे हैं कि महाविद्यालय पत्रिका एक उच्च स्तरीय प्रकाशन होना चाहिए और इसमें शिक्षकों, कार्मिकों और छात्र–छात्राओं की रचनात्मक सहभागिता होनी चाहिए। पत्रिका के स्तर को प्रामाणिक बनाने के लिए गत वर्ष से ही इसके लिए आईएसबीएन नंबर प्राप्त किया गया। इसका अर्थ यह है कि पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, टिप्पणी या सामग्री को वही स्तर प्राप्त है जो किसी पुस्तक में प्रकाशित सामग्री को होता है।

गत सत्र में पत्रिका में हिंदी, अंग्रेजी के अलावा संस्कृत में लिखी गई सामग्री को सम्मिलित किया गया है। इस बार उर्दू में लिखी गई सामग्री को भी पत्रिका का हिस्सा बनाया गया है। चूंकि, महाविद्यालय में लगभग आधे बच्चे अल्पसंख्यक समुदाय से संबंध रखते हैं, इसलिए उनकी भाषा के संरक्षण–संवर्धन के दायित्व को भी महाविद्यालय महसूस करता है। मौजूदा सत्र में महाविद्यालय में अनेक शैक्षिक– अकादमिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इनमें राष्ट्रीय स्तर के आयोजन भी सम्मिलित हैं। सभी विभागों को इस बात के लिए प्रेरित किया गया कि वे अपने छात्र–छात्राओं को शैक्षिक टूर पर लेकर जाएं और विभाग में शोध–संगोष्ठियों आदि भी आयोजित कराए।

महाविद्यालय के स्तर से लगातार यह प्रयास किया जा रहा है कि कम्युनिटी के साथ और गहरा रिश्ता स्थापित किया जाए। इसी क्रम में गोपालपुर गांव के दो विद्यालय गोद लिए गए। इन विद्यालयों में पेयजल और शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराई गई और सभी बच्चों को ट्रैक सूट वितरित किए गए। भारत सरकार की एक योजना के तहत चार गांवों के विकास कार्यों के मूल्यांकन का अवसर भी महाविद्यालय को मिला है। एन.एस.एस. के स्वयंसेवियों ने क्षेत्र में स्वच्छता, बालिका शिक्षा आदि को लेकर जागरुकता अभियान संचालित किए हैं। हम सभी के लिए यह बड़ी उपलब्धि है कि अभिभावकों और कम्युनिटी के जिम्मेदार लोगों का सहयोग निरंतर बढ़ रहा है। इस साल जो बड़े कार्य किए गए हैं, उनका विवरण आगामी पृष्ठों में दर्ज है। महाविद्यालय प्रबंध समिति ने वर्ष 2019 में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद यानि नैक से ग्रेडिंग हासिल करने का निर्णय लिया

है। इस कार्य में छात्र–छात्राओं की सक्रिय सहभागिता अनिवार्य होगी। इससे पूर्व महाविद्यालय नैशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिग फ्रेमवर्क अर्थात NIRF से रैंकिंग प्राप्त करने की प्रक्रिया पूर्ण की गई है।

महाविद्यालय ने लंढौरा ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक–बौद्धिक और सामाजिक विकास के लिए जो लक्ष्य तय किए हैं, उनकी प्राप्ति के लिए सभी शिक्षक और कर्मचारी हर संभव कोशिश कर रहे हैं। पढ़ाई और अनुशासन हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण दायित्व है। इसी क्रम में परीक्षा की शुचिता को बनाए रखना और शिक्षण–सह गतिविधियों में छात्र–छात्राओं की भागीदारी तय करना भी महत्त्वपूर्ण लक्ष्य हैं। महाविद्यालय द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि प्रथम वर्ष में प्रवेश पाने वाला हरेक विद्यार्थी एन.सी.सी., एन.एस.एस., रोवर्स रेंजर्स, स्पोर्ट्स अथवा सांस्कृतिक गतिविधियों में से कम से कम किसी एक गतिविधि में अनिवार्य तौर पर प्रतिभाग करे।

निजी तौर पर मेरा मानना है कि चमन संदेश के आगामी अंक पूरी तरह छात्रों की रचनात्मक गतिविधियों पर केन्द्रित हों। इस वर्ष हिंदी विभाग द्वारा लोक कथाओं के संकलन का कार्य शुरु किया गया है। अच्छी संख्या में लोककथाएं एकत्र होने पर इन्हें विशेषांक के तौर पर प्रकाशित कराया जा सकता है। इसी तरह के प्रयास अन्य विभाग भी कर सकते हैं। जैसे चित्रकला विभाग के छात्र–छात्राओं के लिए इस पत्रिका में एक अलग सेक्शन निर्धारित किया जा सकता है।

इस सत्र में महाविद्यालय के जिन शिक्षकों ने उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं, उन्हें साधुवाद। उनसे उम्मीद है कि आगामी सत्रों में भी इस क्रम को बनाए रखेंगे और ऐसी उपलब्धियां हासिल करने के लिए अन्य शिक्षकों को भी सहयोग देंगे। जिन छात्र–छात्राओं ने विशिष्ट उपलब्धियों प्राप्त की हैं, उनके शिक्षकों और अभिभावकों को बधाई। हम सभी की जिम्मेदारी है कि उपलब्धियों का क्रम रुकना नहीं चाहिए। बड़े लक्ष्यों के लिए निरन्तर प्रयास करना चाहिए। शास्त्र कहते हैं – **"उत्तीष्ठत् जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत।"**

इति शम

डॉ. सुशील उपाध्याय
प्राचार्य

सोशल मीडिया

असामाजिक तत्वों से रहें सावधान

मौजूदा दौर में आदमी भले ही अपने परिवार–पड़ोस के निरंतर सम्पर्क में नहीं रहता हो लेकिन अधिकतर सोशल मीडिया में एक्टिव जरुर रहते हैं। बैंक में एकाउंट हो न हो लेकिन फेसबुक, ट्विटर, वट्सअप पर एकाउंट जरूर मिलता है। सोशल मीडिया महिलाओं के लिए हथियार बनकर उभरा है। महिला उत्पीड़न के मामले अब घर की चारदीवारी में दफ़न नहीं होते बल्कि सोशल मीडिया पर वायरल होकर देश की सीमायें भी लाँघ जाते हैं। सबसे बड़ी उपलब्धि महिलाओं ने हासिल की, वह यह कि उन्होंने बोलना सीखा। वे मुखर रुप से अपनी समस्याओं को लेकर दुनिया के सामने आयीं। उन्होंने दुनिया के साथ न केवल अपनी सामाजिक समस्याएं साझा कीं, बल्कि अपनी बेहद निजी या व्यक्तिगत समस्याओं को भी साझा करने की हिम्मत दिखायी। सोशल मीडिया पर महिला समर्थित कई ऐसे कैंपेन चले, जिन्होंने उनकी आवाज को दुनिया के समक्ष रखने में उनकी मदद की।

सोशल मीडिया को हमने हथियार की तरह प्रयोग करना तो सीख लिया लेकिन महिलाओं ख़ासकर छात्राओं को ये भी समझना होगा कि सोशल मीडिया का दुरुपयोग भी होने लगा है। कुछ आपराधिक घटनाओं ने महिलाओं के लिए सोशल साइट्स पर सुरक्षा को लेकर सवाल खड़ा किया है। सोशल मीडिया का सबसे बड़ा खतरा हैकर्स का हैं। यानि साइबर क्रिमिनल। ये कोई भी टेक्निकल व्यक्ति हो सकता है जिसे सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान हो और या तो फिर कोई ऐसा व्यक्ति जिसके पास आपके जाने अनजाने पर्सनल डिटेल हाथ लग जाये, तो वो इसका फ़ायदा उठा सकता है। साइबर क्राइम सबसे ज़्यादा महिलाओं के साथ होता है और 60% अपराधी ऐसे लोग होते हैं जो आपको जानते हैं। अनुष्का शर्मा, नर्गिस फाखरी, दीपिका पादुकोण इत्यादि अनेक सैलीब्रिटीज हैं जिन्हें सोशल मीडिया पर अभद्र कमैंट्स मिले। इसी प्रकार आम युवतियों की वॉल पर भी अनेक लोग महिलाओं को टार्गेट करके चुटकुले या अश्लील टिप्पणियां भेज देते हैं। ऐसा अक्सर उन महिलाओं के साथ होता है जो राजनीति, सामाजिक या महिलाओं के मुद्दों पर अपने विचार खुल कर रखती हैं।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के मुताबिक, 2013 के मुकाबले 2016 में साइबर अपराधों के ग्राफ में 116% का उछाल आया। इससे भी ज्यादा तेजी सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म से हुए साइबर अपराधों में हुई हैं। चारों सालों में 553% की रफ्तार से सोशल मीडिया पर अपराध बढ़े हैं।

साइबर सेल या स्थानीय थाने सोशल वेबसाइट पर होने वाले अपराधों को आईटी एक्ट की धारा 66 बी से लेकर 66 ई तक में दर्ज करते हैं। देश में हर साल करीब 20 से 25% की रफ्तार से साइबर क्राइम बढ़ रहे हैं। कुल साइबर क्राइम में से हर तीसरा केस सोशल मीडिया से जुड़ा होता है।

महिलायें बरतें ये सावधानियाँ

महिलाओं को भी पुरुषों के समान ही आजाद और बेखौफ जिंदगी जीने का अधिकार है लेकिन सोशल मीडिया पर एक्टिव रहते समय कुछ बातों का ख्याल रखने की जरुरत है। सबसे पहले तो सोशल मीडिया पर अपनी निजी तस्वीरें न डालें अगर कोई गलत मकसद से आपका प्रोफाइल देख रहा है तो वो आपकी तस्वीरों का इस्तेमाल कर सकता है।

अगर फिर भी आप तस्वीरें डालना चाहते हैं तो अपने फेसबुक अकांउट पर प्राइवेसी सेटिंग्स को पब्लिक न करें। सेटिंग्स ऐसे रखें कि आपकी फोटो आपके दोस्त या आपसे जुड़े हुए लोग ही देख पाएं। अनजान लोग उन तक न पहुंचे। अक्सर लोग अनजान लोगों को जोड़ लेते हैं ये सबसे बड़ी गलती साबित हो सकती है। किसी महिला के लिए क्योंकि जब आप किसी व्यक्ति को जानते नहीं हो, ता इस बात का फायदा तो अपराधी उठा सकता है और आपकी पर्सनल जानकारी का गलत इस्तेमाल कर सकता है, क्योंकि वो इस बात को जनता है की उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

अपने नाम के बारे में गूगल पर हमेशा सर्च करते रहें ताकि आपको पता रहे कि आपका नाम कहां पर और किस–किस वेबसाइट पर आ रहा है। अगर किसी गलत जगह पर या ऐसी जगह पर आपको नाम दिखाई देता है जिसकी अनुमति आपने नहीं दी है, तो उसे तुरंत हटाने के लिए कहें। ट्विटर के ऊपर बिल्कुल भी निजी तस्वीरें न डालें। यह एक सोशल नेटवर्किंग साइट नहीं है, यह एक ट्विटिंग प्लेटफार्म है। ट्विटर पर ऐसी सेटिंग्स की जा सकती हैं कि आपकी अनुमति के बिना लोग आपको फॉलो न कर सके। लेकिन, अमूमन लोग ऐसा करते नहीं है। सेटिंग्स को ज्यादा निजी करके आपका अकाउंट ज्यादा सुरक्षित रह सकता है। आप कई बार किसी का अकाउंट ब्लॉक कर देते हैं या उसकी रिपोर्ट कर देते हैं। इसके बाद ब्लॉक किया हुआ शख्स आपके अकाउंट तक नहीं पहुंच सकता, लेकिन ध्यान रखें कि वो किसी दूसरे अकाउंट से आप को ढूंढ सकता है और आप तक पहुंच सकता है। ऐसे में किसी दूसरे अनजान प्रोफाइल की फ्रैंड रिक्वेस्ट स्वीकारने से पहले इस बात को दिमाग में रखें की कहीं ये कोई ऐसा तो नहीं जो मेरी निजी जानकारी हैक कर ले और सबसे बड़ी बात अगर आपको किसी ऐसे व्यक्ति से फेसबुक पर रिक्वेसट आयी है जो आपके प्रोफाइल में पहले से है तो ये बात पहले उस व्यक्ति से पूछें कि क्या आपने अपने नाम से कोई दूसरा प्रोफाइल भी बनाया है अगर वो कहता है कि नहीं तो समझ लीजिए की ये कोई फेक एकाउंट है।

ध्यान रहे कि सोशल मीडिया के किसी भी प्लेटफार्म पर हमें सावधानी बरतनी है, इसके बावजूद अगर आपको निशाना बनाया जाता है, आपके खिलाफ कोई अपराध होता है तो डरें नहीं, डटकर मुकाबला करें। कानून आपके साथ है।

डॉ. दीपा अग्रवाल
उप प्राचार्या

सम्पादक की कलम से

प्रियबन्धुओं,

नव वर्ष 2019 की शुभकामनाओं के संग महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'चमन संदेश' का नवीन संस्करण चमन संदेश के इस अंक में शैक्षिक, सांस्कृतिक, खेल, कला, विज्ञान के साथ ही ज्ञानवर्द्धक लेखों का भी समावेश है। आपके समक्ष रखते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) व राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) जैसी गतिविधियों को भी सम्मिलित किया गया है। नवीन शोधों एवं उर्दू के लेखों को भी इस संस्करण के माध्यम से आप तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

आजकल देश में Whatsapp/Facebook की बढ़ती लोकप्रियता से हमारा जीवन प्रभावित हुआ है। जिसमें विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पा रहा है। अतः युवाओं को इंटरनेट का प्रयोग करते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है। गुरु आश्रित ज्ञान ही छात्र को नम्र और समाज सापेक्ष बनाता है।

मुझे प्रसन्नता है कि हमारे विद्यार्थी पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त शिक्षणोत्तर क्रिया कलापों में भी भागीदारी निभा रहे हैं, उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को निखारने के लिए महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका सफल रही है। मुझे विश्वास है 'चमन संदेश' का यह नवीन संस्करण छात्र–छात्राओं को रचनात्मकता की और प्रेरित करेगा।

पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग के लिए मैं महाविद्यालय प्रबंध समिति, प्राचार्य सभी शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं छात्र–छात्राओं का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग से पत्रिका का नवीन अंक आप तक पहुँच सका।

यह नवीन संस्करण आपको कैसा लगा आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा। आप सभी के प्रति आभार।

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता
सम्पादक

अनुक्रमणिका

- शुभकामना संदेश
- प्राचार्यीय
- सम्पादकीय

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण	 7
2.	वर्तमान में जैविक खेती की आवश्यकता	 9
3.	स्वच्छता एवं पर्यावरण	 10
4.	कार्यक्षमता को तीव्र करने वाली 21 न्यूरोबिक मस्तिष्क व्यायाम	 11
5.	वर्तमान समाज में शिक्षा की आवश्यकता	 12
6.	सुविचार	 13
7.	समूह बीमा–एक आवश्यकता	 14
8.	विचार	 15
9.	भारतीय संस्कृति की विशेषताएं	 16
10.	ग्लोबलाइजेशन (वैश्वीकरण)	 17
11.	ग्लोबल वार्मिंग	 18
12.	जीवन शैली बना रही बीमार	 19
13.	स्वच्छ भारत अभियान	 20
14.	डॉ. कलाम का जीवन परिचय	 23
15.	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	 24
16.	भारत के मिसाइलमैन	 25
17.	शिक्षा के विकास में पुस्तकालय की भूमिका	 26
18.	एशियाई राष्ट्रों की भूमिका एवं प्रभाव	 28
19.	भारत रत्न डॉ बी.आर. अंबेडकर	 29
20.	बाबा साहब भीमराव अंबेडकर	 29
21.	मित्रता की मिसाल	 30
22.	नीति वचन	 31
23.	भारत में जातिवाद व रंगभेद	 32
24.	हिन्दी है देश की धड़कन	 33
25.	शिक्षा का महत्व	 34
26.	माँ की अभिलाषा	 34
27.	आपकी वाणी आपका व्यक्तित्व	 35
28.	सड़क दुर्घटनाएं	 35
29.	नई पीढ़ी और स्मार्ट फोन	 36
30.	विश्वास खरीदा नहीं जा सकता	 36
31.	पलक झपकते ही निकालें वर्ग	 37
32.	गिलहरी धन्य हो गई	 38
33.	तितली का संघर्ष	 38
34.	सफलता के लिए	 39
35.	वीरांगना झाँसी की रानी	 40
36.	भारतीय काव्य शास्त्र में रस का महत्व	 41
35.	प्रेरक विचार जो आपकी जिन्दगी बदल देंगे	 42

36.	स्काउट का महत्व	 43
37.	हिन्दुस्तान स्काउट एण्ड गाइड	 43
38.	स्काउटिंग	 44
39.	वैज्ञानिक सोच	 45
40.	विज्ञान के आविष्कारक	 45
41.	जीवन में सफलता	 46
42.	योग विज्ञान है	 46
43.	रोचक जानकारियाँ	 47
44.	शत-प्रतिशत (100%)सफलता	 48
45.	अमृत वचन	 48
46.	महान गणितज्ञ एवं उनका योगदान	 49
47.	मेरे सपनों का भारत	 50
48.	हमारा महाविद्यालय	 50
49.	शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान	 51
50.	मेरी माँ	 51
51.	आदर्श शिक्षक	 51
52.	माँ	 52
53.	माँ की लोरी	 52
54.	बेटी से माँ तक का सफर	 53
55.	क्या है बेटियाँ	 53
56.	माँ क्या है	 53
57.	बेटी का जीवन	 54
58.	माँ की ममता	 54
59.	माँ की तड़प	 55
60.	बेटी की मुस्कान	 55
61.	घर की शान लड़कियाँ	 55
62.	भारत की बेटी	 56
63.	माँ का आर्शीवाद	 56
64.	माँ का रिश्ता	 57
65.	माँ की दुआ	 57
66.	ममता की छाँव	 57
67.	माँ-बाप को कभी भूलना नहीं	 58
68.	बेटियाँ	 58
69.	माता-पिता का प्यार	 59
70.	अमन का पैग़ाम	 59
71.	माँ के नाम	 60
72.	बेटियाँ	 60
73.	पिता	 61
74.	दोस्त	 61
75.	पिता का प्यार	 61
76.	दोस्ती का अहसास	 62
77.	गुरु	 62
78.	सुविचार	 63
79.	शांति वचन	 63
80.	कीमती विचार	 64
81.	राष्ट्र का निर्माण	 64
82.	प्रेरणादायी वचन	 65

83.	अमृत वचन	.....	65
84.	सुविचार	.....	65
85.	अनमोल विचार	.....	66
86.	जीवन मंत्र	.....	66
87.	अपना विचार	.....	67
88.	स्कूल के दिन	.....	67
89.	मैं बोझ नहीं हूँ	.....	68
90.	जिन्दगी का सफर	.....	68
91.	हिम्मत न हारो	.....	68
92.	अगर आप सोचते हैं	.....	69
93.	मेरे मन की अभिलाषा	.....	69
94.	एक दीया शहीदों के नाम	.....	70
95.	मैं गर्व कर सकूँगा	.....	71
96.	हिन्दी	.....	71
97.	स्टूडेन्ट	.....	72
98.	भगत सिंह के विचार	.....	72
99.	चिंतन	.....	72
100.	पेड़ लगाओ	.....	73
101.	कोशिश कर	.....	73
102.	जिंदगी का चिराग	.....	73
103.	जीतने वाला बनाम हारने वाला	.....	74
104.	समय का महत्व	.....	75
105.	नोटबंदी पर ग़ालिब का दर्द	.....	75
106.	मेरा गाँव	.....	76
107.	एक दीप जला दें	.....	76
108.	मुझे मत काटो	.....	76
109.	आज़ादी	.....	77
110.	ऐतिहासिक तथ्य	.....	77
111.	पैसा जीवन का उद्देश्य नहीं	.....	78
112.	जीवन के तीन मंत्र	.....	78
113.	प्रकृति	.....	78
114.	पैसे की सीमा	.....	79
115.	जिन्दगी के स्टेटस	.....	79
116.	नौकरी	.....	80
117.	आओ फिर दीप जलाएं	.....	80
118.	शायरी	.....	81
119.	शिक्षक	.....	81
120.	किताब	.....	81
121.	शांति की तलाश	.....	82
122.	जीवन बीत चला	.....	82
123.	अँधेरी रात	.....	83
124.	भूल	.....	83
125.	क्या लिखूँ	.....	83
126.	विश्वास कर्म पर	.....	83
127.	दुनिया का बोझ	.....	84
128.	आस	.....	84

129.	मेरे मन की अभिलाषा	85
130.	जीवन में अनमोल वचन	85
131.	कविता	85
132.	भारत के वीर जवान	86
133.	शिक्षक का ज्ञान	86
134.	अडिग मन	87
135.	कविता	87
136.	विचार	87
137.	कॉलेज की दुनिया	88
138.	जिन्दगी की कहानी	88

अंग्रेजी अनुभाग

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	Anti-reflection Coating	91
2.	Importance of Home Science in Our Life	92
3.	A Note on Deterministic and Probabilistic Models of the Inventory System	93
4.	Passive Smoke Poses Risk to Children	95
5.	Importance of Language	96
6.	Industrial Importance of Microbiology	97
7.	Biotechnology- A Modern Tool to Resolve Hindrances in Genetic Improvement in Pulses	98
8.	Forest fire and its Impact on Deforestation and Environment in Uttarakhand	99
9.	Water Pollution in Our Surroundings	102
10.	Women Empowerment	103
11.	Happiness	104
12.	William Shakespeare	105
13.	The Role of a Teacher	105
14.	Discipline in Life	106
15.	Faith has Great Power	106
16.	Hope	106
17.	Importance of Education	107
18.	Clean India, Green India	107
19.	God India	107
20.	How Simplify Our Busy Life	108
21.	Yoga (21st June International Yoga Day)	108
22.	Just Like A Child	109
23.	Maths Tricks	109
24.	Importance of Yoga in Our Life	110
25.	Slogans	110
26.	Amazing Facts	110
27.	Life and work of Shri Bharati Krishna Teerth	111

संस्कृत अनुभाग

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मानवजीवने संस्काराणाम् उपयोगिता	115
2.	अति तृष्णा विनाशाय	116
3.	सावित्री बाई फुले	116
4.	गीता के उपदेश	117
5.	विद्यार्थी जीवनम्	117
6.	सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात	118
7.	मानव की प्रकृति	118
8.	लक्ष्मी का स्वभाव	119
9.	विद्वानों का आदर करना चाहिए	120
10.	मानव जीवन में विद्या	120

ऊर्दू अनुभाग

हिन्दी अनुभाग

सुश्री कल्पना पंवार
अंशकालिक प्रवक्ता, चित्रकला विभाग

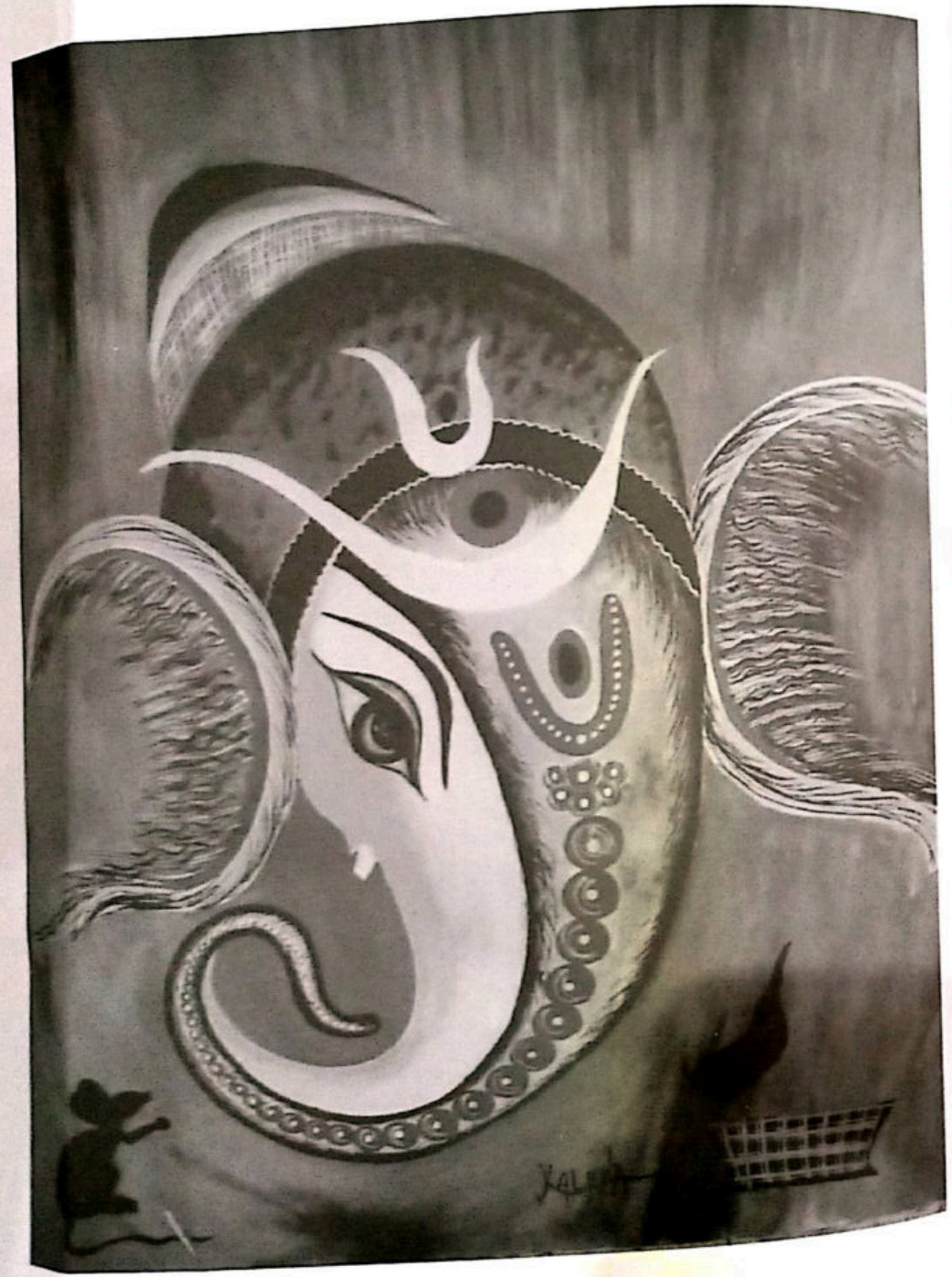

पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण

डॉ. नवीन त्यागी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग

स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। यही कारण है कि सृष्टि रचना में जल, वायु, सूर्य, पृथ्वी और वनस्पति वैभिन्य तथा जीवन विविधता की रचना के बाद मानव की सृष्टि की गयी। यद्यपि पर्यावरण एवं मानव का सम्बन्ध एवं पर्यावरण पर मानव की आश्रितता सृष्टि के प्रारम्भ से ही चली आ रही है। और पर्यावरण विकास एवं सुधार के प्रयास होते रहे हैं, फिर भी इसकी विशिष्ट आवश्यकता जनसंख्या विस्फोट एवं औद्योगीकरण के परिप्रेक्ष्य में महसूस की गयी। कारण यह है कि प्रकृति मानव की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा कर सकती है परन्तु यह मानव की प्रत्येक लोलुपता को पूरा नहीं कर सकती है। प्राकृतिक संसाधनों के बेतहाशा दोहन से पारिस्थैतिकी संकट अतिशयवादी औद्योगीकरण से वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण आदि की समस्याएँ बढ़ती गयीं।

पर्यावरणीय प्रदूषण से तात्पर्य है कि मानवीय कारकों द्वारा स्थानीय स्तर पर पर्यावरण की गुणवत्ता में ह्रास जबकि पर्यावरण अवनयन के अन्तर्गत प्राकृतिक एवं मानव जनित दोनों कारकों से स्थानीय प्रादेशिक एवं विश्व स्तर पर पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट को सम्मिलित किया जाता है। पूरे विश्व के राष्ट्रों में विकास के लिए अंधी दौड़ ने मनुष्य के स्वयं के स्वास्थ्य को खतरे में डाल दिया है। किसी भी देश के विकास का एक साधारण लक्षण उसके कृषि और उद्योग में उन्नति से लिया जाता है। इस लालची होड़ का परिणाम हुआ प्राकृतिक सम्पदा के प्रत्येक अंष का असीमित आयोजन महान् प्राकृतिक सम्पदा को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखना चाहिए।

मनुष्य की इस प्रकार की क्रियाओं का जीवन मण्डल में सभी प्रकार के जीव-जन्तुओं पर बुरा प्रभाव पड़ा। यह पृथ्वी गृह जो वायुमण्डल (वायु, भूमि, जल) के साथ मिलकर समस्त जीवों का पालन करता है, जीव मण्डल (Biosphere) कहलाता है। जीव मण्डल पृथ्वी पृष्ठ के लगभग 7 किमी अन्दर तक फैला है, नीचे की ओर महासागर में लगभग 10.67 किमी की गहराई तक और ऊर्ध्वाधर (Vertically) वायु में लगभग 10 किमी तक जहाँ जीवन होने के प्रमाण हैं। मनुष्य द्वारा प्राकृति का असीमित शोषण जीव मण्डल के जीवित और अजीवित घटक के बीच नाजुक पारिस्थितिक संतुलन विक्षुब्ध करता है। मनुष्य द्वारा उत्पन्न की गई प्रतिकूल अवस्थाओं ने न केवल मनुष्य की अपितु अन्य जीव-जन्तुओं की अति जीविता को भी खतरे में डाला है। सार्वजनिक स्थानों पर चेतावनी मिलना अति सामान्य है, जैसे 'वायु श्वसन के लिए अयोग्य (air unfit for breathing) 'पानी पीने के अयोग्य' (water unfit for drinking), 'यहाँ से पकड़ी गई मछलियाँ न खाएँ (do not eat fish caught here) और इसी प्रकार अनेकों चेतावनियाँ जगह-जगह देखने को मिलती हैं। इस तरह हमारे देश में प्रदूषण नियंत्रण नई पर्यावरणीय चिंता है। केवल भारत में ही नहीं बल्कि विकसित पश्चिमी विश्व में भी प्रदूषण एक भयावह शब्द है। प्रदूषण मुख्यत: धनी देशों की मानव निर्मित समस्या है।

पर्यावरण प्रदूषण न केवल वैश्विक समस्या है अपितु यह विभिन्न समस्याओं से जुड़ी एक समस्या है। इसके विविध आयाम एवं स्वरूप हैं, जो प्रकृति के आर्थिक, तकनीकी, राजनैतिक एवं विविध पहलुओं से सम्बन्धित है। यह एक संलिप्त एकल समस्या नहीं है अपितु स्थायी प्रक्रिया से सम्बन्धित समस्या है। सम्पूर्ण विश्व की समस्या वर्तमान में पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या से जुड़ गई है क्योंकि पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या एवं उसका प्रभाव न केवल किसी विशेष देश के लिए है अपितु यह सम्पूर्ण विश्व में एक समस्या का विषय बन चुकी है जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए निरंतर खतरा पैदा करती है। यद्यपि इस समस्या के समाधान के लिए यथा साध्य प्रयत्न भी किये जा रहे हैं किन्तु तीव्र औद्योगीकरण की प्रक्रिया नये-नये उद्योग की स्थापना एवं उत्तरोत्तर विकास ने एक ऐसी प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है, जिसका कारण प्रदूषण सम्पूर्ण विश्व के लिए चुनौती का विषय बन गया है।

पर्यावरण प्रदूषण से प्रभावित होने वाले अधिकांश लोग गरीब वर्ग के हैं। नवीकरणीय से विस्थापित तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों के बेतहाशा दोहन से प्रभावित, क्षीण, अयोग्य, प्रदूषित वायु, प्रदूषित जल एवं ईंधन हेतु

लकड़ी की न्यूनता के शिकार निर्धन वर्ग के लोग हैं। इसलिए यह प्रबल सम्भावना है कि भारत में लोकहित विधि आन्दोलन आवश्यक रूप से पर्यावरण बचाओ-प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण का रूप धारण कर लेगा। अत: हमें आवश्यकता है, ऐसी पर्यावरणीय दशाओं की जिससे हमारे भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को भी स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त वातावरण मिल सके। हमें मनुष्य के द्वारा किये गये अनियंत्रित क्रिया कलापों पर रोक लगानी पड़ेगी एवं उसकी समस्या के हल के लिए अच्छी प्रकार की प्रौद्योगिकी का विकास करना होगा जिससे पर्यावरण के प्रदूषण में हम कमी ला सकें। सम्पूर्ण मानवीय सहयोग से ही हम पर्यावरण की दशाओं में सुधार कर सकते हैं पर्यावरण प्रदूषण व उनसे जुड़े सैद्धान्तिक पक्षों के साथ प्रदूषण निवारण के समुचित उपायों पर भी चर्चा की जायेगी।

मानव स्वयं पर्यावरण का एक अंग है, जब पर्यावरण में अहितकारी परिवर्तन होगा तो उसका दुष्परिणाम मानव सहित सम्पूर्ण पारिस्थितिकीय तंत्र पर पड़ेगा। चूँकि मानव सभी जातियों में प्रज्ञावान है, अत: उस पर दायित्व है कि वह अपनी वृद्धि व योजना के द्वारा स्वच्छ पर्यावरण के सम्वर्द्धन में अपना योगदान दे तथा उपायों का प्रयोग करके स्वस्थ पर्यावरण के विकास में अपना योगदान दे। वर्तमान पीढ़ी पर यह दायित्व है कि वह भावी पीढ़ी के लिए बेहतर भविष्य की परिकल्पना करके उसके क्रियान्वयन में अपना योगदान देते हुए सतत पोषणीय विकास की अक्षुण्णता को बनाये रखें। सभी मनुष्यों को पर्यावरण अवनयन की ओर ध्यान देना होगा जिससे पर्यावरण को क्षति न पहुँचे। पर्यावरण संरक्षण हेतु सरकारी संस्थाओं को चाहिए कि वे किसी योजना को क्रियान्वित करें। कोई भी नीति बनाते समय उस क्षेत्र के निवासियों और नेताओं से विचार-विमर्श करके उस क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि हमें मानवीय सभ्यता के विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण हेतु भी सार्थक प्रयास करना होगा, जिससे सम्पूर्ण जीव जगत का कल्याण हो।

वर्तमान में जैविक खेती की आवश्यकता

डॉ.विमल कान्त तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग

जैविक खादों के प्रयोग से मृदा का जैविक स्तर बढ़ता है जिससे लाभकारी जीवाणुओं की संख्या बढ़ जाती हैं और मृदा काफी उपजाऊ बनी रहती है। जैविक खाद पौधों की वृद्धि के लिये आवश्यक खनिज पदार्थ प्रदान करते हैं जो मृदा में मौजूद सूक्ष्म जीवों के द्वारा पौधों को मिलते हैं जिससे पौधे स्वस्थ बनते हैं और उत्पादन बढ़ता है। रासायनिक खादों के मुकाबले जैविक खाद सस्ती और टिकाऊ होती है। इनके प्रयोग से मृदा की आर्द्रता में बढ़ोतरी होती है। पौधों की वृद्धि के लिये आवश्यक पोषक तत्वों जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटास तथा काफी मात्रा में गौण पोषक तत्वों की पूर्ति जैविक खादों के प्रयोग से हो जाती है। जैविक खाद सड़ने पर कार्बनिक अम्ल में परिवर्तित हो जाती है जिससे मृदा का पी. एच. मान नियंत्रित हो जाता है तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है। जैविक खादों के प्रयोग से एक फसल के बाद दूसरी फसल को लाभ मिलता है इससे मृदा का संतुलन एंव उर्वरता ठीक बनी रहती है।

वर्तमान में भारत के संदर्भ में जैविक कृषि का अर्थ एवं इसकी आवश्यकता विभिन्न राज्यों के अनुसार अलग-अलग है। उत्तराखण्ड, मिजोरम व अन्य पर्वतीय राज्यों में जैविक खेती विकट भौगोलिक परिस्थितियों में औषधीय, जड़ी-बूटी, सब्जी एवं फल जैसी उच्च श्रेणी की नगदी फसलों के उत्पादन के एक उपक्रम के रूप में देखी जा रही है। महाराष्ट्र जैसे राज्यों, जहाँ कृषक के मन में कृषि उत्पादन की अधिक लागत के कारण अवसाद की भावना बढ़ती जा रही है तथा जिसकी वजह से वहाँ आत्महत्या के बहुत से मामले प्रकाश मे आ रहे हैं, जैविक कृषि को वर्तमान स्थिति में सुधार की एक सम्भावना मानते हुए कम लागत की कृषि के रूप में देखा जा रहा है। पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों के सम्पन्न कृषक जैविक खेती को अपनी भूमि व मृदा की सुरक्षा एवं निर्यात के लिए प्रमाणित जैविक उत्पाद के उत्पादन के रूप में देख रहे हैं। कुछ राज्य सरकारें जैविक खेती को अपने यहाँ कृषि व्यवस्था में सकारात्मक और सार्थक बदलाव की कड़ी के एक विकल्प के रूप में देख रही हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय कृषि में रसायनिक खाद का भरपूर प्रयोग होने के कारण सिंचाई हेतु जल का विकट संकट देखने को मिल रहा है, जिससे कृषको के समक्ष भयावह संकट उत्पन्न होने लगा है। भारत में ऐसी कृषि व्यवस्था की आवश्यकता है जिसमें जल की खपत न्यूनतम हो और जैविक कृषि की तकनीकें इस आवश्यकता को पूर्ण करने में पूरी तरह समर्थ है।

उच्च स्तर पर कृषि व्यवस्था को लेकर हो रहे चिंतन ने देश में 9 राज्यों को जैविक कृषि से जुड़े कार्यक्रम या परियोजनाओं को चलाने के लिए प्रेरित किया। उत्तराखण्ड जैसे राज्यों में जैविक कृषि को यहाँ के पर्वतीय क्षेत्रों में काश्तकारों के जीवन स्तर को सुधारने के एक उपक्रम के रूप में देखा गया। मिजोरम व सिक्किम जैसे पर्वतीय राज्यों ने बिना किसी विशेष परियोजना या कार्यक्रम के ही जैविक खेती को दोहरा प्रोत्साहन मिला जहां एक ओर सरकार द्वारा इस संबंध में विभिन्न कार्यक्रम शुरू किये गये वहीं दूसरी ओर कृषकों द्वारा भी जैविक कृषक संघ की स्थापना की गयी, जिसे राज्य सरकार ने विषेष सहायता प्रदान की। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल में अनेकों निजी प्रतिष्ठानों व काश्तकारों के मध्य जैविक खेती के विकास हेतु भागीदारी के बहुत से उदाहरण भी मिलते हैं। दक्षिण भारत में जैविक खेती के विकास में स्वयं सेवी संस्थाओं व कृषक संघों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अधिक उत्पादन के लिए फसलों में जो रासायनिक उर्वरक, और कीटनाशक दवाइयां डालते है, इसका प्रतिकूल प्रभाव जल, वायु, मृदा पर पड़ता है और हमारा स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। जैविक कृषि एक श्रम प्रधान तकनीकी है। इससे बेरोजगारी तथा अदृश्य बेरोजगारी की समस्या कुछ हद तक हल होगी तथा जैविक कृषि में स्थानीय पोषक तत्वों का प्रयोग किया जाता है जिससे विदेशों से आयात की जाने वाली कीटनाशक दवाइयों, रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम होने से कृषि लागत कम आएगी तथा किसानों को अधिक लाभ प्राप्त होगा तथा भारत के भुगतान संतुलन पर भी अनुकूल प्रभाव होगा। जैविक खेती कम लागत और अधिक उत्पादकता वाली विधि है।

स्वच्छता एवं पर्यावरण

रीना गुप्ता
प्रयोगशाला सहायक, गृह विज्ञान विभाग

एक स्वच्छ वातावरण सभी जीव-जन्तुओं के लिए बहुत ही आवष्यक है लेकिन आज विश्व में बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरण अस्त व्यस्त होता जा रहा है और यह सब मानव की लापरवाही का परिणाम है कि आज हम दूषित पर्यावरण के शिकार हो रहे है। हमारा पर्यावरण दिन प्रतिदिन गन्दा होता जा रहा है यह एक ऐसा मुद्दा है जिसके विषय में प्रत्येक व्यक्ति को पता होना चाहिए। खासकर के बच्चों को यह हर किसी को हमारे पर्यावरण को कैसे बचाया जाए तथा इसे कैसे सुरक्षित रखा जाये के विषय में जानकारी होनी चाहिए।

अगर आज हम यह जानकारी रख पाए तो वे दिन दूर नहीं जब हम अपनी आने वाली पीढ़ी को एक दूषित पर्यावरण में रहने के लिए मजबूर कर देंगे और समय से पहले ही हमारी आने वाली पीढ़ी का विकास रुक जायेगा। एक तरफ जहाँ मानव केवल अपनी सुख सुविधाओं के कारण विलसिता की वस्तुओं का प्रयोग कर रहा है और पर्यावरण को दूषित करके अपने जीवन की बलि देने के लिए तैयार है। जिसका परिणाम सबके समक्ष देखने को मिल रहा है। आज हमारा पर्यावरण इतना गन्दा हो चुका है कि ऋतुओं पर भी अपना प्रभाव दिखाना शुरु कर दिया है। जिसके कारण वर्षा के समय वर्षा, गर्मी के समय गर्मी तथा सर्दी के समय सर्दी नहीं हो पाती है और इस सब दोषी मनुष्य स्वयं होकर दोष ईश्वर को देता है। आज पर्यावरण बिगड़ जाने के कारण चारों दिषाओं में आपदा जैसे बाढ़, भूकम्प आदि का सामना मनुष्य को करना पड रहा है। परन्तु मनुष्य ने फिर भी अपनी आँखों पर काली पट्टी बांध कर रखी हुई है तथा अपने मस्तिष्क को सुन्न कर रखा है जो गन्दगी फैलाने में कसर नही छोड रहा है। लेकिन आज हमारे लिये यह सौभाग्य की बात है कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गाँधी जी के स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के लिए 2 अक्टूबर गाँधी जयन्ती के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान का प्रारम्भ किया तथा लोगों में स्वच्छता एवं पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए जागरूक अभियान चलाया जा रहा है। माननीय प्रधानमंत्री जी के मेहनत के कारण ही आज सभी राज्य सरकारों ने स्वच्छता तथा वृक्षारोपण पर बल दिया है। जिसके परिणाम स्वरूप लोगों में स्वच्छता तथा वृक्ष लगाने के प्रति जागरुकता बढी है। अब तो सरकार ने पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए सभी सरकारी तथा प्राइवेट कम्पनीयों को भी स्वच्छता एवं पेड लगाने के लिये समय-समय पर स्वच्छता अभियान चलाने के गाइड लाईन जारी की गई है। जिससे हमारा पर्यावरण सुरक्षित हो सके। हम सबको अपना कर्तव्य मानते हुए पर्यावरण को सुन्दर तथा स्वच्छ रखने के लिए तन मन धन से पेड-पौधे लगाने में अपना योगदान देना चाहिए। जिससे की हम सब एक स्वच्छ वातावरण का निर्माण कर सकें। अपनी इन सब बातों को मैं एक गीत के माध्यम से समझा रही हूँ।

आओ पेड लगाएं भाई, हम सब पेड बचाएंगे।
धरती माँ के फटे बसन को, हरा भरा कर पाएंगे।।
आओ पेड लगाएं भाई, हम सब पेड बचाएंगे।
धरती माँ के फटे बसन को, हरा भरा कर पाएंगे।।
गाँव-गाँव को चलो जगाएं, आज यही व्रत हम सब लें।
हरा-भरा छोटा-सा कानन, हर गाँव को हम सब दें।।
गौरव रक्षित हर गाँवों का, लोगों को समझाएंगे।
धरती माँ के फटे वसन को, हरा-भरा कर पाएंगे।।
आओ पेड लगाएं भाई, हम सब पेड बचाएंगे।
धरती माँ के फटे वसन को, हरा भरा कर पाएंगे।।
रक्षित वन ऐसा हो, जिसमें वन्य जीव रह पाएं।
गाये गीत सदा वन रक्षा के, रक्षित वन हम सब दे पाएं।।
आज विश्व की चिन्ता को, क्या दूर कभी कर पाएंगे।
धरती माँ के फटे वसन को, हरा भरा कर पायेगें।।
आओ पेड लगाएं भाई, हम सब पेड बचाएंगे।
धरती माँ के फटे वसन को, हरा भरा कर पाएगें।।
है कर्तव्य हमारा भैया, निर्वाहन हम कर पाएंगे।
गाँव नगर की गली सड़क को, हरा-भरा कर पाएंगे।।
धरती माँ के फटे बसन को, हरा भरा कर पाएंगे।।
आओ पेड लगाएं भाई, हम सब पेड बचाएंगे।
धरती माँ के फटे बसन को, हरा भरा कर पाएंगे।।

कार्यक्षमता को तीव्र करने वाली 21 न्यूरोबिक मस्तिष्क व्यायाम

डॉ. नीतू गुप्ता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग

जिस प्रकार शारीरिक व्यायाम हमें स्वस्थ व मजबूत रखता है उसी प्रकार मस्तिष्क व्यायाम जिसे न्यूरोबिक कहा जाता है, हमारे मस्तिष्क (ब्रेन) की कोशिकाओं को पुर्नजीवित करता है न्यूरोबिक्स सभी 5 ज्ञानेन्द्रियों - दृष्टि, घ्राण, स्पर्श, स्वाद और श्रवण का प्रयोग करके ब्रेन की क्षमता को बढ़ाता है न्यूरोबिक व्यायाम सिर्फ खेल नहीं है लेकिन जब यह हमारे दिमाग को चतुर करता है इसे करने से आप नये नामों को ज्यादा अच्छी तरह याद रख पायेंगे और नये-नये प्रव्ययों को पकड़ पायेंगे और अपने कार्यभार को आसानी से पूरा कर पायेंगे।

1- दाँतों को ब्रश करने के लिये अपने विपरीत हाथ का प्रयोग करें या उस हाथ से फ्रिज खोलकर ब्रेकफास्ट करें।
2- जब भी किसी नये व्यक्ति से मिलें तो मिलते समय अपनी सभी ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग करें। शारीरिक वेशभूषा पर भी ध्यान दें। जैसे थॉमस के छोटे भूरे बाल, नीला चश्मा पहना हुआ, मुँह से सिगरेट की दुर्गध, हाथ मिलाने का तरीका और उसकी धीमी आवाज आदि।
3- चीजों की डेस्क पर आड़ी तिरछी रूप में रखें जिससे आपका दिमाग उन्हें विभिन्न रूपों में देखेगा।
4- टाइप के बजाय लिखने की कोशिश करें। रिसर्च बताती है कि लिखने से चीजों को ज्यादा अच्छा याद रखा जा सकता है हम चीजों को ज्यादा अच्छा याद रख पाते हैं यदि हम उन्हें लिखेंगे।
5- हमेशा गाड़ी चलाते, पैदल चलते व बाइक चलाते समय नये रास्तों का प्रयोग करें।
6- नयी भाषा सीखें या कोई वाद्य यन्त्र बजाना सीखें।
7- गणित ज्यादा से ज्यादा करें।
8- किसी नये भोजन को बनाने व खाने का प्रयत्न करें।
9- अगर आपको रॉक म्यूजिक या क्लासिकल म्यूजिक पसंद है तो कोई अन्य म्यूजिक सुनें।
10- विदेशी म्यूजिक सुनें।
11- बिना चाबी की तरफ देखे घर का या कार का लॉक खोलें।
21- आँखें बंद करके पानी की बौछार डालें।
13- किसी नई जगह पर लंच करें जैसे किसी दूसरी मेज, कमरे, रेस्टोरेंट या किसी भी दूसरी जगह पर।
14- किसी नये स्टोर से शॉपिंग करें।
15- रोज के समय से हटकर किसी अन्य टाइम पर शॉपिंग करें।
16- जिस किताब को आपने कभी न पढ़ा हो उसे पढ़ने की कोशिश करें।
17- यदि आप अच्छे धावक हैं तो योगा करें या आप अच्छे तैराक हैं तो टेनिस खेलने का प्रयास करें।
18- भोजन शांति में करें और हर टुकड़े के स्वाद को महसूस करें।
19- जब किसी परफ्यूम की खुशबू सूँघ रहे हों तो व्यायाम करें।
20- कपड़े, भोजन आदि के नये-नये ब्रांड का प्रयोग करें।
21- तेज आवाज में धीमी गति से कोई किताब पढ़ें।

वर्तमान समाज में शिक्षा की आवश्यकता

डॉ. नीशू कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

भारतीय समाज में एक समय था, जब रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता थी, लेकिन वर्तमान में वैश्वीकरण के पश्चात् लोगों की आय व संसाधनों की उपलब्धता में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। वही शहरों व ग्रामीण स्तर पर सामान्य जीवन की लगभग सभी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की जा रही है। जैसे, सड़क, पानी, बिजली आदि किन्तु 21वीं शताब्दी के सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग में एक महत्वपूर्ण पहलू सामने आया है वह है ''शिक्षा अर्थात् प्रभावी शिक्षा।'' भारत में वैदिक संस्कृति से ही शिक्षा महत्वपूर्ण रही एवं भारत ज्ञान-विज्ञान का देश रहा है लेकिन कुरीतियों, परम्परागत सामाजिक रूढ़िवादी सिद्धान्तों ने समाज के बहुत बड़े भाग को शिक्षा प्राप्ति व सहभागिता से दूर रखा। लेकिन आज जब हम वैश्वीकरण के माध्यम से अनेक संस्कृति व सभ्यता से परिचित हो रहे है यह आवश्यक हो जाता है कि भारत का जन मस्तिष्क तार्किक व विविध ज्ञान से परिपूर्ण हो। साथ ही राष्ट्र के स्वस्थ विकास में भारतीय मानव की जीवन शैली स्वस्थ व स्वच्छ होनी चाहिए।

शिक्षा के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी ने कहा था कि ''व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं उसके चरित्र से होती है'' एवं चीनी सन्त कन्फ्यूशियस द्वारा कहा गया कि- ''अज्ञानता एक ऐसी रात्रि के समान है, जिसमें न चाँद है, न तारे।''

दोनों अलग-अलग समय काल में दिये गये, किन्तु दोनों भावार्थ एक ही है कि शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान रूपी प्रकाश को प्राप्त कर अज्ञान रूपी अंधेरी रात्रि के अन्धकार को दूर करना है ताकि छात्र का सर्वांगीण विकास हो सके। छात्र किसी राष्ट्र का भविष्य होते हैं। भारत में भ्रष्टाचार, गरीबी, रूढ़िवादी-परम्परागत रीति-रिवाज, कर्म-कांडों में विश्वास, बेरोजगारी, बेगारी स्वच्छता, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा व कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न शोषण आदि ने भारतीय समाज को हाशिये पर धकेल दिया है। जिसने विश्व पटल पर की शिक्षा, सामाजिक, महिलाओं की आर्थिक स्थितियों को लाल-रंग में प्रदर्शित किया है। वही जेंडर गेप इंडेक्स में 108 वी रैंक, जैंड इक्वेलिटी इंडेक्स में 87 रैंक व मानवीय विकास इंडेक्स में 131वीं ने भारत को पिछड़ते मानकों में रखा है।

वर्तमान में सूचना-प्रौद्योगिकी युग में जहाँ मानवीय जीवन सुगम, सरल बन रहा है। वही भारतीय समाज पारिवारिक नैतिक मूल्यों के ह्रास के दौर भी गुजर रहा है, विवाह संस्था पर अविश्वास स्थिति पैदा, एकल परिवार की प्रकृति में वृद्धि, वृद्ध माता-पिता का संरक्षण अतिरिक्त होने से भारतीय समाज में अनैतिकता का वास हो रहा है। वर्तमान समाज में स्वच्छता, जाति-भेदभाव, सम्प्रदाय, असहिष्णुता आदि ने आर्थिक परिक्वता की ओर बढ़ रहे भारत में कलंक के रूप में है।

उपरोक्त भारतीय परिदृश्य में मुद्दों पर विजय प्राप्ति के लिए शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है। जिसमें सर्वप्रथम शिक्षा का प्राथमिक द्वितीयक सार पर बाल्यवस्था में छात्र में सामाजिक नैतिकता के मूल्यों का विकास हो सके। 21वीं शताब्दी में सूचना क्रान्ति के बाद सूचनाओं की पहुँच प्रत्येक व्यक्ति तक आसान हो गई है, अर्थात् शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति सुगमता से दूर-क्षेत्र में की जा सकती है। वर्तमान भारत में इंटरनेट कम्प्यूटर लगभग प्रत्येक तहसील व ब्लॉक स्तर तक पहुँच रहा है और सरकार ऑप्टिकल फाइबर नेट परियोजना द्वारा प्रत्येक पंचायत स्तर पर सूचनाओं को पहुँचाया जा रहा है। अत: इस सूचना क्रान्ति के माध्यम से हम सुदूर पिछड़े क्षेत्रों में प्रभावी शिक्षा की पहुँच से लोगों आधुनिक जीवन शैली का विकास, नैतिकता का विकास व वर्तमान समय में अलग-अलग जगहों सामने आ रही नाबालिग बच्चियों से दुष्कर्म व हत्या में दोषी व्यक्तियों की पहचान करने व सजा दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

प्रभावी शिक्षा की पहुँच से आधुनिक जीवन शैली के शिकार युवा छात्रों को अपने भविष्य में लक्षित दिशा दी जा सकती है क्योंकि आधुनिक जीवन में छात्रों का सामाजिक सहभागिता व उत्तरदायित्वों के प्रति उदासीनता ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया है। जिससे समाज, परिवार में एकल परिवार प्रकृति, बुद्ध-माता पिता के संरक्षण पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया।

अंतत: शिक्षा, मानवीय जीवन का वह पहलू रहा है। जिसने प्राचीन, माध्यमिक व आधुनिक तीनों स्तर पर अपनी प्रासंगिकता को समाज को मानवीय मूल्य व प्राकृतिक अधिकारों की सुनिश्चिता को हर स्तर नया आयाम दिया है। दिशा मनुष्य को तार्किक व अपने संरक्षण के लिए नये अविष्कार एवं खोजों के लिए प्रेरित करती रही है।

सुविचार

- अपने लक्ष्य में सफल होने के लिये, आपको लक्ष्य के प्रति एकमात्र दृढ़ भक्ति होनी चाहिए।

  अब्दुल कलाम
- सफल व्यक्ति बनने का प्रयास मत करिये, बल्कि सिद्धांतों वाला व्यक्ति बनने का प्रयत्न करिए।

  अल्बर्ट आंइस्टीन
- कमजोर कभी माफी नहीं मांगते, क्षमा करना तो ताकतवर व्यक्ति की विशेषता है।

  महात्मा गाँधी
- ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ पहले से ही हमारी है, वो हम ही है जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते है ओर फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है।

  स्वामी विवेकानंद
- कोई भी व्यक्ति ऊँचे स्थान पर बैठकर ऊँचा नहीं हो जाता बल्कि अपने गुणों से ऊँचा होता है।

  चाणक्य
- विज्ञान केवल तर्क का अनुयायी नहीं है, बल्कि रोमांस और जुनून का भी।

  स्टीफन हॉकिंग
- जीवन एक पाठशाला है जिसमें अनुभवों के आधार पर हम शिक्षा प्राप्त करते है।

  बिल गेट्स
- मैं एक धीमी गति से चलता हूँ, लेकिन कभी वापिस नहीं आता।

  अब्राहम लिंकन
- शिक्षा सबसे सशक्त हथियार है, जिससे दुनिया को बदला जा सकता है।

  नेल्सन मंडेला
- उच्चतम शिक्षा वो है जो हमें सिर्फ जानकारी ही नहीं देती बल्कि हमारे जीवन में समस्त अस्तित्व का सद्भाव लाती है।

  रविन्द्र नाथ टैगोर

समूह बीमा-एक आवश्यकता

डॉ. किरन शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

फेडरेशन ऑफ इन्श्योरेन्स इंस्टीट्यूट्स ऑफ इण्डिया के अनुसार ''सामूहिक बीमा, बीमा की एक योजना है जो एक ही योजना के अन्तर्गत अनेक लोगों को सुरक्षा प्रदान करती है''।

बीमा कोई नयी अवधारणा नहीं है। माना जाता है कि भारत में लगभग 3000 साल पहले भी आर्य व्यापारिक बीमा किया करते थे। वेदों में भी ''योग क्षेम'' शब्द का उल्लेख मिलता है जो बीमा का ही द्योतक है। ''बीमा '' फारसी का शब्द है जिसका अर्थ है जिम्मेदारी लेना।

मनुष्य का जीवन अनिश्चितताओं से भरा हुआ होता है। किन्तु अनिश्चितता के भय से मानव हाथ पर हाथ रखकर बैठा नहीं रह सकता। बीमा हानि की क्षतिपूर्ति का वचन देकर अनिश्चितता को निश्चितता में बदल कर मनुष्य की चिन्ताओं को दूर करने का प्रयास करता है। व्यक्ति चिन्तामुक्त होकर कार्य करता है जिससे उसकी उत्पादकता बढ़ती है।

वास्तव में बीमा सहकारिता एवं सम्भाविता के दो सिद्धान्तों पर आधारित है। जीवन में आने वाली विपत्तियों की सम्भाविता को देखते हुए व्यक्तियों के सूमह से थोड़ी थोड़ी धनराशि एकत्र कर के एक विशाल पूँजी का निर्माण कर लिया जाता है, जो विपत्ति ग्रसत मनुष्य की आर्थिक सहायता के लिए उपयोग की जाती है। बीमा की अवधारणा सर्वप्रथम समुद्री व्यापार में दृष्टिगोचर होती है। जब लोग एकत्रित होकर समुद्र के रास्ते व्यापार के लिए जाते थे किन्तु समुद्री विपत्ति में फँसकर किसी व्यापारी के वापस न लौटने की दशा में बाकी व्यापारी उसके परिवार को कुछ धनराशि प्रदान करके मदद करते थे। अथवा समुद्र में तुफान आने पर जहाज को बचाने के लिए कुछ सामान समुद्र में फेंक दिया जाता था और इस हानि को आपस में बाँट लिया जाता था।

समुद्र बीमा के पश्चात अग्नि बीमा का उल्लेख मिलता है। सन् 1666 में लंदन के भीषण अग्निकांड में लगभग 13200 घर जल गये थे। कहा जाता है कि यह अग्नि लगातार 4 दिन और 4 रातों तक धधकती रही थी। जिस के कारण लोगों ने अग्नि से सुरक्षा हेतु घरों का अग्नि बीमा कराना आरम्भ किया।

जीवन बीमा का आधुनिक रूप जनू 1583 से माना जाता है। कहा जाता है कि विलियम गिबन्स जो कि लंदन के निवासी थे सबसे पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिनके जीवन का एक वर्ष का बीमा किया गया। जीवन बीमा में बीमाकर्ता बीमित व्यक्ति की मृत्यु अथवा एक निश्चित समय के बाद (जो दोनों में पहले हो) निश्चित रकम देने का आश्वासन देता है, बदले में बीमित व्यक्ति एक निश्चित समयावधि अथवा मृत्यु तक एक निश्चित प्रीमियम का भुगतान करता है।

सामान्य जीवन बीमा के अन्तर्गत एक अकेले व्यक्ति के जीवन का बीमा किया जाता है जबकि समूह बीमा कई व्यक्तियों के जीवनों के सामूहिक बीमा की अवधारण पर आधारित है। इसका प्रारम्भ भारत में सन् 1958 में हुआ। यह बीमा समूह विशेष को बीमा सुरक्षा उपलब्ध कराता है। एक साधन व्यक्ति अपने निजी साधनों का प्रयोग करके अपने जीवन को बीमित करा सकता है किन्तु जो व्यक्ति साधनहीन है अथवा किसी अन्य कारण से बीमा सुरक्षा लोने में सक्षम नहीं होते है उनके लिए समूह बीमा वरदान के समान है जिसमें समाज के मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के व्यक्तियों के छोटे सूमहों का बीमा करने के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जाती हैं। समूह बीमा योजना में सभी सदस्यों का जीवन एक ही पॉलिसी के अन्तर्गत किया जाता है। जो मास्टर पॉलिसी कहलाती है। बीमा हेतु सदस्य संख्या तथा प्रीमियम राशि योजना के अनुसार अलग-अलग होते है। किन्तु समूह बीमा की प्रीमियम लागत व्यक्तिगत आधार पर अलग-अलग नहीं होती है। इस तरह से समूह बीमा योजना एक व्यक्ति के जोखिम को सभी व्यक्तियों पर फैला देती है और न्यूनतम आर्थिक बोझ डालकर प्रत्येक सदस्य को पूर्ण बीमा हित प्रदान करती है। समूह बीमा जहाँ एक ओर कम खर्चीला होता है। वहीं इसका लाभ यह है कि समूह मे 50 से अधिक व्यक्ति होने पर डाक्टरी जांच की आवश्यकता नहीं पड़ती है। समूह बीमा में पॉलिसी नियोक्ता को दी जाती है जिससे बीमा शर्तें एवं सुविधाओं के बारे में लिखा होता है जबकि समूह के सदस्यों को अलग-अलग प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

समूह बीमा करने के लिए समूहों को दो आधार पर परिभाषित किया जाता है पहला परम्परागत समूह जिसमें नियोक्ता-कर्मचारी समूह होते हैं ये सभी कर्मचारी एक ही नियोक्ता के कर्मचारी होते है एवं नियोक्ता द्वारा ली गयी समूह बीमा को अनिवार्य रूप स्वीकार करना होता है दूसरा गैर परम्परागत समूह जो किसी नियोक्ता के कर्मचारी नहीं होते हैं एंव अपना समूह बना कर बीमा कराते हैं अथवा नियोक्ता द्वारा समूह बीमा न कराये जाने के कारण खुद का समूह बनाकर बीमा कराते है।

समूह बीमा के अन्तर्गत कई योजनाएं चलायी जा रही हैं जैसे- समूह उपदान या अनुग्रह राशि योजना, समूह अधिवर्षिता योजना, बचत सहबद्ध समूह बीमा योजना, सामाजिक सुरक्षा समूह बीमा, ग्रामीण समूह बीमा योजनाए आदि। भिन्न-भिन्न समूहों की आवश्यकता के अनुसार भिन्न-भिन्न योजनाएं चलन में है किन्तु उद्देश्य सभी योजनाओं का समान है कि कम से कम प्रीमियम में अधिक से अधिक व्यक्तिओं को जोखिम से सुरक्षा प्रदान करना एवं मृत्यु अथवा अपंगता की दशा में व्यक्ति के परिवार को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना। जहाँ एक ओर समूह बीमा कर्मचारी कल्याण का एक साधन है वहीं दूसरी ओर नियोक्ता एवं कर्मचारी के बीच मजबूत सम्बन्ध का एक आधार भी है जिससे औद्योगिक सम्बन्धों में सुधार आता है और अंततः उत्पादकता में वृद्धि होती है।

सन्दर्भ:-1.नवीन अग्रवाल-भारतीय बीमा निगम का विनियोग प्रबन्धक
2. आर.के. विरनोई-बीमा के सिद्वान्त
3. LIC & Group Schemes
4. बालचन्द्र श्रीवास्तव- बीमे के तत्व
5. ओ.पी. वाजपेई-भारत के जीवन बीमा निगम के वित्त

विचार

उस्मान आलम
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

गरीब वह नहीं जिसके पास कम है, बल्कि वह जो अधिक चाहता है।

अँधेरी रात कितनी भी अँधेरी क्यों न हो, सूर्य आने के बाद समाप्त हो ही जाती है।

शिक्षक एवं शिक्षार्थी एक दूसरे के पूरक एवं पहचान हैं।

पुरूषार्थ वह है जो मानव को सप्रयास, प्रयत्नशील व महान बनाता है।

श्रेष्ठ ग्रन्थों को पढ़कर नहीं, जीवन में ग्रहण ही व्यक्ति महान बनता है।

भाषा बुद्धि का उपकरण मात्र है, जिसका सावधानी पूर्वक प्रयोग हो।

समय मूल्यवान है, आज का काम कल पर मत छोड़ो।

अगर सूरज की तरह चमकना है, तो सूरज की तरह जलना सीखो।

भारतीय संस्कृति की विशेषताएं

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग

संस्कृति का उद्देश्य मानव जीवन को सुंदर बनाना है। मानव की जीवन पद्धति उसका विकास, समाज ,उस समाज का धर्म, इतिहास एवं परंपरा आदि सभी बातों का आधार संस्कृति ही है। इस संस्कृति का मूल वेदों में मिलता है भाषा की उच्चता से समृद्ध ,विचारों से परिपक्व, मानवीय मूल्यों का संरक्षक, समाज रचना एवं जीवन पद्धति का समुचित मार्गदर्शन करने वाला यह वैदिक वाङ्मय गुरु शिष्य परंपरा की असाधारण प्रणाली से उसके मूल स्वरुप में आज तक धरती की प्राचीनतम पुस्तक है और वे वेद जिस संस्कृति के मूल है वह संस्कृति भी इस पृथ्वी पर सर्वप्रथम ही उदित हुई। भारतीय ऋषियों ने लोकमंगल की कामना से द्रवित होकर मानवीय गुणों को दैवीय उच्चता से विभूषित करने के लिए संस्कारों की अत्यंत वैज्ञानिक एवं सार्वकालिक सार्वभौमिक व्यवस्था दी है। किसी भी भू-भाग के मानवीय गुणों के उत्थान हेतु यह संस्कार समीचीन है। इसमें किसी भी प्रकार का बंधन जातीय, वर्णीय, आर्थिक, सामाजिक देशकालीय लागू नहीं होता। उत्तम से उत्तम कोटि का हीरा खान से निकलता है। उस समय वह मिट्टी आदि अनेक दोषों से युक्त रहता है।पहले इसे सारे दोषों से मुक्त किया जाता है। फिर तराशा जाता है, तराशने के बाद कटिंग की जाती है। तब वह हार में पहनने लायक होता है। जैसे-जैसे उसका गुणाधान-संस्कार बढ़ता चला जाता है, वैसे ही मूल्य भी बढ़ता चला जाता है। संस्कारों द्वारा ही उसकी कीमत बढ़ी। संस्कार के बिना कीमत कुछ भी नही। इसी प्रकार संस्कारों से विभूषित होने पर ही व्यक्ति का मूल्य और सम्मान बढ़ता है। इसीलिए हमारे यहां संस्कार का महात्म्य है। संस्कार और संस्कृति में जरा-सा भी भेद नहीं है। संस्कार और संस्कृति दोनों शब्दों का अर्थ है-धर्म। धर्म का पालन करने से ही मनुष्य, मनुष्य है। अन्यथा खाना, पीना, सोना, डरना, मरना, संतान पैदा करना ये सभी काम पशु भी करते हैं। पशु और मनुष्य में भेद यह है कि मनुष्य उक्त सभी कार्य संस्कार के रुप में करता है। संस्कार, संस्कृति और धर्म के द्वारा मानव में मानवता आती है।

हमारे यहां प्रत्येक कर्म का संस्कृति के साथ संबंध है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत हम जितने भी कार्य करें,वे सभी वैसे हो जिससे हमारे जीवन का केवल विकास ही नही हो बल्कि वे अलंकृत, सुशोभित और विभूषित भी करें। ऐसे कर्म कौन से हैं,उनका ज्ञान मनुष्य को अपनी बुद्धि से नही हो सकता। सामान्यता बुद्धिमान व्यक्ति सोचता है कि वह वही कार्य करेगा जिससे उसे लाभ हो। लेकिन मनुष्य अपनी बुद्धि से अपने लाभ और हानि का ज्ञान कर ही नहीं सकता। अन्यथा को मनुष्य निर्धन और द

जिन्दगी के स्टेटस

मैं कुछ खास तो नहीं हूँ दुनिया में, लेकिन मेरे जैसे लोग कम हैं।

खुश हूँ मैं.....क्योंकि मुझे सपनों से ज़्यादा अपनों की फिक्र है।

हो सके तो दिलों में रहना सीखो, गुरूर में तो हर कोई रहता है।

गलतियाँ कर सकती हूँ, पर किसी का गलत नहीं कर सकती।

सोच ब्रांडेड होनी चाहिए, कपड़े नहीं,

ज़िन्दगी को रिवाइंड में नहीं, प्ले मोड में जीना चाहिए।

लाइफ का फण्डा कहता है, बातें उन्हीं से करो जिनसे करना पसंद हो

बट आई वाँट टू टेल यू

बातें उन्हीं से करो जिन्हें आपकी बातें सुनना पसंद हो।

जिन्दगी ने दिए है बहुत धोखे, बट कोई बात नहीं इट्स ओके

लाइफ तो एक फोटोग्राफी है, उसे अच्छे से एडिट करो, फिर देखो ये दुनिया उसे कितना लाइक करती है।

मुझे दोस्ती करनी है वक्त के साथ, सुना है ये अच्छे-अच्छे को बदल देता है।

कुछ लोगों ने मुझसे कहा- बहुत बदल गई है यार तू... मैंने मुस्कुराकर कहा- लोगों के हिसाब से जीना छोड़ दिया है मैंने।

जो लोग पीठ पीछे मेरी बुराई करते हैं न, उन्हें मैं बहुत पसंद करती हूँ, क्योंकि ये वो लोग हैं जो निःशुल्क मेरा प्रचार करते हैं।

गुस्से के तेज़ लोग अक्सर दिल के साफ हुआ करते हैं।

हमेशा ज़िन्दगी में ऐसे लोगों को पसंद करो, जिनका दिल चेहरे से ज़्यादा खूबसूरत हो।

ग्लोबलाइजेशन (वैश्वीकरण)

अमित बहादुर
प्रयोगशाला सहायक, चित्रकला विभाग

वैष्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के लिए व्यवसाय को बढ़ाने, तकनीकी वृद्धि, अर्थव्यवस्था में सुधार करने आदि का तरीका है। इस तरह से, निर्माणकर्ता या उत्पादक अपने उत्पादों या वस्तुओं को पूरे विश्व में बिना किसी बाधा के बेच सकता है। यह व्यवसायी या व्यापारी को बड़े स्तर पर लाभ प्रदान करता है, क्योंकि उन्हें ग्लोबलाइजेशन (वैश्वीकरण) के माध्यम से गरीब देशों में आसानी.से कम कीमत पर मजदूर मिल जाते हैं। यह कम्पनियों को बड़े स्तर वैश्विक बाजार में अवसर प्रदान करता है। यह किसी भी देश को भागीदारी, मिश्रित कारखानों की स्थापना, समता अंशों में निवेश, उत्पादों या किसी भी देश की सेवाओं का विक्रय आदि करने की सुविधा प्रदान करता है।

ग्लोबलाइजेशन की कार्यप्रणाली

वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) पूरे विश्व के बाजार को एक बाजार मानने में मदद करता है। व्यापारी व्यवसाय के क्षेत्र को संसार को एक वैश्विक गाँव मानकर बढ़ाते हैं। 1990 के दशक से पहले, भारत में कुछ निश्चित उत्पादों का आयात करने पर रोक थी, जिनका निर्माण पहले से ही भारत में किया जाता था, जैसे – कृषि उत्पाद, इन्जीनियरिंग वस्तुएं, खाद वस्तुएं आदि। यद्यपि, 1990 के दशक में धनी देशों का विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष पर गरीब और विकासशील देशों में अपने व्यवसाय को फैलाने के लिए दबाव था। भारत में उदारीकरण और वैश्वीकरण की शुरूआत 1991 में संघीय वित्त मंत्री (डॉ. मनमोहन सिंह) द्वारा की गई थी।

बहुत सालों के बाद, वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) के कारण भारतीय बाजार में मुख्य क्रान्ति आई, जब बहुत से बहुराष्ट्रीय ब्रांड़ो ने जैसे - पेप्सीको, के एफ सी, मैक-डोनाल्ड, आई बी एम, नोकिया आदि ने भारत में सस्ती कीमत पर विभिन्न विस्तृत गुणवत्ता के उत्पादों की बिक्री की। सभी नेतृत्वकर्ता ब्रांड़ो ने वैश्वीकरण या ग्लोबलाइजेशन की वास्तविक क्रान्ति को प्रदर्शित किया, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ औद्योगीकरण और अर्थव्यवस्था में चौकाने वाली वृद्धि हुई। बाजार में गला काट प्रतियोगिता के कारण गुणवत्ता वाले उत्पादों की कीमत कम हो गई।

वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण ने भारतीय विद्यार्थियों और शिक्षा के क्षेत्र को इंटरनेट के माध्यम से विदेशी विश्वविद्यालयों को भारतीय विश्वविद्यालयों से जोड़ा है, जिसके कारण शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रान्ति आई है।

वैश्वीकरण या ग्लोबलाइजेशन के द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र भी प्रभावित हुआ है, इसके कारण सामान्य दवाईयाँ स्वास्थ्य को नियमित करने वाली विद्युत मशीन आदि उपलब्ध हो जाती है।

यह रोजगार के क्षेत्र में भी व्यापार, जैसे- लघु उद्योगों, हाथ के कारखाने, कारपेट, ज्वैलरी और काँच के व्यवसाय आदि को बढ़ाने के माध्यम से, बड़े स्तर पर क्रान्ति लाया है।

ग्लोबल वार्मिंग

भुवन चन्द्र ब्रजवासी
प्रयोगशाला सहायक, जन्तु विज्ञान विभाग

ग्लोबल वार्मिंग के रूप में आज हम लोग एक बड़ी चुनौती का सामना कर रहे हैं जिसका हमें स्थायी समाधान निकालने की जरूरत है। असल में, धरती के सतह के तापमान में लगातार और स्थायी वृद्धि ग्लोबल वार्मिंग है। इसके प्रभाव को खत्म करने के लिए पूरे विश्व को व्यापक तौर पर चर्चा करने की जरूरत है। इससे दशकों से धरती की आबोहवा और जैव-विविधता प्रभावित हो रही है।

धरती पर ग्लोबल वार्मिंग बढ़ने का मुख्य कारण CO_2 और मिथेन जैसे ग्रीनहाउस गैस है, जिसका सीधा प्रभाव समुद्र जल स्तर में वृद्धि, ग्लेशियरों का पिघलना, अप्रत्याशित वायुमण्डलीय परिवर्तन जो धरती पर जीवन की सम्भावनाओं को प्रभावित करता है। आंकड़ो के अनुसार बीसवीं सदी के मध्य से ही धरती का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है और इसका मुख्य कारण लोगों के जीवनशैली में बदलाव है।

1983,1987,1988,1989 और 1991 बीती सदी के सबसे गर्म साल रहे। पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ने से धरती पर बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूस्खलन, सुनामी, महामारी आदि जैसे प्रकोप जीवन के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं जो प्रकृति के असन्तुलन को दिखाती है।

ग्लोबल वार्मिंग की वजह से जल का वाष्पीकरण वातावरण में हो जाता है, जिसकी वजह से ग्रीन हाउस गैस बनती है और जिसके कारण फिर से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती है दूसरी क्रियाएं जैसे जीवाश्म ईधनों का जलना, खादों का इस्तेमाल, CFCs जैसी गैसों में वृद्धि, ट्रौपोसफेरिक ओजोन और नाइट्रस ऑक्साइड भी ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार हैं। इसके बढ़ने का मौलिक कारण तकनीकी उन्नति, जनसंख्या विस्फोट, औद्योगीकरण, वनों की कटाई और शहरीकरण आदि है।

अत्यधिक वन-कटाई से हम प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ रहे हैं साथ ही तकनीकी उन्नति से ग्लोबल कार्बन साईकिल, ओजोन परत में छेद कर रहे हैं और इससे अल्ट्रावॉयलेट किरणों को धरती पर आसानी से आने का मौका मिल रहा है जो ग्लोबल वार्मिंग में बढ़ोत्तरी का कारण बन रही है। हवा से कार्बनडाई ऑक्साइड को हटाने के लिए पेड़-पौधे सर्वश्रेष्ठ विकल्प है अत: वनों की कटाई को रोकना होगा तथा ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को खत्म करने के लिए पेड़ों को लगाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना होगा जिससे हमें इसके खतरे को कम करने में हमें बड़े स्तर की सफलता मिल सकती है। पूरे विश्व में जनसंख्या विस्फोट को भी रोकने की आवश्यकता है क्योंकि इससे धरती पर विनाशकारी तकनीकों का इस्तेमाल कम होगा।

ग्लोबल वार्मिंग का समाधान

हमें वातावरण से ग्रीनहाउस गैसों का कम से कम उत्सर्जन करना चाहिये और उन जलवायु परिवर्तनों को अपनाना चाहिये जो वर्षों से होते आ रहे हैं बिजली की ऊर्जा के बजाए शुद्ध और साफ ऊर्जा के इस्तेमाल की कोशिश करनी चाहिये अथवा सौर, वायु और जियोथर्मल से उत्पन्न ऊर्जा का इस्तेमाल करना चाहिये। तेल जलाने और कोयले के इस्तेमाल, परिवहन के साधनों, और बिजली के सामानों के स्तर को घटाने से ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों को घटाया जा सकता है।

जीवन शैली बना रही बीमार

सोनिया
प्रयोगशाला सहायक, गृह विज्ञान विभाग

आज के समय में या आधुनिक युग में जीवन शैली का प्रारूप तेजी से बदल रहा है जिस रफ्तार से हम आधुनिक युग की ओर बढ रहे है स्वयं को उतना ही पीछे छोड़ रहे है।

आधुनिकीकरण की रूप रेखा ने हमारी जीवन शैली को बदल कर रख दिया है। उसका सीधा असर हमारे स्वास्थ्य पर पड़ रहा है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों और कार्य के आधुनिकीकरण ने दिन और रात के भेद को खत्म कर दियाहै। कॉल सेन्टर और इन्टरनेट के बाद सोशल मीडिया ने भी जीवन शैली को बदलने में पूरी भूमिका निभाई है। अब देर रात जागना, सुबह देर से उठना और इसके बाद काम पर चले जाना ही जीवन हो गया है। ऐसे युवा जो काम पर नहीं जाते या पढ़ते है उनका जीवन भी कमोबेश ऐसा ही है।

ऐसे में खान पान का प्रभावित होना लाजमी है अर्थात् अस्वस्थ जीवन शैली यानी समय से खाना न खाना, बाहर का तला भुना खाना, समय से ना सोना, समय से ना जागना, व्यायाम न करना या यू कहें कि किसी भी काम का तय समय अनुसार न करना ऐसे में आज बढ़ती बीमारियों का सबसे बड़ा कारण अशुद्ध भोजन है।

लोगो को नई-नई बिमारियाँ हो रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक भारत में 10 से 24 आयु वर्ग की करीब 23 लाख युवा आबादी हर साल असामयिक मौत की शिकार हो जाती है।

आज की शहरी कार्य शैली में पीठ दर्द, मोटापा, तनाव, थकान, सरदर्द, अवसाद, ब्लड़प्रेशर, डायबिटीज, कोलोस्ट्रॉल आदि बीमारियाँ तेजी से घर करती जा रही हैं। देश के बड़े-बड़े चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार स्वस्थ जीवन जीने के लिए जरूरी सलाह-

- **नियमित रूप से शरीर की पूरी जांच करायें** :- अस्वस्थ जीवन शैली और पारिवारिक पुरानी बीमारी दोनों को ध्यान में रखते हुए अपने स्वास्थ्य की नियमित जांच कराते रहे। अपने डॉक्टर को पारिवारिक बीमारी के बारे में बताएं और उसके लक्षण भी देखें की कहीं आपको उससे पीडित होने की संभावना तो नहीं।
- **स्वस्थ आहार (हेल्दी डाइट)** :-हम प्रतिदिन बाहर का फास्ट फूड, जंक फूड, अधिक ऑयली खाना खाते है। ज्यादा तला भुना, ऑयली खाना सीधे हमारे हृदय, दिमाग और सम्पूर्ण स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। स्वस्थ रहने के लिए हमें प्रतिदिन के खाने में हरी सब्जियाँ, फल, अंकुरित बीज और सलाद का सेवन करना चाहिए। इनसे शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिल जाते हैं और हम रोगग्रस्त नहीं होते।
- **रोजाना व्यायाम** :- आपका दिल अच्छे से काम करे, हमेशा प्यार से धड़कता रहे इसके लिए जरूरी है कि आप हर दिन खुली स्वच्छ हवा में व्यायाम(Exercise)करें। व्यायाम के कई विकल्प आप के पास है जैसे खुले में चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना, तैराकी आदि। चलना(Walking) सबसे अच्छा व्यायाम है। प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट चलने से आपका स्वास्थ्य एक दम सही रहेगा।
- **वजन कम करें** :-अधिक मोटापा शरीर के लिए हानिकारक होता है। मोटा शरीर जानलेवा बिमारियों का घर होता है, इसलिए यदि आप पूरी तरह स्वस्थ रहना चाहते हैं तो सबसे पहले बढ़े हुए वजन को घटाएं। वजन घटाने के लिए अधिक कैलोरी वाला खाना न खायें। व्यायाम करें, इससे आप सभी गंभीर बीमारियों को अपने से दूर कर देंगे।
- **तनाव को कम करें** :-तनाव शरीर में कई बिमारियों को निमंत्रण देता है। इससे दिमागी बिमारियाँ सबसे ज्यादा होती है। किसी भी प्रकार के तनाव में न रहें, इससे आप अस्वस्थ हो सकते हैं।

अगर आप बहुत ज्यादा तनाव में हैं तो अपने परिवार और दोस्तों के साथ वक्त बिताएं। खाने पीने का ध्यान रखें। नींद अच्छी तरह लें और व्यायाम भी करें। इस सबसे निश्चित ही आपका तनाव कम होगा। जो लोग अपने घर के बुजुर्गों और बच्चों की देखभाल करते हैं उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण सलाह है हैल्दी भोजन के साथ पूर्ण नींद और व्यायाम का ध्यान रखें।

स्वच्छ भारत अभियान

विपिन कुमार
कनिष्ठ सहायक, आई.टी.इंचार्ज

स्वच्छ भारत अभियान माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा चलाया गया भारत सरकार का एक सफाई अभियान है यह एक महत्वपूर्ण विषय है और हमारे बच्चों, छात्र-छात्राओं को इसकी जानकारी होना आवश्यक है। यह एक राष्ट्रीय स्तर पर चलाया जा रहा अभियान है और शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की सफाई के लिए आरम्भ किया गया है इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों की सफाई, देश के बुनियादी ढाँचे को बदलना आदि शामिल है इस अभियान को आधिकारिक तौर पर राजघाट, नई दिल्ली में 2 अक्टूबर 2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरु किया गया।

स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधी जी ने देखा था जिसको पूरा करने के लिए ही मा. प्रधानमंत्री जी ने कदम बढाया है अत: हम सभी भारतियो का कर्तव्य है कि इसमें सहयोग करें।

यह एक अभियान राजनीति मुक्त अभियान है देशभक्ति से प्रेरित है। इस अभियान की प्रति देश के प्रत्येक व्यक्ति की एक जिम्मेदारी है और अपने भारत वर्ष को स्वच्छ देष बनाने के लिये हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवश्यकता है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व स्तर पर पहल की गयी। शिक्षक और स्कूल के छात्र इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ शामिल हो रहे है और स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने का प्रयास कर रहे है।

इसके अंतर्गत मार्च 2017 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने एक और स्वच्छता पहल की शुरूआत की है। उनहोंने उत्तर प्रदेश के सभी सरकारी कार्यालयों में चबाने वाले पान, गुटखा और अन्य तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस अभियान को 2019 तक एक स्वच्छ भारत का लक्ष्य रखते हुए 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की 145 वीं जन्मदिन के सुबह अवसर पर शुरू किया गया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भारत को एक स्वच्छ भारत बनाने का सपना देखा और इसके लिए हमेशा कठिन प्रयास किये। राष्ट्रपिता के सपने को साकार ने इस अभियान को शुरू करने का फैसला किया।

1. खुले में शौच की प्रवृति को समाप्त करना।
2. अस्वास्थ्यकर शौचालयों को पानी से बहाने वाले शौचालय में परिवर्तित करना।
3. हाथ से मल की सफाई को रोकना।
4. लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करना।
6. अच्छी आदतो के लिए प्रेरित करना।
7. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था अनुकूल बनाना।
8. भारत में निवेश के लिए रूचि रखने वाले सभी निजी क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना आदि।

इस अभियान में बहुत ही रूचि पूर्ण तरीका इस्तेमाल हो रहा है जिसमे प्रत्येक व्यक्ति 9 लोगों को इससे जुड़ने के लिए आंमत्रित करेगा और फिर वह प्रत्येक व्यक्ति अगले 9. लोगों को जुड़ने के लिए आमंत्रित करेंगे और ये श्रृंखला तब तक चलती रहेंगी जब तक की भारत का प्रत्येक नागरिक इससे जुड न जाए। हमारे मा. प्रधानमंत्री जी ने शौचालय को नया नाम दिया ''घर की इज्जत''।

स्वच्छ भारत अभियान को सरकार द्वारा देश की स्वच्छता के प्रतिक के रूप में शुरू किया गया है। अगर आंकड़ों की बात की जाये तो बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जिनके घरों में शौचालय है। इसलिए सरकार गंभीर रूप से सभी को महात्मा गाँधी जी के सपने के साथ जोड़ने का प्रयास कर रही है।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार ने सभी लोगों से निवेदन किया वे अपने आस-पास की दूसरी जगहों की सफाई के लिए साल में केवल 100 घंटों के लिए अपना योगदान दे। स्वच्छता अभियान स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रिय स्वच्छता अभियान है जो

भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत 4041 सांविधिक नगरों के सडक, पैदल मार्ग और अन्य कई स्थान आतें हैं। यह एक बहुत ही बड़ा आन्दोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूरी तरह से स्वच्छ बनाना है।

भारत सरकार द्वारा शहर विकास, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और पहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है। इस मिशन का पहला स्वच्छता अभियान मा. प्रधानमंत्री द्वारा पहले ही शुरू किया जा चुका था। स्वच्छ भारत अभियान के द्वारा सफाई व्यवस्था की समस्या का समाधान निकालना साथ में सभी को स्वच्छता की सुविधा के निर्माण द्वारा पूरे भारत में मल प्रबंधन करना है।

स्वच्छ भारत अभियान की जरूरत

स्वच्छता अभियान की आवश्यकता अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में स्वच्छता अभियान की कार्यवाई लगतार चलती रहनी चाहिए। भौतिक, मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका एहसास होना बहुत ही जरूरी है। यह भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है। स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता को देखते हुए निम्न बिन्दु पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

1. भारत के घर-घर में शौचालय हो साथ ही खुले में शौच की प्रवृति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।
2. अस्वास्थ्यकर शौचालय को पानी से बहाने वाले शौचालयों से बदलने की आवश्यकता है।
3. हाथ के द्वारा की जाने वाली साफ-सफाई की व्यवस्था का जड़ से खात्मा जरूरी है।
4. नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।
5. खुद के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की सोच और स्वाभाव में परिवर्तन लाना और स्वस्थ्यकर साफ-सफाई की प्रक्रियों का पालन करना।
6. ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों मे वैश्विक जागरूकता का निर्माण करने के लिये और सामान्य लोगों को स्वास्थ्य से जोड़ने के लिये।
7. इसमें काम करने वाले लोगों को स्थानीय स्तर पर कचरे के निष्पादन का नियंत्रण करना, खाका तैयार करने के लिए मदद करना।
8. पूरे भारत में साफ-सफाई की सुविधा को विकसित कने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।
9. भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।
10. ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।
11. स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समुद्रायों और पंचायती राज संस्थानों को निरंतर साफ-सफाई के प्रति जागरूक करना। ये सब हमे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के सपनों को सच करने लिए करना है।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान :

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड घरों 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। सामुदायिक शौचालय के निर्माण की योजना रिहायशी इलाकों में की गई है जहाँ पर व्यक्तिगत घरेलू शौचालय की उपलब्धा मुश्किल है इसी तरह सार्वजनिक शौचालय की प्राधिकृत स्थानों पर जैसे बस अड्डों, रेलवे स्टेशन, बाजार आदि जगहों पर। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पाँच वर्षो के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है। इसमें ठोस कचरा प्रबंधन की लागत 7,366 करोड़ रूपये है, 1,828 करोड़ जन सामान्य को जागरूक करने के लिये है, 655 करोड रूपये सामुदायिक शौचालयों के लिये, 4,165 करोड़ निजी घरेलू शौचालयों के लिये आदि। कार्यक्रम जिन्हें पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है-खुले में शौच की प्रवृति को जड़ से हटाना, शौचालय को पानी से बहाने वाले शौचालयों में परिवर्तन, खुले हाथों से साफ-सफाई की प्रवृति को हटाना, लोगों की सोच में परिवर्तन लाना के रूप में लागू किया जाना है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान को स्वच्छता कार्यक्रम के रूप में लागू किया जाना है। ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ बनाने के लिए

इससे पहले भारतीय सरकार द्वारा निर्मल भारत अभियान की स्थापना की गई किन्तु इस समय इसका पुनर्गठन स्वच्छ भारत अभियान के रूप में किया गया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य ग्रामीणों को खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना, इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सरकार ने 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख करोड़ रूपय की राशी को खर्च करने की योजना बनाई है। सरकार ने कचरे को जैविक खाद और इस्तेमाल करने लायक उर्जा में परिवर्तित करने की योजना की है। इससे ग्राम पंचायत, जिला परिषद, पंचायत समिति की बहुत अच्छी भागीदारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार करने के लिए चलाया गया है।

2019 तक स्वच्छ भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में साफ-सफाई के लिए लोगों को प्रेरित किया जा रहा है। साफ-साफाई की जरूरी सुविधाओं को लगातार उपलब्ध करने के लिए पंचायती संस्थान, समुदाय आदि को प्रेरित करते है।

ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार साफ-सफाई और पारिस्थितिक प्रोत्साहित करना होगा।

स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यायालय अभियान स्वच्छ भारत अभियान केन्द्रिय मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा चलाया गया है और इसका उद्देश्य गाँव, शहर और स्कूलों में स्वच्छता लाना है। इस अभियान के तहत 25 सितम्बर 2014 से 31 अक्टूबर 2014 तक केन्द्रिय विद्यालय और नवोदय विद्यालय संगठन जहाँ कई सारे स्वच्छता क्रियाकलाप आयेजित किये गये हैं जैसे छत्रों द्वारा स्वच्छता के पहलुओं पर चर्चा, इससे संबंधित महात्मा गाँधी की शिक्षा, स्वच्छता और स्वच्छता विज्ञान के विपय पर चर्चा, स्वच्छता क्रियाकलाप।

चमन लाल महाविद्यालय, द्वारा स्वच्छता अभियान 12 अक्टुबर 2017 को महाविद्यालय परिसर एंव कस्वा लण्ढौरा में चलाया गया। स्वच्छता अभियान में श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति), श्री अरुण कुमार (सचिव, प्रबन्ध समिति), श्री अतुल हरित (कोषाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति), डॉ. देवपाल (प्राचार्य), श्री दिनेश कुमार(कार्यलय अधीक्षक), विपिन कुमार (कनिष्ठ सहायक) एवं समस्त शिक्षकगण, गैरशिक्षकगण, कर्मचारियों और छात्र/छात्राओं ने सक्रिय प्रतिभाग किया।

स्वच्छ भारत अभियान पर नारे:

1. कदम से कदम मिलाओ स्वच्छता की तरफ हाथ बढ़ाओ।
2. युवा शक्ति हैं सब पे भारी, उठाओ झाड़ू गंदगी बाहर करो सारी।
3. स्वच्छता ही है देश का सौन्दर्य, जिसे लाना है हमारा कर्तव्य।
4. एक नया सवेरा लायेंगे, पूरे भारत को स्वच्छ और सुंदर बनाएंगे।
5. स्वच्छता का रखना हमेशा ध्यान, तभी तो बनेगा हमारा भारत देश महान।
6. आओ मिलकर सबको जगाएं, गंदगी को स्वच्छता से दूर भगाएं।
7. आओ मिलजुलकर खुशियाँ मनाये, भारत को स्वच्छ बनाएं।
8. स्वच्छता भारत अभियान में सब मिल जाओ, मिलकर सब अपने प्यारे भारत को स्वच्छ बनाओ।
9. सफाई से खुद को स्वच्छ बनाना है स्वच्छता से पूरे विश्व में अपनी पहचान बनाना है।
10. अब हर भारतीयों ने मन में यही ठाना है पूरे भारत को स्वच्छ बनाना है।
11. गाँव-गाँव गली-गली ऐसी ज्योति जलाएंगे पूरे भारत को स्वच्छ बनाएंगे।
12. बापू का घर-घर पहुंचे संदेश, स्वच्छ और सुंदर हो अपना देश।

निष्कर्ष

2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा-भरा बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान एक बहुत ही अच्छा कदम है। अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो हमें भी अपने जीवन में स्वच्छता को जारी रख कर उनको बनाए रखने की जरूरत है, एक स्वस्थ देश और स्वस्थ समाज को जरूरत है कि उसके नागरिक स्वस्थ और स्वच्छ हों।

डॉ. कलाम का जीवन परिचय

निबन्ध लेखन-1

भावना राज
बी.ए.-प्रथम वर्ष

डॉ. अब्दुल कलाम का जीवन परिचय- अब्दुल कलाम आज़ाद का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वर (तमिलनाडु/भारत) के धनुषकोड़ी गाँव में हुआ था। अब्दुल कलाम का पूरा नाम 'अबुल पाकिर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम' था। उनकी माता का नाम 'अरसिम्मा' और पिता का नाम 'जैनुलआब्दीन' था।

अब्दुल कलाम ने अपनी शिक्षा सेठ जोसेव कॉलेज से की तथा आगे की शिक्षा 'चेन्नई इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी' से की। अब्दुल कलाम शिक्षा में निपुण थे तथा पिक्षा के प्रति बहुत ही जागरूक एवं सक्षम थे।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जीवन चरित्र- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का परिवार निम्न स्तर का था। तथा उनकी आर्थिक स्थिति ज़्यादा अच्छी नहीं थी। वे बचपन में अखबारों के बंडलों को बेचकर अपना गुज़ारा करते थे तथा उन्हीं पैसों से शिक्षा ग्रहण करते थे तथा वे जानते थे कि उनके जीवन में शिक्षा का क्या योगदान है इसलिए वह शिक्षा को सर्वोपरि मानकर मेहनत और लगन से शिक्षा ग्रहण करते थे।

उन्हें गणित, भौतिकी और रसायन विज्ञान में अधिक रूचि थी, इसलिए उन्होंने 'चेन्नई इन्स्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग' से इंजीनियरिंग की और इस तरह वे वैज्ञानिक बनने की ओर अग्रसर हुए।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का शिक्षा में योगदान- डॉ. ए.पी.जे. अब्दु कलाम ने शिक्षा के द्वारा ही अपनी छवि उभारी थी। इसी कारण उन्हें वैज्ञानिकी में कई उपग्रह, सेटेलाइटों का निर्माण करवाया। उन्होंने बहुत से ऐसे उपग्रहों की खोज की जो आगे चलकर बहुत सक्षम एवं निपुण साबित हुए।

उन्होंने भारत के पहले परमाणु परीक्षण 1974 में भाग लिया तथा दूसरे परमाणु परीक्षण 1992 में पोखरण (राजस्थान) में हुआ, उसमें उन्होंने अपना पूर्ण योगदान दिया।

उन्होंने भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह (एस.एल.पी.-3) बनाया। जो उनकी सबसे प्रशंसनीय खोज थी।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को दिये गए पुरस्कार- डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को उनकी खोजों एवं योग्यता के आधार पर उन्हें 'वैज्ञानिकी क्षेत्रों में इंजीनियर मैन' के रूप में जाना जाता है।

इसलिए उन्हें इंदिरा गाँधी पुरस्कार (1990), पदम् विभूषण (1990), तथा पदम् भूषण (1981), रामेश्वरम् पुरस्कार (2000) तथा अन्य बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया तथा 1997 में उन्हें भारत रत्न से नवाजा गया।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राजनीति में- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को एक रक्षामंत्री के रूप में भी वे 1992 से लेकर 1999 तक और वैज्ञानिकी एवं राजनीति में दोनों में संलग्न रहे।

2002 में उन्हें भारत के राष्ट्रपति के रूप में चुना गया। वे भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। वे 2002 से लेकर 2007 तक राष्ट्रपति के पद पर आसीन रहे।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की मृत्यु- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की स्वास्थ्य स्थिति 2010 से ही बिगड़ने लगी थी तथा समय बढ़ने के साथ-साथ वे और ज़्यादा बीमार हो गए। उन्हें कई बार अस्पताल में भर्ती करना पड़ा।

परन्तु अब्दुल कलाम को लगा कि शायद अब वह ज़्यादा दिन तक नहीं जीवित रह पायेंगे, किन्तु उन्होंने हार नहीं मानी। जब उनकी स्थिति ज़्यादा बिगड़ने लगी तो नरेन्द्र मोदी (जो तत्कालीन प्रधानमंत्री) हैं उन्होंने अब्दुल कलाम से मुलाकात की और अब्दुल कलाम आज़ाद ने 25 जुलाई 2015 को अपना एक भाषण भी दिया और जनता को शिक्षा के प्रति सम्बोधित किया।

और नरेन्द्र मोदी जी से कहा- कि वे उनकी मृत्यु दिवस पर

अवकाश न रखें। परन्तु उनके सम्मान हेतु उन्होंने 27 जुलाई 2015 को उनकी मृत्यु दिवस पर अवकाश रखा। इस प्रकार एक महान वैज्ञानिक व राजनीतिज्ञ तथा एक निपुण राष्ट्रपति जो 27 जुलाई 2015 को हमारे बीच नहीं रहे। परन्तु वे हमेशा भारतीय इतिहास में अमर रहेंगे। उनकी जीवनी का नाम 'अब्दुल कलाम का जीवन परिचय' है।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

निबन्ध लेखन-2

तनु सिंह
बी.ए.- प्रथम वर्ष

देश को परमाणु शक्ति से सुसज्जित करने वाले डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। इनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को हुआ था। इनका पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाआबद्दीन था। इनके पिता का नाम जैनुलाआबद्दीन था, इनकी माता का नाम आसीमा था। डॉ. कलाम अपने पिता से बहुत अधिक प्रभावित थे। इनके पिता अधिक पढ़े-लिखे न थे किन्तु वे कलाम को एक महान् व्यक्ति बनाना चाहते थे। इनकी शिक्षा रामनाथपुरम के स्क्वॉर्ट्ज़ में हुई थी। कई लोग इनको एक अच्छा कवि भी मानते थे। इन्होंने दो पुस्तकें लिखीं जो काफी प्रसिद्ध हुई। 'इण्डिया 2020' और विंग्स ऑफ फायर-एन ऑटोबायोग्राफी'। डॉ. कलाम ने एक समय में अखबार भी बेचे परन्तु शायद ये किसी को मालूम न था कि यही व्यक्ति एक दिन भारत का नाम रोशन करेगा। डॉ. कलाम एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे वे नित्य ही नमाज़ अदा किया करते थे और साथ ही दूसरे धर्मों का भी सम्मान किया करते थे। वे राम के चरित्र से बहुत अधिक प्रभावित थे। इन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया तथा डी.टी.डी. में बतौर वरिष्ठ सहायक वैज्ञानिक के तौर पर कार्य किया। इसके बाद ही आर. डी.ओ. में भी वैज्ञानिक के तौर पर कार्य किया।

डॉ. कलाम ने डी.आर.डी.ओ. को कुछ समय बाद छोड़ दिया तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान में कार्य किया। यहाँ पर इन्होंने 19 वर्षों तक कार्य किया। इसके कुछ समय बाद इन्होंने एस.एल.वी. के तीन डिज़ाइन तैयार किये और फिर उनका सफल प्रक्षेपण किया। इस सफल प्रक्षेपण के बाद डॉ. कलाम को सन् 1981 में पदम् भूषण से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय अनुसंधान के तहत् इन्हें 25 नवम्बर 1997 को भारत रत्न से तथा 1998 में राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गाँधी अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इन्होंने कम ही समय में हमारे देश को अंतरिक्ष की नई ऊँचाईयों तक पहुँचा दिया था। ए.पी.जे. कलाम एक ऐसा नाम बन चुका था जो इतिहास को नए नचम पर ले गया। इसी के कारण 1999 में इन्हें भारत का राष्ट्रीय सलाहकार नियुक्त किया गया और 2002 में इन्हें भारत का 11वां राष्ट्रपति नियुक्त कर दिया गया।

आज उनके अथक प्रयासों का ही नतीजा है कि भारत आज विकसित देशों की सूचि में गिना जाता है। वे जाने-माने चेहरे थे जो भारत को आगे ले गए। परन्तु 27 जुई 2015 को अंतरिक्ष अनुसंधान के बारे में शिलौंग में ये भाषाण दे रहे थे तो अचानक भाषण के दौरान एक ज़ोरदार दिल का दौरा पड़ा और ये बेहोश हो गए। तभी इन्हें अस्पताल ले जाया गया परन्तु दो घन्टे बाद ही इनकी मृत्यु की पुष्टि कर दी गई।

पूरा देश इनकी अकस्मात् मौत से सन्न रह गया तथा आज तक इस महान् व्यक्ति या कहें तो 'मिसाइलमैन' को याद करता है। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का कहना था कि-

"आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते, परन्तु अपने आदतें तो बदल सकते हैं। और निश्चित् ही आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।"

भारत के मिसाइलमैन

निबन्ध लेखन - 3

सरिता सैनी
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का पूरा नाम अब्दुल पाकिर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम है। उनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम् (तमिलनाडु) में हुआ था। वे भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे। वे 2002 से 2007 तक भारत के राष्ट्रपति पद पर आसीन रहे। उनका जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी पढ़ाई को नहीं छोड़ा। अब्दुल कलाम आज़ाद ने प्रारम्भ में फिज़िक्स की पढ़ाई पूरी की और बाद में एमरोस्पेस इंजीनियरिंग किया। वे भारतीय के दिल में "जनता के राष्ट्रपति" व "भारत के मिसाइलमैन" के रूप में जाने जाते हैं।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आज़ाद एक महान इंसान थे जिन्हें 1997 में भारत रत्न, 1990 में पद्म विभूषण, 1981 में पद्म भूषण,1997 इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार में मिला। उन्हें रामानुजन एवॉर्ड 2000 में, किंग्स चार्ल्स द्वितीय मेडल 2007 में, इंटरनैशनल वॉर्न अवार्ड 2009 आदि से सम्मानित किया गया।

अब्दुल कलाम के जीवन में लेखक, शिक्षा और लोक सेवा का विशेष योगदान था। वे भारत के कैबिनेट मंत्रालय में भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार बने। उन्हें कम से कम 30 विश्वविद्यालयों के द्वारा "डॉक्टरेट" की उपाधि से सम्मानित किया गया। वे एक महान् व्यक्तित्त्व के साथ ही साथ देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत भी थे। अचानक हृदयगति रूक जाने के कारण मेघालय के शिलौंग में आई.आई.एम. में लेक्चर देते समय 27 जुलाई 2015 को उनका निधन हो गया। वे एक महान वैज्ञानिक के साथ ही साथ एक महान् व्यक्ति भी थे। वे शारीरिक रूप से भले ही आज हमारे बीच मौजूद नहीं हैं लेकिन उनके द्वारा दिया गया योगदान हमेशा उनको हमारे बीच जीवित रखेगा। उन्होंने भारत को एक विकसित राष्ट्र के सपने के रूप में देखा था। इसलिए वे हमारे लिए एक प्रेरणास्रोत के रूप में माने जाते हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक "भारत 2020-नवनिर्माण की रूपरेखा" में भारत को एक विकसित सपने के रूप में लिखा है। उनकी यही पुस्तक हमारे लिए प्रेरणास्रोत रही है।

अब्दुल कलाम आज़ाद एक वैज्ञानिक के रूप में- अब्दुल कलाम आज़ाद एक वैज्ञानिक के तौर पर डी. आर.डी.ओ. (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन) में कार्य किया। जहाँ उन्होंने भारत सेना के लिए एक हेलीकॉप्टर डिज़ाइन किया। बाद में कलाम साहब प्रक्षेपात्र उपग्रह स्वदेशी के निदेशक के रूप में भारत से जुड़े रहे। उन्होंने पोखरन-द्वितीय परमाणु परीक्षक 1998 में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

अब्दुल कलाम आज़ाद का जीवन बेहद संघर्षपूर्ण था। हालांकि भारत की नई पीढ़ी के लिए वे एक प्रेरणास्रोत व प्रेरित करते रहे हैं। वे कहते थे "राष्ट्र को नेतृत्त्व में आदर्श की ज़रूरत है जो युवाओं को प्रेरित कर सके।"

उपसंहार- 27 जुलाई 2015 को मेघालय के शिलौंग में आई.आई.एम. में लेक्चर देते समय शाम के लगभग इन्होंने आखिरी साँस ली। वे एक सच्चे देशभक्त के रूप में जाने जाते हैं। इतने उच्च पद पर रहने के बाद भी वे साधारण जीवन व्यतीत करते थे। उनके इस सपने के कारण भारत नई-नई ऊँचाइयों को छू रहा है। अब्दुल कलाम आज़ाद में एक सफल वैज्ञानिक थे। उनके ऊपर 2011 में एक फिल्म आई थी जिसका नाम था "आई एम ए कलाम" फिर बाद में परमाणु फिल्म बनी। हालांकि उन्होंने कहा था कि-

"सपने वो नहीं जो तुम रात में देखते हो, बल्कि सपने वो होते हैं, जो तुम्हें सोने न दें।"

शिक्षा के विकास में पुस्तकालय की भूमिका

डॉ. पुनीता शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, पुस्तकालय विज्ञान विभाग

शिक्षा एवं ग्रंथालय दो जुड़वा बहने हैं, इसलिए इन्हें एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। ग्रंथालय आधुनिक शैक्षणिक संरचना की नींव है इसलिए कोई भी शैक्षणिक संस्था ग्रंथालय के बिना अधूरी है क्योंकि एक ओर उक्त शिक्षण संस्थान अपने सभी शैक्षिक कार्यों को पूरा करती है तो दूसरी ओर उनके ग्रंथालय अपनी ज्ञान-सामग्री को सही समय पर सही व्यक्ति को सही रूप में प्रदान कर उसे शैक्षणिक कार्यक्रमों को बल एवं प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। अत: ग्रंथालय किसी भी शैक्षिक संस्था का महत्वपूर्ण अंग है, उसे किसी शिक्षण संस्था के हृदय के रूप में निरूपित किया जा सकता है।

एक संस्था में अध्ययन एवम् शोध की प्रकृति का सीधा प्रभाव पुस्तकालय की आवश्यकता उपयोग पर पड़ता है। व्याख्यान निर्देशित अथवा पाठ्य पुस्तक निर्देशित कक्षाएं पुस्तकालय पर ज़्यादातर आधारित नहीं होती। व्यापक पठन एवं लिखित प्रतिवेदन विद्यार्थी द्वारा पुस्तकालय के गहन उपयोग की माँग करता है। सम्मेलनों, ट्यूटोरियल्स सम्बन्धी एवं अन्य अध्ययन विधियों की आवश्यकता विद्यार्थियों द्वारा व्यक्तिगत अध्ययन एवं लिखित कार्य के लिए सम्बद्ध पुस्तकालय संग्रह की मांग करता है। शोध के लिए प्रथम और द्वितीय स्रोत सामग्री के विस्तृत संग्रह की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम आवश्यकताओं को पूरा करने में पुस्तकालय न केवल सुदृढ़ संग्रह निर्माण की आवश्यकता पड़ती है परन्तु आवधिक संग्रह मूल्यांकन की ज़रूरत भी पड़ती है।

शिक्षा का अर्थ- शिक्षा शब्द की व्युत्पति लैटिन भाषा के एड्केटम (Educatum) शब्द से हुई है। एडुकेटम का अर्थ है शिक्षण का कला ए (E) का अर्थ है अन्दर से और डूको (Duco) का अर्थ है-आगे बढ़ना या प्रगति करना। इस प्रकार आधुनिक धारणा के अनुसार शिक्षा बालक के अंदर छिपी हुई समस्त शक्तियों को सामाजिक वातावरण में विकसित करने की कला है।

शिक्षा शब्द का मूलभूत अर्थ सीखना और समझना है। मनुष्य को बचपन में समझने और सीखने की शिक्षा दी जाती है। उसके लिए उसकी बौद्धिक शक्तियों को विकसित किया जाता है तथा उसे स्वयं आगे बढ़ने तथा अधिक बातें जानने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति अधिक से अधिक बातें दूसरे के मार्गदर्शन में सीखता है और बाद में स्वयं सीखने एवं समझाने में समर्थ हो जाता है। दूसरे अध्यापकों के द्वारा शिक्षण से भी मार्गदर्शन एवं ज्ञान दिया जाता है। इस प्रकार नियमित शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को स्वध्याय की ओर प्रेरित किया जाता है। मानव जीवन पर्यन्त सीखता एवं समझता रहता है परन्तु अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे शिक्षा का नियमित अध्ययन करना पड़ता है।

शिक्षा जागरूकता का माध्यम है, संस्कारों का परिमार्जन है, कर्तव्यबोध की शक्ति है। अत: शिक्षा प्राकृतिक विपदाओं, राष्ट्रीय, सामाजिक, जातिगत बुराईयों का अनावरण कर झूठी धार्मिक कुण्ठाओं से सजग कर सुगम मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा सम्पूर्णता में समझने तथा अभिव्यक्त करने का साधन है। समझने की क्षमता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाला कार्य है, निरन्तर प्रक्रिया संचालन से ज्ञान का विकास होता है।

स्वतंत्रता के बाद निरंतर आयोगों तथा समितियों गठन कर भारत सरकार शिक्षा विकास के प्रति प्रतिबद्धता दुहराती है। इनमें मुख्य रूप से उच्च शिक्षा आयोग (1948-1949) डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में, शिक्षा आयोग (1964-1966) डॉ. कोठारी की अध्यक्षता में, नई शिक्षा नीति 1986 प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992, रामामूर्ति समिति रिपोर्ट 1990 आदि प्रमुख हैं।

उच्च शिक्षा संस्थानों के माध्यम से शोध की विशिष्ट उपलब्धियाँ आगे जाने वाली पीढ़ी के लाभ क लिए कार्यान्वित होती है। उपलब्धियों के सहारे उपयुक्त प्रका के व्यवसायिक वरीयता के आधार पर अनेक कार्य क्षेत्रें में प्रबन्धन वरीयता प्राप्त करते हैं। इन्हीं विशेषताओं के आधार को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय तथ महाविद्यालयों के कार्य निश्चित् किए गये हैं।

इन सभी समीतियों तथा आयोगों ने पुस्तकालय सेव

की आवश्यकता को शिक्षा की गुणवत्ता के साथ जोड़कर देखा है। परिमाणत: आवश्यक धन, पुस्तकालय कर्मियों की शैक्षणिक योग्यता एवं तकनीकी विकास की पुस्तकालय विकास से जोड़ने सम्बन्धी सुझाव दिए हैं।

इसी क्रम में 1956 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय पुस्तकालय विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी है।

शैक्षणिक पुस्तकालय- शिक्षण संस्थाओं से संलग्न पुस्तकालय को शैक्षणिक पुस्तकालय कहा जाता है। शिक्षण संस्थान शिक्षा और शोध के ऐसे संस्थान हैं जो किसी निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर किसी निश्चित् स्तर, उपाधि या प्रमाण पत्र की प्राप्ति के लिए छात्रों को औपचारिक शिक्षा प्रदान करते हैं। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और इंजीनियरिंग, चिकित्सा आदि की शिक्षा से सम्बन्धित संस्थान ऐसे ही संस्थान हैं। अपने संस्थान की शैक्षणिक आवश्यकताओं में सहयोग देने के लिए हर शिक्षण संस्थाओं में पुस्तकालय की स्थापना की जाती है। इस प्रकार अपनी संस्था के अनुरूप आकार, प्रकार, संग्रह तथा सेवाएं प्रदान करने में शैक्षणिक पुस्तकालय एक दूसरे से भिन्न हो सकते हैं। परन्तु साथ ही साथ हर शैक्षणिक पुस्तकालय में कुछ सामान्य तत्त्व भी होते हैं। वह तत्त्व यह है कि प्रत्येक शैक्षणिक पुस्तकालय संस्थान की शिक्षा तथा शोध की आवश्यकताओं को पूरा करने में पूर्ण सहयोग प्रदान करना है।

शैक्षणिक पुस्तकालय के प्रकार-

विद्यालय पुस्तकालय- विद्यालय व संस्था होती है जहाँ से छात्र-छात्राएं शिक्षा जगत में प्रवेश करते हैं। यह कार्य निम्न तीन स्तरों से पूरा होता है।

प्राथमिक विद्यालय पुस्तकालय
माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालय
उच्चतर विद्यालय पुस्तकालय

विद्यालय के इस प्रत्येक स्तर पर अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पुस्तकालय का होना आवश्यक है। छात्रों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विद्यालय अधिकारी अनेक सुविधा प्रदान करते हैं। इनमें सर्वाधिक प्रचलित पुस्तकालय सुविधा है। पुस्तकालय छात्र व अध्यापक दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पुस्तकालय छात्रों के शैक्षणिक व अशैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में प्रतिभा का विकास करता है। विद्यालय पुस्तकालय वास्तव में विद्यालय का द्वितीय अध्ययन कक्ष (Class-room) होता है। पुस्तकालय विद्यार्थियों में मौलिक चिंतन की प्रवृत्ति विकसित करने, अपनी शक्तियों का राष्ट्र के निर्माण में उपयोग करने, उच्च आदर्श को अपनाने एवं भावी जीवन का निर्माण करने में सहायक होते हैं।

महाविद्यालय पुस्तकालय- शिक्षा प्रक्रिया में महाविद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। महाविद्यालय उच्च शिक्षा का प्रवेश द्वार है।

किसी भी विषय का गंभीर अध्ययन यहीं से आरम्भ होता है। अध्ययन को व्यापक, तुलनात्मक और प्रायोगिक रूप देने के लिए कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त स्वध्याय करना अति आवश्यक होता है। स्वाध्याय को सरल और सुगम बनाने के लिए महाविद्यालय स्तर पर पुस्तकालय की व्यवस्था की जाती है। कक्षा में प्रदत्त शिक्षा को छात्र स्वयं परिवर्धित कर सकें इस उद्देश्य से शिक्षकों की शिक्षण पद्धति पुस्तकालयोन्मुखी होनी चाहिए।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय- उच्च शिक्षा प्राप्ति में विश्वविद्यालय मुख्य भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालय, शिक्षण के अतिरिक्त शोध, विचारों के संरक्षण और व्याख्या सम्बन्धी कार्य करता है। शोध कार्य विश्वविद्यालय का एक ऐसा प्रमुख कार्य है जो उसको महाविद्यालय से अलग करता है। विश्वविद्यालय में अभीष्ट विषय पर विशेष अध्ययन और अधिकार प्राप्त किया जाता है। भौतिक ज्ञान का यहाँ सृजन होता है और ज्ञान के विक्रेन्द्रिकरण का यह मुख्य केन्द्र है। ज्ञान का संरक्षण और विकास विश्वविद्यालय शिक्षा पर निर्भर करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. पुस्तकालय तथा समाज- अग्रवाल, श्याम सुंदर
2. पुस्तकालय एवं समाज- व्यास, एस.डी.।
3. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग प्रतिवेदन 2004-2005, नई दिल्ली।

एशियाई राष्ट्रों की भूमिका एवं प्रभाव

(ब्रिक्स एवं संयुक्त राष्ट्र के विशेष संदर्भ में)

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

यदि हम 21वीं सदी में अपने सम्पूर्ण रूप में जीवित रहना चाहते हैं तो इसके लिए हमें अधिक संसूचित, अधिक ज्ञानवान, अधिक बुद्धिमान एवं सर्वाधिक सचेत होने की आवश्यकता है। 21वीं सदी को 'एशियाई सदी के रूप में परिकल्पित किया जा रहा है जिसमें एशियाई राजनीति एवं संस्कृति, जिसकी कुछ विशिष्ट जनांकीय एवं आर्थिक पहचान एवं प्रवृत्तियाँ हैं, का प्रभुत्व रहेगा।' एशियाई सदी की अवधारणा उसी प्रकार की अवधारणा है, जिस प्रकार 20वीं सदी को 'अमरीकी सदी' एवं 19वीं सदी को 'ब्रिटिश औपनिवेषिक सदी' माना जाता है।

2011 में एशियाई विकास बैंक द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया है कि 21वीं सदी के मध्य तक एशिया के लगभग 3 बिलियन (3 अरब) लोगों को सम्पूर्ण विश्व के आधे के द्वारा वैश्विक निर्गत (उत्पादन) में भाग होगा।

इसलिए, हमें पर्यावरण, अहंवाद, कॉर्पोरेट, स्थानीय स्वशासन, जल, जंगल के संरक्षण एवं संवर्द्धन, पर्यटन विनियमन आधुनिक विकास से सम्बद्ध मुद्दों, किसी स्थान की धारक क्षमता, जलवायु परिवर्तन, पिघलते ग्लेशियरों, बढ़ती जनसंख्या, संक्रामक रोगों, शरणार्थियां के प्रश्न एवं न्यायपूर्ण एवं समतामूलक विश्व व्यवस्था के लिए वैश्विक प्रबन्ध करने की महत्तर आवश्यकता होगी।

उपरोक्त प्रश्नों में 'संघर्ष' के समाधान हेतु हमें दण्डात्मक-हिंसक आंदोलनों का नहीं वरन् सुधार आंदोलनों का रास्ता अपनाना होगा। हमें यह अनिवार्यत: समझना होगा कि हमें और अधिक चिकित्सालयों और स्वास्थ्य केन्द्रों की ज़रूरत है, अधिक वन एवं कृषि भूमि की आवश्यकता है एवं ऐसी ही अनेक अन्य आवश्यकताएं हैं।

ब्रिक्स (BRICS) को ऐसी स्थिति में अनिवार्यत: 'संघर्ष एवं टकराव के मुद्दों का समाधान करने हेतु आगे आना होगा। 'ब्रिक्स' राष्ट्रों को संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ कंधे से कंधा मिलाकर विश्व शांति को आगे बढ़ाने हेतु प्रतिबद्ध होकर कार्य करना होगा। ऐसा होने पर ही हम अन्तर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा एवं विकास के रास्ते में आगे बढ़ सकते हैं। ऐसा करने हेतु 'ब्रिक्स' राष्ट्रों में आपसी समन्वय की पर्याप्त संभावना है, जिसको अभी तक न तो पहचाना गया है और न ही साकार रूप दिया जा सका है।

सम्पूर्ण विश्व के विद्वान-विशेषज्ञों के उन विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जावान एवं ओजस्वी विचार एवं विमर्श को आमंत्रित करने चाहिए। ब्रिक्स देशों के मध्य आपसी सम्बन्धों को घनिष्ठ कर 21वीं सदी को 'एशियाई सदी' के रूप में स्थापित कर सकें, और अपने समवेत प्रयासों से अन्तर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा हेतु उल्लेखनीय कार्य कर सकें। ब्रिक्स देशों में अवसंरचनात्मक विकास, व्यापार व वाणिज्य, ऊर्जा, दूरसंचार, परिवहन (विशेषत: सड़क एवं रेल), शुद्ध पेय जल तक पहुँच, स्वच्छता, स्वास्थ्य, भ्रष्टाचार, खाद्य सुरक्षा, कृषि विकास (विशेषत: पर्यावरण अनुकूल हरित कृषि), जल-सुरक्षा, शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को कम करना, आर. एण्ड डी. (शोध एवं अनुसंधान) चुनौतियाँ, पर्यटन एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा अवसंरचनाओं के रख-रखाव हेतु उपयुक्त एवं नवाचारी पद्धतियों का प्रयोग आदि-आदि के द्वारा 21वीं सदी को हम एशियाई सदी के रूप में घोषित कर सकते हैं।

भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर

ज्योति
बी.ए.-प्रथम वर्ष

भीमराव अम्बेडकर जीवन परिचय- डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में हुआ था। वे रामजी मालोजी सकपाट और भीमाबाई मुरबादकर की 14वीं व अंतिम संतान थे। उनका परिवार मराठी था और वो अंबावडे नगर, जो आधुनिक महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में है, से सम्बन्धित था। अनेक समकालीन राजनीतिज्ञों को देखते हुए उनकी जीवन अवधि कुछ कम थी। भीमराव अम्बेडकर महार जाति के थे जो अछूत कहे जाते थे, किन्तु जब भीमराव बहुत छोटे थे तो वह अपनी पढ़ाई के लिए स्कूल जाते थे और उनको स्कूल की क्लास में बैठने नहीं दिया जाता था क्योंकि उस समय उसी व्यक्ति के बच्चों को वहाँ पर बैठने दिया जाता था जो बड़े लोग थे। अछूत समझी जाने वाली जाति में जन्म लेने के कारण अपने स्कूली जीवन में अम्बेडकर को अनेक अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ा। जब भीम बच्चे थे तो वह बाहर रहते थे। एक बार भीम और उनका भाई शहर से गाँव में अपने माता-पिता को मिलने के लिए अपने घर आ रहे थे। तो उन्हें रास्ते में अपने घर जाने के लिए अपने वाहन में बैठाने के लिए तैयार न था। क्योंकि उनको सब अछूत और छोटी जाति के मानते थे। और उसी बीच एक बैलगाड़ी वाला अपनी बैलगाड़ी में बैठकर जा रहा था। उन्होंने उससे पूछा कि आप हमें अपनी बैलगाड़ी में लेकर चलो आप इस बात के बदले में उस व्यक्ति न उनसे वह बैलगाड़ी हाँकने को कहा और वह बैलगाड़ी हाँकने को तैयार हो गये थे क्योंकि उन्हें सुबह से शाम हो गई थी। वहीं पर बैलगाड़ी का इंतज़ार करते-करते शाम हो गई थी, इसलिए उन्होंने सोचा कि अगर हम इसकी बैलगाड़ी हांकेंगे तो यह हमें घर जाने में हमारी मदद करेगा, तो इस प्रकार भीम बचपन से ही बहुत मेहनती थे।

बाबा साहब भीमराव अंबेडकर

नेहा गुथ्वाल
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

कब गुज़र गये वो भीम थे
दुनिया को जगाने वाले भीम थे
हमने तो सिर्फ इतिहास पढ़ा है यारों
इतिहास बनाने वाले मेरे भीम थे
गरज उठे गगन सारा, समुंदर छोड़े अपना किनारा
हिल जाए जहान सारा

जब गूँजे "जय भीम का नारा"
कतरा थे कभी हमको, समंदर बना दिया
अधिकार दिलाया हे, मुकबर बना दिया
पैरों की धूल मानती थी सभ्यता हमें
अम्बेडकर जी ने सबको बराबर बना दिया।

मित्रता की मिसाल

सबीहा अब्बासी
बी.ए.-प्रथम वर्ष

दोस्तों नीयत कितनी भी अच्छी हो, दुनिया तुम्हें तुम्हारे दिखावे से जानती है और दिखावा कितना भी अच्छा हो, खुदा तुम्हे तुम्हारी नियत से जानता है। इसलिए समझौता करना सीखो क्योंकि थोड़ा सा झुक जाना किसी रिश्ते को हमेशा के लिए तोड़ देने से बेहतर हैं अगर आपके पास देने के लिए कुछ भी नहीं है तो अपने होठों पर एक मुस्कुराहट ही सजा लो, यकीन रखो कि आपका ये तोहफा हर शय से कीमती होगा। दो चेहरे इंसान को कभी नहीं भूलते। एक तो मुश्किल में साथ देने वाला, एक मुश्किल में साथ छोड़ने वाला, कोई तुम्हारा दिल दुखाये नाराज़ मत होना क्योंकि लोग पत्थर भी उसी पेड़ पर मारते हैं जिसका फल सबसे मीठा होता है। रिश्तों की खूबसूरती एक-दूसरे की बात को बर्दाश्त करने में है। बे-ऐब इंसान तलाश करोगे तो अकेले रह जाओगे। किसी की मदद करते वक्त उसकी चेहरे की ओर मत देखो। हो सकता है उसकी शर्मिंदा आँखें आपके दिल में गुरूर का बीज बो दें। कभी किसी का दिल मत दुखाओ वरता तो उसे माफ़ी माँगने के बावजूद दु:ख ज़रूर रहेगा जैसे दीवार में लगी कील को निकाल देने के बावजूद निशान रह जाता है। कोशिश करो कि ज़िन्दगी का हर लम्हा सबके साथ अच्छे से अच्छा गुज़रे क्योंकि ज़िन्दगी नहीं रहती। अच्छी यादें हमेशा जिन्दा रहती हैं कोई अगर अच्छी बात कहे तो उसे पल्लू से बाँध लो क्योंकि जब किसी मोती की कीमत मालूम की जाती है तो वो नहीं देखता कि उसे समुन्दर से निकालने वाला कौन है। आसमान में उड़ने वाले परिन्दे से किसी ने पूछा कि तुम्हें गिरने का डर नहीं है, तो उसने मुस्कुराकर जवाब दिया कि मैं इंसान नहीं जो छोटी सी बुलन्दी पर अकड़ जाऊँ। नज़रे मेरी हमेशा ज़मीन पर रहती है। दोस्तों इंसान भी क्या चीज़ है। दौलत पाने के लिए सेहत खो देता है और फिर सेहत पाने के लिए दौलत खो देता है। और जीता ऐसे है जैसे कभी मरेगा नहीं। फिर मर ऐसे जाता है जैसे कभी जिया ही नहीं। बुराई की मिसाल ऐसी है जैसे पहाड़ से नीचे उतरना एक कदम उठाओ तो बाकी उठते चले जाते हैं। और अच्छाई की मिसाल ऐसी है, जैसे पहाड़ पर ऊपर चढ़ना हर कदम पिछले हर कदम से ज़्यादा मुश्किल है। मगर हर कदम पर बुलंदी मिलती है। रिश्ते कभी अपनी मौत नहीं मरते, उन्हें इंसान ही कत्ल करता है, कभी गलतफहमी से कभी नज़र अंदाज़ी से। आँख दुनिया की हर एक चीज़ को देखती है। लेकिन जब आँख में कुछ चला जाए तो उसे नहीं देख पाती। इसी तरह दुनिया दूसरों के ऐब तो देखती हूँ मगर अपने ऐब उसे नज़र नहीं आते। कभी कोई फैसला गुस्से की हालत में न करो क्योंकि उबलते हुए पानी में अंकुर दिखाई नहीं देता। माफ करने की आदत और हौंसला पैदा करो। ये तो अल्लाह का करम है कि उसने तुम्हारे गुनाहों की पर्दापोशी की। अगर तुम्हारे दरमियाँ एक दूसरे के गुनाह ज़ाहिर हो जाते तो तुम एक दूसरे को दफन भी न कर पाते।

सच सुनने से न जाने क्यों कतराते हैं लोग। तारीफ़ कितनी भी छोटी हो, सुनकर बड़े मुस्कुराते हैं लोग।

नीति वचन

विशाखा शर्मा
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

जीवन में एक बार जो फैसला कर लो फिर पीछे मुड़कर मत देखना क्योंकि पीछे मुड़कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते।

जीत हासिल करनी है तो काबलियत बढ़ाओ किस्मत की रोटी तो कुत्ते को भी नसीब होती है।

अनुभव यह नहीं कि जो मनुष्य के साथ घटता है बल्कि इस घटे हुए पर हमारी क्या प्रतिक्रिया होती है यह अनुभव है।

चुनौतियों को स्वीकार करें क्योंकि इससे या तो सफलता मिलेगी या शिक्षा।

जब दिमाग कमज़ोर है परिस्थितियाँ समस्या बन जाती हैं जब दिमाग स्थिर है परिस्थितियाँ अवसर बन जाती हैं।

बुद्धिमान काम करने से पहले सोचता है और मूर्ख काम करने के बाद।

जब हम कठिन परिस्थितियों से गुज़र रहे होते हैं और ईश्वर को मौन पाते हैं तो हमें याद रखना चाहिए कि परीक्षा के समय शिक्षक सदैव मौन रहते हैं।

गलती हर मनुष्य करता है परन्तु उन पर दृढ़ केवल मूर्ख ही होते हैं।

हर मित्रता के पीछे कोई न कोई स्वार्थ छिपा होता है, ऐसी कोई भी मित्रता नहीं जिसके पीछे स्वार्थ न छिपा हो, यह जीवन का कड़वा सच है।

दूसरों की गलतियों से सीखो अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने से तुम्हारी आयु कम पड़ेगी।

सफलता को सर पर चढ़ने न दें और असफलता को दिल में उतरने न दें।

दूसरों की अपेक्षा अगर आपको सफलता यदि देर से मिले तो निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि मकान बनने से ज़्यादा समय महल बनने में लगता है।

अधिक सीधा-साधा होना भी अच्छा नहीं होता है एक बार जंगल में जा कर तो देखो वहाँ पर सीधे वृक्ष काट लिए जाते हैं और टेढ़े वृक्ष खड़े रहते हैं।

जब तक तुम दौड़ने का साहस नहीं जुटाओगे तुम्हारे लिए प्रतिस्पर्धा में जीतना असंभव बना रहेगा।

हर विद्यार्थी को चाहिए कि वह काम, स्वाद, लोभ, मोह, खेल-कूद, अधिक सोना, श्रृंगार, घूमना-फिरना, क्रोध इन सबका त्याग कर दे तभी वह अपनी शिक्षा को सार्थक कर पाएगा।

किसी भी काम के बिगड़ने का भय नहीं करना चाहिए क्योंकि दूध फटने का भय उन्हीं को होता है जिसे उससे पनीर बनाना न आता हो।

कोई भी काम करने से पहले यह तीन प्रश्न अपने से अवश्य पूछें-

मैं यह काम क्यों कर रहा हूँ?

इसका परिणाम क्या होगा?

क्या मैं सफल हो पाऊँगा?

तभी आप उस काम के बारे में गंभीरता से सोच सकेंगे।

जो अकेले चलता है वह तेज़ चलता है।

एक बुरे मित्र पर तो कभी विश्वास न करें। एक अच्छे मित्र पर भी कभी विश्वास न करें क्योंकि यदि ऐसे लोग आपसे रूष्ट होते हैं तो वह आपके सभी राज़ से पर्दा खोल देते हैं।

सबसे पहले शुद्ध मन से सोच विचार करें फिर बिना किसी से बताए उस सोचे हुए कार्य को काम में परिवर्तित कर दें क्योंकि किसी से काम करने से पहले सलाह लेना आपकी सफलता पर प्रश्न चिह्न लगाने जैसा होगा।

कोई भी काम करने से पहले ज्ञानी लोग उस काम से अपने लाभ के बारे में सोचते हैं और मूर्ख लोग नुकसान के बारे में।

भारत में जातिवाद व रंगभेद

नावेद आसिफ
प्रयोगशाला सहायक, भूगोल विभाग

नि:सन्देह भारतीय समाज विभिन्नताओं का देश रहा है जिसमें हम करीब 6 हजार जातियाँ, 65 हजार उपजातियों में बँटे हुए हैं। सामाजिक विभाजन का यह अंत यही पर नहीं होता बल्कि यह गोत्र जैसी मान्यताओं तक जाता है। आजादी के इतने दिन बीत जाने के बाद भले ही सर्वांगीण प्रगति न हुई लेकिन सोच के स्तर पर बुनियाद कमजोर हो तो वाकई चिंता की बात है। किसी भी देश या समाज का विकास वहाँ के लोगों की सोच पर निर्भर करता है। यदि हमारी सोच प्रतिक्रिया वादी है, तो भविष्य में भी आसान नहीं लगता कि हम किसी मुकाम पर पहुँच पायेंगे। सबसे ज्यादा चिंता का विषय वे लोग हैं जो शिक्षित होकर भी जाति की मानसिकता से ऊपर नहीं उठ पाये हैं भले ही ज्यादातर राजनीतिक दल जाति के आधार पर ध्रुवीकरण को नकारते हो लेकिन हकीकत यह भी है कि इस फार्मूले के बल पर ही वे अपने अस्तित्व को बचाये हुए हैं। आज का भारत दुनिया का सबसे अधिक भेदभाव वाला देश बन चुका है और यह भेदभाव जाति पर ही नहीं बल्कि उस से आगे वर्ण व रंग तक जाता है।आज के समाचार पत्र वैवाहिक विज्ञापनों से अटे मिल जायेंगे जहाँ सुन्दर, सुशील, गौरी कन्या से विवाह की माँग की जाती है। यदि परिवार में लड़की का रंग सांवला हो तो आप समझ लीजिए कि आपको अपने आप से अधिक संसाधन जुटाने पड़ेंगे। मतलब साफ है कि इस प्रगतिशील दौर में हम जातिवाद के ही शिकार नहीं है, बल्कि रंगभेद की मानसिकता से भी ग्रस्त हैं। आजादी के इतने दिन बीत गये, हम दुनिया का सबसे बड़ा कलंक माथे पर ढो रहे हैं।

आखिर दुनिया का कौन सा ऐसा समाज है जहाँ इंसान दुनिया में दूसरों का मलमूत्र अपने सर पर ढो रहा हो? आखिर ये कैसी आजादी है? यदि इस जाहिल समाज को इसके स्वयं के भरोसे पर छोड़ा जाता है, तो समस्या और भी पेचीदा हो जाती है। कबीर, गुरूनानक, दादू दयाल और शंकराचार्य की न जाने कितनी पीढ़ियाँ हुई हैं जो भारतीय समाज को जातिवाद के साँचे से निकालने के लिए जद्दोजहद करते-करते इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह गयी हैं, लेकिन भारतीय समाज अपनी पुरातनपंथी सोच के शिकंजों से बाहर नहीं निकल पाया है। इस व्यवस्था को तोड़कर एक नई व्यवस्था को लागू करने के लिए हमें ऐसा साहस पूर्ण कदम उठाना होगा जैसा कि चीन में ही हुआ है।

हमारे यहाँ यदि जातीय व्यवस्था सबसे बड़ी अभिशाप रही है, तो चीन की सड़ी-गली व्यवस्था ने समाज को हमेशा पीछे धकेलने का काम किया था। इस बात को यहाँ की सरकार ने समझते हुए सांस्कृतिक व्यवस्था का आह्वान किया था, और यह कार्य सरकार ने अपने बल बूते पर किया था न कि इसे समाज के ऊपर छोड़ा। अतीत के अनुभव से दावे के साथ कहा जा सकता है कि भारतीय समाज अपने बलबूते पर जातिवाद या रंगभेद के लौह आवरण से बाहर नहीं निकल पायेगा, और जब तक ऐसा नहीं हो पायेगा तब तक महिला-सशक्तिकरण और समतावादी बातें यूटोपिया (काल्पनिक) धारणा ही समझी जायेंगी।

हिन्दी है देश की धड़कन

फरमान अली
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

हमारा अभिमान है हिन्दी, भारत की शान है हिन्दी- एक बच्चा सर्वप्रथम भाषा का ज्ञान अपने माता-पिता द्वारा बोले गए प्यार भरे शब्दों से ही सीखता है। हिन्दी हिन्दुस्तान की भाषा है। यह भाषा है, हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है।

हिन्दी का महत्त्व- हिन्दी हिन्दुस्तान को बाँधती है। गाँधी जी ने हिन्दी को 'जनमानस' की भाषा कहा था। वहीं दूसरी तरफ इसी हिन्दी को आमीर खुसरो ने खड़ी बोली के माध्यम से लोगों तक अपनी भावना पहुँचाने का प्रयत्न किया जिसमें वह सफल हुए।

लेकिन यह दुर्भाग्य से कम नहीं कि जिस भाषा को हज़ारों लेखकों ने अपनी कर्मभूमि बनाया, जिसे कई स्वतंत्रता सेनानियों ने भी देश की शान बताया वह आज तक अपना असली मुकाम हासिल नहीं कर पायी है।

कुछ तथाकथित राष्ट्रवादियों की वजह से हिन्दी को आज उसका सम्मान नहीं मिल सका, जिसकी उसे ज़रूरत थी। संविधान ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा घोषित किया था। भारतीय संविधान के भाग 17 के अध्याय की धारा 343 (1) में वर्णित है कि संघ की राजभाषा हिन्दी, और संघ की लिपि 'देवनागरी' होगी।

इसके बाद साल 1953 में हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुरोध पर सन् 1953 से सम्पूर्ण भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है
मात्र एक भाषा नहीं।

आज़ादी में हिन्दी का योगदान- आज़ादी की लड़ाई में भी हिन्दी ने विशेष भूमिका निभाई। एक ओर रविन्द्र नाथ टैगोर ने बांग्ला भाषा का ज्ञान होते हुए भी हिन्दी को चुना तो वहीं देश के क्रान्तिकारियों ने जनमानस से सम्पर्क साधने के लिए इसी भाषा का प्रयोग किया। उपरोक्त सभी बातें जहाँ हिन्दी के गौरवपूर्ण इतिहास पर प्रकाश डालती है, तो वहीं हिन्दी के बर्बादी के कारणों को भी समान रूप से उभारती है। लेकिन ऐसा नहीं है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा की उपाधि नहीं मिल सकती। यदि अगर आज भी पूरा भारत मिलकर प्रयत्न करे तो संविधान में उसे यह स्थान प्राप्त हो सकता है। तो चलिए आज की लहर की शुरूआत करें। अपनी मातृभाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए

"जय हिन्द जय हिन्दी"

शिक्षा का महत्व

मौ. अब्दुल रहमान
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

शिक्षा वर्तमान समाज की आवश्यकता नहीं वरन् ज़रूरत है। शिक्षा के द्वारा देश के कौशलात्मक उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ समाज की मानसिक स्थिति सामाजिक स्थिति तथा आर्थिक स्थिति में वृद्धि करती है।

शिक्षा सभी के जीवन आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा आत्म विश्वास विकसित करती है। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में मदद करती है।

शिक्षा सभी के जीवन में महान भूमिका निभाती है। इस प्रतियोगी संसार में सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। शिक्षा का महत्त्व नौकरी और अच्छा पद प्राप्त करने के लिए बहुत बढ़ गया है। शिक्षा भविष्य में आगे बढ़ने के लिए बहुत से रास्तों का निर्माण करती है। शिक्षा हमारे ज्ञान-स्तर तकनीकी कौशल और नौकरी में किसी पद को प्राप्त करने के साथ-साथ हमें सामाजिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से मजबूत बनाती है।

उदाहरण के माध्यम से- कुछ माता-पिता भी अपने बच्चों को बड़ा होकर डॉक्टर, आईएएस, इन्जीनियर, अधिकारी या अन्य उच्च पदों पर देखना चाहते हैं।

सभी सपनों को पूरा करने का एक ही रास्ता है-शिक्षा।

माँ की अभिलाषा

(बीता समय वापस नहीं आता)

आशीष चौहान
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

एक औरत थी जो अँधी थी। वह एक विधवा थी। उसका एक बेटा था वह बहुत गरीब थी, वह अपने बेटे का पालन-पोषण दूसरों के घर जाकर बर्तन साफ करके करती थी। वह प्रतिदिन अपने बेटे को स्कूल छोड़ने जाती थी। जब वह बच्चा धीरे-धीरे बड़ा होता गया, वैसे-वैसे वह अपनी माँ को अपने साथ बाहर निकलने से शर्माता था। उसे हिचकिचाहट महसूस होती थी क्योंकि बाहर बच्चे उसको अँधी का बेटा कहकर उसका मज़ाक बनाते थे। कुछ दिनों बाद जैसे वह लड़का बड़ा हुआ तो वह नौकरी के लिए शहर चला गया लेकिन वह कभी लौटकर नहीं आया। उसकी माँ गाँव में अपने बेटे के बिना बहुत परेशान हुई। उसने चार पाँच दिन तक न तो कुछ खाया और न ही कुछ पिया। कुछ दिनों बाद उस बूढ़ी माँ को गाँव का कोई आदमी उसे शहर लेकर गया और उस आदमी को उसके बेटे का घर पता चल गया तो जैसे ही वह उसके बेटे के घर गए तो बेटे ने उन्हें पहचानने से इंकार कर दिया, लेकिन जैसे ही माँ ने उसके शरीर को स्पर्श किया और उसके माथे को चूमा वह चुपचाप वहाँ से चली गई। बहुत देर बाद जब वह लड़का बाहर बाज़ार में गया तो उसे एक लाश नज़र आई जो उसकी माँ की थी। उसके हाथ में एक कागज़ था जिसमें खिा था कि छोटे बचपन में जब तुम खेल रहे थे तो तुम्हारी आँख खराब हो गई थी और मैंने तुझे अपनी आँख दे दी थी। यह देखकर वह बहुत रोया।

आपकी वाणी आपका व्यक्तित्व

प्राची नायक
बी.एससी.-तृतीय वर्ष

कबीर कहते हैं....

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय॥

मन और अहंकार का त्याग कर, ऐसी वाणी में बात करें कि औरों के साथ-साथ स्वयं को भी खुशी मिले अर्थात् मीठी वाणी से ही दिल जीते जाते हैं। इंसान की वाणी से ही उसकी पहचान बनती है। वह जो बोलता है, वही उसकी सोच है और उसी से उसके विचार दूसरों तक पहुँचते हैं। इसलिए जो भी बोलना हो, उसे तोलकर बोलना चाहिए क्योंकि एक बार यदि शब्द आपके मुँह से निकल गए, तो वे कभी वापस नहीं आएंगे। अपनी बात कहते के लिए आप जिन शब्दों का सहारा ले रहे हैं, उन्हें नाप-तोलकर ही दूसरों तक पहुँचायें। यदि आपको यह ध्यान रखना होगा कि अपने विचार व्यक्त करने के लिए आप किन शब्दों का सहारा ले रहे हैं इसी से आपकी काबिलियत और आत्म विश्वास का पता चलता है। हर इंसान की ज़िन्दगी दो तरह से चलती है। एक घर और दूसरी ऑफिस में। घर में तो उसके विचारों को सुनने और मानने वाले लगभग सभी होते हैं। उसके विचारों की कद्र होती है लेकिन ऑफिस में ज़रूरी नहीं कि सभी आपके विचारों से सहमत हो, इसलिए व्यक्ति के विचार बहुत मायने रखते हैं। इन विचारों को आप किन शब्दों में व्यक्त कर रही है, उस पर आपके करियर की सफलता निर्भर करती है। सारा खेल शब्दों का है। आपकी 'बोली' ही आपके मन का पता बता देती है कि आपका स्वभाव कैसा है। आप किस चरित्र के व्यक्ति हैं। रही बात प्रोफेशनल लाइफ की तो, प्रोफेशनल लाइफ में आपके शब्द आपको लीडर भी बना सकते हैं और अगर शब्द कमज़ोर पड़ गए तो आप पिछड़ भी सकते हैं।

सड़क दुर्घटनाएं

मोनू
एम.ए. (योगाचार्य)- तृतीय वर्ष

सड़क पर होने वाली दुर्घटनाएं सड़क दुर्घटनाएं कहलाती हैं। यह अक्सर चालक की लापरवाही का परिणाम होती है। वाहन चलाते समय या लोगों के सड़क पार करते समय अक्सर दुर्घटना होती है। यह जानलेवा भी होती है और कभी-कभी तो पूरा परिवार तक नष्ट हो जाता है। आए दिन हमें समाचार चैनलों में, अखबार में ऐसी खबरें मिलती है। जो बहुत आम बात हो गई है। यह दुर्घटनाएं दिखाती हैं कि कैसे लोगों द्वारा यातायात के नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है। छोटे-छोटे बच्चे बिना लाइसेंस के स्कूटी चला रहे हैं। जिन्हें उनके माता-पिता पहले से ही स्कूटी चलाना सिखा देते हैं।

युवा पीढ़ी तो वाहन चलाते-चलाते कानों में वायर लगाकर गाने सुनते हुए, बड़े मस्त मगन होकर वाहन चलानी है जिसकी वजह से दुर्घटना होती है। जिन्दगी ईश्वर की दी हुई अमूल्य सौगात है।

नई पीढ़ी और स्मार्ट फोन

अक्षमा चौधरी
एम.ए. (योगाचार्य)- प्रथम वर्ष

किसी राष्ट्र की युवा पीढ़ी उस देश की कर्णधार होती है। परन्तु वर्तमान में भारत में युवाओं की स्थिति शोचनीय है। पाश्चात्त्य सभ्यता के प्रभाव में भारतीय युवा अपनी सनातन संस्कृति से विमुख होता जा रहा है। उसमें नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। विलासिता की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आज बच्चें अपने माता-पिता के साथ समय न बिताकर विभिन्न प्रकार के गेजेट के मोह में फँसते जा रहा है। स्मार्टफोन के साथ ज़्यादा समय बिताने की वजह से आज की युवा पीढ़ी भ्रमित हो रही है।

आज स्मार्टफोन में ऐसी-ऐसी चीज़ें आ गई हैं कि अगर एक ही पर काम करें तो सुबह से लेकर शाम हो जाए तो फिर अपने-अपने में ही समय बीत जाता है और बच्चे अपने माँ-बाप को समय ही नहीं दे पाते। पूर-पूरे दिन बच्चे फेसबुक, वॉट्सअप, ट्विटर आदि पर लगे रहते हैं। यहाँ तक की रात-रात तक जिसका प्रभाव उनकी पढ़ाई पर पड़ता है।

पहले बच्चों को अपने दादा-दादी से प्यार मिला लेकिन आज तो दादी-दादा तो बहुत दूर की बात है, बच्चे अपने माता-पिता को ही समय नहीं दे पाते क्योंकि उन्हें स्मार्टफोन से फुर्सत ही नहीं मिलती। पूरे दिन स्मार्टफोन में गेम्स, पिक्चर, मैसेज आदि कार्य करते हैं।

विश्वास खरीदा नहीं जा सकता

समता चौहान
बी.ए.-प्रथम वर्ष

सुप्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का कथन है कि विश्वास को क्रय नहीं किया जा सकता क्योंकि विश्वास क्रय-विक्रय की वस्तु नहीं, इसके लिए हमें कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती। विश्वास तो मन में जन्म लेता है इसलिए कहा जा सकता है कि मन का मान लेना या मन का टिक जाना ही विश्वास है। दरअसल आज के संसार में मन का टिकना बहुत मुश्किल है और मन को मना लेना, उससे भी मुश्किल। मन कब मानता है?

जब उसके भीतर से आवाज़ उठती है कि हाँ मुझे जो चाहिए था, वो यही है, यही है, यही है। दूसरी तरफ किसी वस्तु की प्राप्ति भी विश्वास पर टिकी है विश्वास नहीं तो प्राप्ति नहीं, विश्वास नहीं तो सफलता नहीं। इस प्रकार कहीं पहले विश्वास हो कहीं बात में विश्वास हमारे जीवन को घेरे रहता है।

स्वामी विवेकानंद ने युवा पीढ़ी को विश्वास भरी ऊर्जा प्रदान की कि-जब तक तुम स्वयं अपने में विश्वास नहीं रखते, परमात्मा में तुम विश्वास नहीं कर सकते। पश्चिम के दार्शनिक संत अरस्तु ने भी कहा कि किसी मनुष्य का स्वभाव उसे विश्वसनीय बनाता है, न कि उसकी सम्पत्ति। शेक्सपियर कहते हैं कि निष्कपट और सरल विश्वास में छल नहीं होता, तो दूसरी ओर यह कहने में भी गुरेज़ नहीं करते कि जिसने एक बार विश्वास भंग किया, उस पर दोबारा विश्वास मत करो, अर्थात् मानव एक बार विश्वास खो देता है, विश्वास से ही विश्वास का जन्म होता है।

पलक झपकते ही निकालें वर्ग

शहाना
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

परीक्षा के समय हमें वर्ग निकालने में बहुत समय लग जाता है, इसलिए आपको वर्ग निकालने के कुछ आसान तरीके बता रही हूँ।

1. सबसे पहले अगर आपके पास इकाई अंक 5 है तो पहले आप इकाई का वर्ग करेंगे और फिर दहाई अंक का वर्ग करेंगे और उसके दहाई अंक को जोड़ देंगे। इस प्रकार आप बहुत ही जल्दी वर्ग निकाल सकेंगे। जैसे

(25)2= 625

पहले हमने 5 का वर्ग (25) लिखा। फिर 2 के वर्ग (4) में 2 को जोड़ दिया।

(35)2= 1225

पहले हमने 5 का वर्ग (25) लिखा। फिर 3 के वर्ग (9) में 3 को जोड़ दिया।

(45)2= 2025

2. अब जिनका इकाई अंक 5 को छोड़कर कुछ भी है, उसका वर्ग निकालेंगे।

सबसे पहले इकाई अंक का वर्ग करेंगे। अगर यह एक अंक है तो इसके बाई तरफ 0 लगाकर लिखेंगे फिर दहाई अंक का वर्ग करेंगे यदि यह भी एक अंक आता है तो इसके भी बाई तरफ 0 लगाकर लिखेंगे। अब (इकाई अंक x दहाई अंक) का दुगुना कर देंगे तथा दोनों के वर्ग के बीच में जोड़ देंगे।

जैसे- (32)2= (3)2 09 04 (2)2 (3 x 2) x 2

1 2

10 24

2. (22)2= (2)2 04 04 (2)2 (2 x 2) x 2

0 8

4 84

3.(36)2= (3)2 09 36 (6)2 (3 x 6) x 2

3 6

12 96

3. अब 101, 102, 103 आदि का वर्ग निकालना सीखेंगे। सबसे पहले इकाई अंक का वर्ग करेंगे। यदि यह एक अंक है तो इसके बाई तरफ 0 लगा देंगे। फिर पूरी संख्या में इकाई अंक जोड़ देंगे।

जैसे

(101)2	101 +1	102 01 (1)2
(102)2	102 + 2	104 04 (2)2
(103)2	103 + 3	106 09 (3)2

गिलहरी धन्य हो गई

साक्षी
बी.लिब.

सेतु-बांध का कार्य चल रहा था। श्री राम को देर तक एक ही दिशा में देखते देखकर लक्ष्मण ने पूछा, "क्या देख रहे हैं तात्?"

राम ने तर्जनी से इंगित करते हुए कहा- "देखो वहाँ क्या हो रहा है।" लक्ष्मण ने देखा, एक गिलहरी बार-बार समुद्र में डुबकी लगाती है और फिर दौड़कर सूखी-बालू में लोट-पोट कर शरीर पर चिपके कणों को सेतु निर्माण स्थल पर ले जाकर झाड़ देती है। लक्ष्मण बोल उठे "हे प्रभो! वह सागर स्नान और बालू क्रीड़ा का आनन्द ले रही है।"

"नहीं लक्ष्मण! ऐसा नहीं है। उसके भाव का तुम अध्ययन नहीं कर सके। चलो, निकट चलकर उससे ही पूछें।"

दोनों निकट गए। राम ने पूछा- "भद्रे! क्या कर रही हो?" कुछ भी तो नहीं प्रभो! इस पुण्य कार्य में मेरा भी न्यूनाधिक योगदान हो, यह मानकर यथा सम्भव कुछ कर रही हूँ। कहकर गिलहरी पुनः सागर की ओर मुड़ी। उसे टोकते हुए राम बोले, "लेकिन तुम्हारे सौ-पचास कण डालने से क्या होगा?"

"सत्य है, प्रभो! इस पुण्य-कार्य में मैं सृष्टि की दीन-हीन प्राणी होने के कारण कर ही क्या सकती हूँ। मेरे द्वारा किए गए कार्य का मूल्यांकन भी क्या होगा? पर मैं किसी आकांक्षा से नहीं कर रही। यह तो राष्ट्र का कार्य है। योग्यता, क्षमता के अनुसार प्रत्येक प्राणी को जितना वह कर सके निःस्वार्थ भाव से करना चाहिए। मेरा यह कार्य आत्म-संतुष्टि के लिए है देव। हाँ बड़े लोगों के समान सहयोग न कर पाने का मुझे खेद अवश्य है।"

राम भावविभोर हो उठे। उसे हथली में लेकर उसके शरीर पर अपने हाथ फेरने लगे। गिलहरी धन्य हो गई।

तितली का संघर्ष

मौ. सोबान
बी.एससी.-तृतीय वर्ष

एक बार एक आदमी को अपने बगीचे में घूमते हुए एक टहनी से लटकता हुआ तितली का एक कोकून दिखाई पड़ा। अब हर रोज़ वह आदमी उस कोकून को देखने लगा। एक दिन उसने नोटिस किया कि उस कोकून में एक छेटा सो छेद बन रहा था। उस दिन वह वहीं बैठ गया और घण्टों तक उस कोकून को देखता रहा। उसने देखा कि उस कोकून में मौजूद तितली उससे निकलने का कठिन प्रयास कर रही है। लेकिन घण्टों प्रयास करने के बाद भी वह उस छेद से बाहर नहीं निकल पाई। कुछ समय बाद वह तितली बिल्कुल शान्त हो गई मानो उसने हार मान ली हो।

इस सब को देखकर उस आदमी को इतना बुरा लगा कि उसने कुछ न सोचते हुए एक कैंची उठाई और कोमून के मुँह हो बड़ा कर दिया जिससे तितली आराम से कोकून से बाहर निकल गई। फिर वह आदमी उस तितली की पहली उड़ान देखने के लिए वहीं बैठ गया। परन्तु ऐसा कुछ न हुआ, बजाय इसके कि वह उड़े वह अपना जीवन अपने आप को घसीटते हुए बिताने लगी क्योंकि अभी भी उसका शरीर सूजा हुआ था एवं पंख गीले थे।

वह आदमी अपनी दया एवं जल्दबाज़ी में यह नहीं समझ पाया कि दरअसल कोकून से निकलने की इस प्रक्रिया को प्रकृति ने इतना कठिन इसलिए बनाया है ताकि ऐसा करने से तितली के शरीर में मौजूद तरल तिल्ली के पंखों तक पहुँच सके और वह कोकून से निकलते ही उड़ सके।

शिक्षा- वास्तव में हमारे जीवन में कभी-कभी संघर्ष ही वह चीज़ होती है जिसकी हमें सचमुच आवश्यकता होती है। यदि हमें बिना संघर्ष के सब कुछ मिल जाए जो हम भी एक अपंग की भांति जीना आरम्भ कर देंगे।

सफलता के लिए

सत्तार
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

तू ज़िन्दा है, तो ज़िन्दगी की जीत पर यक़ीन कर।
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर॥

जीत पर यक़ीन वही करता है जो आत्म विश्वास से परिपूर्ण हो, जिसमें जीने की उमंग, उत्साह हो, जो जीवन को उत्सव मानकर सेलिब्रेट करने में विश्वास रखता हो। छल-कपट से अभी किसी का भला नहीं हुआ। छल-कपट करके पैसा कमाया जा सकता है, मगर इज़्ज़त और अच्छी रेप्युटेशन नहीं, इसलिए विश्वसनीय बनें। लोगों को टालने की बुरी आदत से बचें। समय-समय पर आत्म-विश्लेषण करें। अपनी कार्य क्षमता और योग्यता का सही मूल्यांकन करते हुए जीवन में अपना लक्ष्य तय करें। यह काम आपको स्वयं करना है, अपने को तौलने के बाद। वक्त कम है और करने को बहुत कुछ, इसलिए वक्त की महत्ता को समझते हुए टाईम मैनेजमेन्ट फॉलो करें।

जीवन में कभी न कभी ऐसा वक्त आता है, जब बोरियत आपको गिरफ्त में लेने को तैयार रहती है। उससे मुकाबला करें तो शस्त्रों के साथ। ये शस्त्र आपके अपने बनाये होंगे। आपकी हॉबीज़, क्रिएटिविटी, ज़िंदादिली और जीवन से शिद्दत से लगाव उसकी वैल्यू की समझ। हर व्यक्ति असरदार बनना चाहता है। सम्पूर्णता की ओर अग्रसर होना चाहता है। योग्य से योग्यतम बनना चाहता है। इसके लिए ज़रूरी है कि वह प्रयत्नशील होकर उस पर निरन्तर काम करें। सपने देखना अच्छा है। यह समय की बर्बादी नहीं, क्योंकि सपने देखकर ही फिर उन्हें पूरा किया जाता है।

आपकी सेहत आपकी सबसे बड़ी दौलत है। स्वास्थ्य का अच्छा होना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। उसके लिए एक्सरसाईज़ और बैलेंस्ड डायट महत्त्वपूर्ण है। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूकता होनी चाहिए। मेडिटेशन, प्रार्थना और आस्था से मानसिक शान्ति मिलती है। सफल लोगों की जीवनी बहुत प्रेरित करती है, ये ज़रूर पढ़ें।

"प्रेम सबसे करो, विश्वास कुछ पर करो, पर बुरा किसी का भी नहीं"।

वीरांगना झाँसी की रानी

मल्लिका हसन
बी.कॉम-द्वितीय वर्ष

भारतीय वसुंधरा को गौरवान्वित करने वाली झाँसी की रानी वीरांगना लक्ष्मी बाई वास्तविक अर्थ में आदर्श वीरांगना थीं। सच्चा वीर कभी आपत्तियों से नहीं घबराता है। प्रलोभन उसे कर्तव्य पालन से विमुख नहीं कर सकते। उसका लक्ष्य उदार और उच्च होता है। उसका चरित्र अनुकरणीय होता है। अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह सदैव आत्मविश्वासी, कर्तव्य परायण, स्वाभिमानी और धर्मनिष्ठ होता है। ऐसी ही थी वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई।

रानी लक्ष्मी बाई का जन्म काशी में 19 नवम्बर 1835 को हुआ। इनके पिता मोरोपंत ताम्बे चिकनाजी अप्पा के आश्रित थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। महारानी के पितामह बलवंत राव के बाजीराव पेशवा की सेना में सेना नायक होने के कारण मोरापंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी। लक्ष्मीबाई अपने बाल्याकाल में मनुबाई के नाम से जानी जाती थीं। सन् 1850 में उनको पुत्र प्राप्ति हुई लेकिन चार माह बाद ही 1851 को उनके पुत्र का निधन हो गया। राजा गंगाधर राव को इतना गहरा धक्का लगा कि वे भी चल बसे। तब रानी की आयु मात्र 21 वर्ष थी। 1853 परन्तु रानी ने अपना धैर्य नहीं खोया बालक दामोदर 18 की आयु कम होने के कारण राज-काज का उत्तरदायी स्वयं पर ले लिया उस समय लॉर्ड डलहौजी गवर्नर थे।

उस समय यह नियम था कि शासन का उत्तराधिकार तब होगा, जब राजा का स्वयं का पुत्र हो, यदि पुत्र न हो तो उसका राज्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी मिल जाएगा और राज्य परिवार खर्चों हेतु पेंशन दी जायेगी। पर रानी को ये स्वीकार न हुआ। उसने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ मुकदमा दायर किया पर उसे खारिज कर दिया गया और

महारानी को किला खाली कर रानी महल जाकर रहे इसके लिए उन्हें रूपए 60,000/- की पेंशन दी जाएगी परन्तु रानी लक्ष्मीबाई झाँसी को न देने के फैसले पर अडिग थी। वे अपनी झाँसी को सुरक्षित करना चाहती थी जिसके लिए उन्होंने सेना संगठन प्रारम्भ कर संघर्ष किया।

अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया
न छोड़ी राजधानी थी
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

भारतीय काव्य शास्त्र में रस का महत्व

डॉ. मीरा चौरसिया
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्य दर्पण' में काव्य को परिभाषित किया है- 'वाक्य रसात्मक काव्यम' अर्थात रसात्मक वाक्य ही काव्य है, काव्य के आस्वाद को ही रस कहा जाता है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि किसी काव्य को पढ़ने या सुनने में या नाटक को देखने से पाठक, श्रोता या दर्शक आदि को जो असाधारण और आनन्द की प्राप्ति होती है, उसे 'रस' कहते है।

जब हम कभी रस का अर्थ ग्रहण करते हैं, जीवन के सामान्य प्रसंगों में तो प्राय: इसका अर्थ होता है। अगर कहा जाये तो सांमरस के रूप में भी 'रस' का प्रयोग हुआ है, किन्तु इसका प्रयोग आनन्द के रूप में भी हुआ है। वह चाहे अलौकिक आनन्द हो या आध्यात्मिक आनन्द। साहित्य शास्त्र में रस के बारे में ऊपर कथन दिया गया है। भरत मुनि का एवं आचार्य विश्वनाथ का, रस को काव्य की आत्मा कहा गया है। इसे कुछ इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता हे कि किसी कविता, कहानी, उपन्यास आदि को पढ़ने सुनने अथवा नाटकादि आदि के पढ़ने-सुनने से पाठक, श्रोता अथवा दर्शक को जिस चमत्कारपूर्ण असाधारण आनन्द की प्राप्ति होती है, उसे ही रस कहते हैं।

भरत मुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ में रस की विवेचना इस प्रकार की है - 'विभावानुभाव व्यवभिचारि संयोगद्वसनिष्पति' अर्थात विभाव, अनुभाव और व्यमिचारी भावों का संयोग से रस की निष्पति होती है। इसी प्रकार आचार्य विश्वनाथ ने चार प्रकार के भावों का उल्लेख किया है और कहा- 'विभावानुभावन व्यक्त संचारिणा तथा रसतामेतिरव्यातिद: स्थायी भाव: सचेतसाग'। अर्थात सहृदयों के हृदय का स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव का संयोग प्राप्त कर लेता है, तो रस-रूप में निष्पन्न हो जाता है। स्थायी भाव नौ माने जाते है- रति, हास, शोक, उत्साह, क्रोध, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद। इन्हीं स्थायी भाव से नौ रस की निष्पत्ति मानी जाती है। कालान्तर में 'वत्सल' एवं 'मधुर अथवा भक्ति' नामक स्थायी भाव भी माने गये हैं।

विभाव के दो भेद होते हैं, आलम्बन और उद्दीपन आलम्बन विभाग के कारण है, जैसे नाटकादि के वे पात्र जिन्हें देखकर अथवा पढ़कर किसी के हृदय में रति आदि स्थायी भाव रस-रूप में अभिव्यक्त होते हैं। उद्दीपन विभाग स्थायी भावों को उदीप्त करके आस्वादन योग बनाते हैं, जैसे वीर रस के स्थायी भाव उत्साह के साथ सामने खड़ा शत्रु आलम्बन विभाव है जबकि उसकी सेना, गर्जना आदि उद्दीपन विभाव है।

अनुभाव- रति आदि स्थायी भावों को व्यक्त करने वाली आश्रय की चेष्टायें अनुभाव कहलाती है, ये चेष्टाएं भाव जागृति के उपरान्त आश्रय में उत्पन्न होती है, अत: इन्हें अनुभाव कहते हैं, विरह से व्याकुल नायक-नायिका, क्रोध से कठोर वाणी बोलना आदि अनुभाव है।

संचारी भाव - जो भाव हृदय में प्राय: विद्यमान होते हैं उसे स्थायी भाव कहते हैं। किन्तु कुछ भाव थोड़ी देर के लिए आते है और स्थायी भाव को पुष्ट करने के लिए आते है ओर स्थायी भाव को पुष्ट करके चले जाते है, वे संचारी भाव कहलाते है। इनकी संख्या 33 मानी गयी है।

रस भेद- शास्त्रीय मत के अनुसार नौ स्थायी भाव माने जाते हैं और इन्ही के अनुकूल उनके रस-रूप को प्राप्त करने वाले नौ रस माने गये हैं।

1. श्रृंगार रस 2. वीर रस 3. करूण रस 4. रौद्र रस
5. भयानक रस 6. अद्भुत रस 7. वीभत्स रस 8. शांत रस
9. हास्य रस।

कालान्तर में आचार्य विश्वनाथ ने 'वात्सल्य' को दसवां रस माना तथा 'भक्ति रस' को ग्यारहवें रस के नाम से जाना जाता है।

1. श्रृंगार रस - नर और नारी का पारस्परिक आकर्षण श्रृंगार रस का आधार है, जिसे काव्यशास्त्र में 'रति' कहा जाता है, इसके दो भेद होते हैं - 1. संयोग 2. वियोग।
2. वीर रस - काव्यादि में शत्रु के पराक्रम, आक्रमण, किसी को दीनता, दुर्दशा आदि को देखकर चित्त में जो उत्साह उत्पन्न होता है, वह विभाव, अनुभाव एवं सचारी भाव में पुष्ट होकर आस्वादन के योग्य हो जात है।
3. करूण रस - प्रेमपत्र के चिर-वियोग में पीड़ित होने, अप्रिय की प्राप्ति, विपत्ति आदि से उत्पन्न हुये क्लेश की व्यंजना से शोक नामक स्थायी भाव से करुण रस

की उत्पत्ति होती है।

4. रौद्र रस – अहितकारी शत्रु की धृष्ट चेष्टाओं द्वारा किये गये अपमान आदि से उत्पन्न क्रोध में रौद्र रस की अभिव्यक्ति होती है।
5. भयानक रस – भयदायक वस्तु को देखने अथवा सुनने से उत्पन्न क्रोध में भयानक रस की अभिव्यक्ति होती है।
6. अद्‌भुत रस – सुनने से हृदय में जो आश्चर्य का भाव उत्पन्न होता है, उसे अद्‌भुत रस कहा जाता है।
7. वीभत्स रस- अरूचिकर, घृणित वस्तुओं के वर्णन से जहां जुगुप्सा या घृणा उत्पन्न हो वहां वीभत्स रस होता है।
8. शांत रस –संसार की नश्वरता एवं परमात्मा के रूप का ज्ञान होने से संसार के प्रति जो विरक्ति की भावना उत्पन्न हो उसे निर्वेद कहा जाता है।
9. हास्य रस – किसी वस्तु या व्यक्ति की साधारण से विपरीत, विचित्र या विकृत आकृति, विकृत वेशभूषा, अटपटी वाणी को सुनकर मन में विनोद का भाव उत्पन्न होता है, तब हास द्वारा हास्य रस की अभिव्यक्ति होती है।
10. वात्सल्य रस – माता पिता का संतान के प्रति स्नेह है उससे पुष्ट होता है जिसे वात्सल्य रस कहा जाता है।
11. भक्ति रस – जहां ईश्वर के प्रति रागात्मकता, ईश्वर विषयक प्रेम होता है वहां भक्ति रस होता है।

प्रेरक विचार जो आपकी जिन्दगी बदल देंगे

वैशाली
प्रयोगशाला सहायक, वनस्पति विज्ञान विभाग

जब तुम पैदा हुए थे तुम रोए थे जबकि पूरी दुनिया ने जश्न मनाया था। अपना जीवन ऐसे जियो कि तुम्हारी मौत पर पूरी दुनिया रोए और तुम जश्न मनाओ।

आप यह नहीं कह सकते कि आपके पास समय नहीं है क्योंकि आपको भी दिन में उतना ही समय (24 घण्टे) मिलता है जितना समय महान् एवं सफल लोगों को मिलता है।

दूर से हमें आगे के सभी रास्ते बंद नज़र आते हैं क्योंकि सफलता के रास्ते हमारे लिए तभी खुलते हैं जब हम उसके बिल्कुल करीब पहुँच जाते हैं।

बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।

सफलता हमारा परिचय दुनिया को करवाती है और असफलता हम से दुनिया का परिचय करवाती है।

महानता कभी न गिरने में नहीं बल्कि गिरकर हर बार उठ पाने में है।

अगर आप समय पर अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं करते हैं तो आप एक और गलती कर बैठते हैं। आप अपनी गलतियों से तभी सीख सकते हैं जब आप अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं

सपने वो नहीं हैं जो हम नींद में देखते हैं सपने वो हैं जो हमको सोने नहीं देते।

विश्वास में वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में प्रकाश लाया जा सकता है, विश्वास पत्थर को भगवान बना सकता है और अविश्वास भगवान के बनाए इंसान को पत्थर दिल बना सकता है।

जीवन में कठिनाइयाँ हमें बर्बाद करने नहीं आती हैं, बल्कि यह हमारी छुपी हुई सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकलने में हमारी मदद करती हैं। कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि आप उससे भी ज्यादा कठिन हो।

भीड़ हमेशा उस रास्ते पर चलती है जो रास्ता आसान लगता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि भीड़ हमेशा सही रास्ते पर चलती है। अपने रास्ते खुद चुनिए क्योंकि आपको आपसे बेहतर और कोई नहीं जानता।

मुसीबतों से भागना, नयी मुसीबतों को निमंत्रण देने के समान है। जीवन में समय-समय पर चुनौतियों एवं मुसीबतों का सामना करना पड़ता है एवं यही जीवन का सत्य है। एक शांत समुद्र में नाविक कभी भी कुशल नहीं बन पाता।

स्काउट का महत्व

अंजलि
बी.ए.-प्रथम वर्ष

एक अच्छे स्काउट के जीवन के उद्देश्य विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को दूसरों के जीवन की सुरक्षा एवं रक्षा के लिए कार्य कर समाज के लिए एक मिसाल पैदा करते हुए देश मानव जाति के काम आना है।

आज पूरे विश्व के हालातों को देखते हुए देश के हर नागरिक को स्काउट का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर देश के वीर सैनिकों की तरह देश के नागरिक भी देश की सेवा कर सकें। इससे नौजवानों में देश सेवा का रूझान बढ़ेगा।

स्काउट व गाइडिंग ऐसा सदन है, जहाँ बालक पल्लवित व पुष्पित होता है। यहाँ बालक को मिलता है। पारिवारिक स्नेह खेल-कूद की सुविधा, सुनागरिकता की तैयारी के लिए उचित वातावरण, नैतिकता भरी आस्था और विश्वास, ईश्वर के प्रति श्रद्धा, समाज के प्रति कृतज्ञता व सेवा भाव, स्वास्थ्य निर्माण की प्रेरणा तथा मिल-जुलकर रहने की शिक्षा साहसिक कार्य करना।

देश में स्काउट गाइड से नैतिकता के स्तर में व्यापक सुधार लाने हेतु सुनागरिकता आवश्यक है।

इसके लिए छात्रों को प्रारम्भ से ही सेवा, नैतिकता, राष्ट्र भक्ति, स्वच्छता आदि गतिविधियों से जुड़ना उनमें सक्रियता से भागीदारी करना आवश्यक है। स्काउटिंग गाइडिंग राष्ट्र में ऐसे कार्य करने में सबसे बड़े संगठन के रूप में जाना जाता है। जहाँ अनुशासन, स्वावलंबन और चरित्र-निर्माण की शिक्षा दी जाती है।

वर्तमान में पूरा विश्व शान्ति के लिए चिंतनशील है ऐसे में स्काउट गाइड संगठन का उत्तरदायित्त्व समाज व राष्ट्र के प्रति और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि स्काउट गाइड का संगठन शांति का दूत माना जाता है।

हिन्दुस्तान स्काउट एण्ड गाइड

तनु सिंह
बी.ए.-प्रथम वर्ष

स्काउट-गाइड सरकार द्वारा उठाया गया एक ऐसा कदम है जिसके द्वारा नवयुवकों को देश भावना के लिए प्रेरित अथवा एकजुट करना है। यह बात सत्य है कि इसका प्रारम्भ सर्वप्रथम 'लॉर्ड बेडन पावेल' द्वारा लंदन में हुआ। सर्वप्रथम इसमें केवल लड़कों के लिए ही आने की अनुमति थी परंतु 1910 में बेडन पावेल की बहन 'एग्नेस पावेल' ने लड़कियों के लिए स्काउटिंग की शुरूआत की थी। जबकि भारत में इसकी स्थापना 1909 में की गई। भारत में स्काउटिंग के जनक पं. श्रीराम वाजपेयी जी थे। आज़ादी के बाद 7 नवम्बर 1950 को हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन और ब्वॉयज़ स्काउट को मिलाकर एक नई संस्था का निर्माण किया गया। सन् 1958 में स्काउट का पुर्नगठन करके हिन्दुस्तान स्काउट गाइड नाम से एक संस्था का गठन किया।

स्काउट गाइड के नियम तथा प्रतिज्ञाएँ- स्काउट गाइड के युवक-युवतियों के लिए कुछ अलग नियम व प्रतिज्ञाएँ बनाई गई हैं। इन नियम तथा प्रतिज्ञाओं को जीवन में धारण करके एक स्काउट गाइछ आत्मनिर्भर बन जाती है। इन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार द्वारा 10 नियम व 3 प्रतिज्ञाएँ बनाई गई हैं। इन प्रतिज्ञाओं के द्वारा यह बताया गया है कि प्रत्येक स्काउट गाइड अपने देश के प्रति अपने आप को समर्पित रखेगा तथा हर दृष्टि से अपने देश का सम्मान करेगा। तो वहीं नियमों में यह बताया गया है कि वह एक ऐसा वीर प्राणी है जो विनम्रता के साथ-साथ पशु-पक्षियों व पर्यावरण का भी मित्र होता है।

अत: एक स्काउट गाइड वह मनुष्य है जो पहले अपने देश के बारे में सोचे और इसके बाद अपने पर विचार करे।

स्काउटिंग

मौ. अब्दुल रहमान
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

स्काउटिंग व्यक्ति को एक अच्छा व्यक्ति (नागरिक) व अच्छा नज़रिया, सकारात्मक सोच, विकसित करने में सक्षम है। अपने धार्मिक नियमों का पालन और दूसरे धार्मिक नियमों का सम्मान करना सिखाती है।

स्काउटिंग क्या है- स्काउटिंग नवयुवकों के लिए एक स्वयं सेवी गैर सरकारी शैक्षिक आन्दोलन है जो कि मूल जाति और वंश के लिए खुला है।

स्काउटिंग में धार्मिकता ईश्वर में विश्वास और अपने धार्मिक नियमों का पालन तथा दूसरों के धार्मिक विश्वासों का सम्मान।

स्काउटिंग की स्थापना और उसके संस्थापक- स्काउटिंग की शुरूआत सन् 1907 में हुई थी जिसके संस्थापक श्री लॉर्ड बैडन पॉवेल थे। भारत में स्काउटिंग की शुरूआत सन् 1937 में श्री राम बाजपेयी ने की थी।

"स्काउटिंग संकलित किये गये लक्ष्य सिद्धान्त तथा पद्धतियों के अनुरूप है। यह देशभक्त बहादुर फुर्तीले, सक्रिय, बुद्धिमान, अग्रगामी तथा दूरदर्शी नागरिकों का निर्माण है।"

स्काउटिंग का व्यक्ति के व्यक्तित्व में योगदान- स्काउटिंग व्यक्ति में छिपे गुणों को उभारना जानती है। कोई भी अनुष्ठान व कार्यक्रम जीवन की परिस्थितियों को तुरन्त इन परिस्थितियों को सहजता व सरलता से सहन प्रवृत्ति और शक्ति प्रदान कर सकता है और ऐसा करने का माध्यम स्काउटिंग में है।

यह युवाओं के मन मस्तिष्क को अपनी इच्छानुसार नियंत्रित, उसे सकारात्मक ढंग से विकसित करने की क्षमता रखता है। युवाओं के व्यक्तित्त्व में छिपे गुणों विकसित कारणों के बहुआयामी कार्यक्रम स्काउटिंग के पास हैं। ताकि युवाओं में बाल्यकाल से ही कुशलता का बीजारोपण किया जा सके। व्यक्तित्त्व के मूल्यांकन में अभिवृद्धि हो सके। हर व्यक्ति में आगे बढ़ने और प्रतिस्पर्धा करने के सभी गुण विद्यमान हैं। जरूरत है उन्हें तराशकर धारदार और सार्थक बनाने की यानि मानवीयमिकों विकसित करने के साथ सुव्यवस्थित कैरियर विकसित करने की प्रेरणा देती है। स्काउटिंग व्यक्ति को अपने अभ्यास विषय चुनने के साथ मार्गदर्शक व सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर है।

स्काउटिंग का उद्देश्य- स्काउटिंग का छोटा सा उद्देश्य है- युवाओं को बेहतर बनाना व्यक्ति के जीवन को कुशलता प्रदान करना ताकि वे ईश्वरप्रदत्त क्षमताओं का बेहतर उपयोग कर सकें। क्योंकि तकनीकी प्रशिक्षण से तो मात्र 15 प्रतिशत ही सफलता मिलती है। और 85 प्रतिशत सफलता तो व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के कारण मिलती है। इसलिए हर उम्र के व्यक्ति को स्काउटिंग जीवन शैली से जीना चाहिए।

वैज्ञानिक सोच

शरद कुमार गौतम
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

हम भारतीयों के बहुत ऋणी जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई भी मूल्यवान वैज्ञानिक खोज सम्भव नहीं होती।

विज्ञान मानवता के लिए एक खूबसूरत तोहफा है,
हमें इसे विकृत नहीं करना चाहिए।

वैज्ञानिक सोच किसी समय विशेष में विकसित नहीं हो सकती। यह एक प्रक्रिया है, जो अनवरत चलती रहती है।

एक मिनट में ज़िन्दगी नहीं बदलती, पर एक मिनट में सोच कर लिया हुआ फैसला, पूरा ज़िन्दगी को बदल देता है।

अपने हौंसलों को यह मत बताओ कि तुम्हारी तकलीफ कितनी बड़ी है अपनी तकलीफ को यह बताओ कि तुम्हारा हौंसला कितना बड़ा है।

सब्र एक ऐसी सवारी है, जो अपने सवार को कभी गिरने नहीं देती न किसी के कदमों में, न किसी की नज़रों में।

मनुष्य की सबसे बड़ी ज़रूरत शिक्षा नहीं, बल्कि चरित्र है। यही उसका बड़ा रक्षक भी है।

अपनी सफलता का रौब माता-पिता को मत दिखाओ उन्होंने अपनी ज़िन्दगी हारकर आपको जिताया है।

जीना है तो उस दीपक की तरह जियो, जो बादशाह के महल में भी उतनी ही रोशनी देता है, जितनी किसी गरीब की झोंपड़ी में।

विज्ञान के आविष्कारक

अमित पंवार
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

जय न्यूटन विज्ञान के आगर, गति खोजत ते भरि गये सागर।
ग्राहम बेल फोन के दाता, जन संचार के भाग्य विधाता।
बल्ब प्रकाश खोज करि लीन्हा, मित्र एडीसन परम प्रवीना।
बायल और चार्ल्स ने जाना, ताप दाब सम्बन्ध पुराना।
नाभिक खोजि परम गतिशीला, रडरफोर्ड है अतिगुणशीला।
खोज करत जब थके टॉमसन, तबहि भये इलैक्ट्रॉन के दर्शन
जबहि देखि न्यूट्रॉन को पाए, जेम्स चैडविक अति हरषाये।
भये रेडियम करत बखाना, मैडम क्यूरी परम सुजाना।
बने कार्बनिक देश शक्ति से, बर्जीलियस को शुद्ध कथन से।
बनी यूरिया जब वाहेलर से, सभी कार्बनिक जन्म यहीं से।
जॉन डाल्टन के गूंजे स्वर, आंशिक दाब के योग बराबर।
जय जय जय द्विचक्रवाहिनी, मैकमिलन की भुजा दाहिनी।
सिलने हेतु शक्ति के दाता, एलियास है भाग्यविधाता।
सत्य कहूँ यह सुन्दर वचना, ल्यूवेन हुक को है यह रचना।
कोटि सहस्त्र गुना सब दीखे, सूक्ष्म बाल भी दण्ड सरीखे।
देखहि देखि कार्क के अन्दर, खोज कोशिका है अति सुन्दर।
काया की जिससे भयी रचना, राबर्ट हुक का था यह सपना।
टेलिस्कोप का नाम है प्यारा, मुट्ठी में बह्माण्ड है सारा।
गैलिलियो ने ऐसा जाना, आविष्कार परम पुराना।
विद्युत है चुम्बक की दाता, सुंदर कथन मनहि हर्षाता।
पर चुम्बक से विद्युत आयी, ओर्स्टेड की कठिन कमाई।

जीवन में सफलता

आसमीन मलिक
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

जीवन में सफलता बहुत ज़रूरी है। सफल होने के हमें जीवन में अपने विचारों में बहुत बदलाव लाने होते हैं।

यदि हम अपने विचारों में अच्छे बदलाव लाएं तो हमारे कार्य भी अच्छे होने लगेंगे और अच्छे कार्यों से हमारा जीवन सकारात्मक रूप में बदल जाएगा।

"कभी हिम्मत मत हारो एक बार स्वयं पर विश्वास रखकर आगे कदम बढ़ाकर तो देखो रास्ते स्वयं नज़र आते चले जाएंगे और यदि आपका विश्वास अटल रहा तो मंज़िल भी आपका इंतज़ार करते नज़र आ जाएगी।

लोहे को कोई नष्ट नहीं कर सकता लेकिन लोहे पर लगी जंग उसे धीरे-धीरे नष्ट कर देती है। इसी प्रकार आपको कोई नहीं हरा सकता लेकिन आपकी गलत सोच आपको धीरे-धीरे हार के द्वार पर खड़ा कर देगी। अत: अच्छा सोचो और जीत जाओ।

अच्छा सोचोगे तो अच्छा वापस आएगा, बुरा सोचोगे तो बुरा वापस आएगा, मीठा बोलोगे तो मीठा बोल ही दूसरों से सुनोगे, कड़वा बोलोगे तो खरी-खोटी ही सुनोगे। क्योंकि हम जो देते हैं वही हमें वापस मिलता है।

योग विज्ञान है

नीलम रानी
पी.जी. डिप्लोमा (योग)- प्रथम वर्ष

योग का इस्लाम, हिन्दु, जैन या ईसाई से कोई सम्बन्ध नहीं है लेकिन चाहे जीज़स, मौहम्मद, पतंजलि, बुद्ध या महावीर कोई भी व्यक्ति जो सत्य को उपलब्ध हुआ है, बिना योग से गुज़रे उपलब्ध नहीं हुआ। योग के अतिरिक्त जीवन के परम सत्य तक पहुँचने का कोई उपाय नहीं है।

योग जीवन सत्य की दिशा में किये गये वैज्ञानिक प्रयोगों की सूत्रवत प्रणाली है। इसलिए योग विज्ञान है। योग नास्तिक-आस्तिक की भी चिन्ता नहीं करता है। विज्ञान आपकी धारणाओं पर निर्भर नहीं होता बल्कि विज्ञान के कारण आपको अपनी धारणाएं परिवर्तित करनी पड़ती हैं। विज्ञान आपसे किसी तरह की अपेक्षा नहीं करता। विज्ञान सिर्फ प्रयोग की अपेक्षा करता है। इसी प्रकार योग की खोज, जिज्ञासा व अन्वेषण से शुरू होता है।

योग का पहला सूत्र जीवन ऊर्जा है। बहुत समय तक विज्ञान इसे मानता नहीं था, लेकिन अब राजी है। बहुत समय तक विज्ञान सोचता था जगत पदार्थ है। लेकिन योग ने विज्ञान की खोजों से हज़ारों वर्ष पूर्व यह घोषणा कर रखी थी पदार्थ एक असत्य है, एक झूठ है, एक भ्रम है। भ्रम का मतलब यह नहीं कि नहीं है। भ्रम का मतलब जैसा दिखाई पड़ता है वैसा नहीं है और जैसा है वैसा दिखाई नहीं पड़ता। लेकिन विगत कुछ वर्षों से विज्ञान को एक-एक कदम योग के अनुरूप जुट जाना पड़ा।

रोचक जानकारियाँ

नवीन खान
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

1. छींक हमारे मुख में लगभग 100 मील प्रति घंटा की गति से बाहर आती है।
2. डॉल्फिन मछली एक आँख खुली रखकर सोती है।
3. मनुष्य अपने जीवन में लगभग 60 हज़ार पाउण्ड भोजन सामग्री खा जाता है जो लगभग 6 हाथियों के वजन के बराबर है।
4. हाथों के नाखून, पैरों के नाखून की अपेक्षा चार गुणा तेज़ी से बढ़ते हैं।
5. पेंगुइन एक ऐसा पक्षी है जो तैर सकता है, पर उड़ नहीं सकता।
6. पृथ्वी पर प्रति मिनट लगभग 6000 बार बिजली कड़कती है।
7. दुनिया में लाखों पेड़ उन गिलहरियों द्वारा उगाए हुए हैं जो दानों को ज़मीन में छुपाकर भूल जाती हैं कि उन्हें कहाँ छुपाया था।
8. कुत्ते वे ध्वनियाँ भी सुन सकते हैं जिन्हें मनुष्य नहीं सुन सकता।
9. मनुष्य 1 वर्ष में लगभग 10,000,000 बार पलकें झपकता है।
10. ऊँट आँखें बंद करके भी देख सकता है।
11. घोंघे की 100 आँखें होती हैं।
12. खूनी लाल रंग की नदी स्पेन में है जिसका नाम रियोटिन्टा है।
13. टॉर्च जैसी रोशनी लेकर चलने वाली मछली का नाम जाइजेन्टेक्स है।
14. हवाई द्वीप में एक भी सर्प नहीं है।
15. ब्राज़ील में सबसे ज़्यादा साँप पाये जाते हैं।
16. स्पेन ऐसा देश है जहाँ अखबार कपड़ों पर निकाला जाता है।
17. अमेरिका में मैड्रिक नामक पौधा है जो उखाड़ने पर बच्चे के रोने की आवाज़ करता है तथा आदमी से मिलता-जुलता है।
18. तितली की 1200 आँखें होती हैं।
19. साबुन का ज्ञान सबसे पहले रोमवासियों को था।

असफल होने पर आप निराश हो सकते हैं,
लेकिन अगर आपने कोशिश ही नहीं की तो आपका नाश हो जाएगा।
हमारा क्षेत्र चाहे जो हो, कामयाबी की बुनियाद तो नजरिया ही है।
दूसरे के खेत की घास हमेशा हरी लगती है।
जिन्हें मौके की पहचान नहीं होती, उन्हें मौके का खटखटाना शोर लगता है।
कोई मौका दोबारा नहीं खटखटाता। दूसरा मौका पहले वाले मौके से बेहतर या बदतर हो सकता है, पर वह ठीक पहले वाले मौके जैसा नहीं हो सकता। इसलिए सही वक्त पर सही फैसला लेना बेहद ज़रूरी होता है। गलत वक्त पर लिया गया सही फैसला भी गलत फैसला बन जाता है।

शत-प्रतिशत (100%)सफलता

दीपा रानी
बी.ए.-प्रथम वर्ष

यदि किसी से पूछा जाए कि जीवन में शत-प्रतिशत सफलता कैसे मिल सकती है तो उसके मुख्य उत्तर हैं कठिन परिश्रम (Hardwork), ज्ञान (Knowledge), किस्मत (Luck), पहुँच (Approach) इत्यादि। शायद आप नहीं जानते कि इनमें से कोई भी आपको 100: सफलता नहीं दिलवा सकता। आइए इसे समझने का प्रयास करें।

सर्वप्रथम अंग्रेज़ी की सम्पूर्ण वर्णमाला में 1 से 26 तक अंक लिखो, जैसे-

A-1, B-2, C-3, D-4, E-5, F-6, G-7, H-8, I-9, J-10, K-11, L-12, M-13, N-14, O-15, P-16, Q-17, R-18, S-19, T-20, U-21, V-22, W-23, X-24, Y-25, Z-26.

अब उपरोक्त कारकों को वर्णमाला के शब्दों के अनुसार संख्या दें-

Hard Work= 8+1+18+4+23+15+18+11= 98%.

Luck= 12+21+3+11= 47%

Knowledge= 11+14+15+23+12+5+4+7+5= 96%

Approach= 1+16+18+15+1+3+8= 78%

इस प्रकार कोई भी 100% सफलता नहीं दिला सकता। फिर कैसे मिले हमें 100%सफलता। इसके लिए एक शब्द नज़रिया (सोच) Attitude कोशिश कीजिए।

Attitude= 1+20+20+9+20+21+4+5= 100%

अर्थात् जीवन में शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त करनी है तो अपनी नज़रिया सदैव सकारात्मक रखें। आप जीवन में जितनी ऊँचाई तक पहुँचते हैं, यह आपकी सोच या नज़रिया किस स्तर का है, इस पर निर्भर करेगा।

अमृत वचन

शहनुम
बी.ए.-प्रथम वर्ष

एक भगवान के सिवाय ऐसी कोई चीज़ है ही नहीं जो सदा हमारे साथ रहे और हम सदा उसके साथ रहें।

करना चाहते हो तो सेवा करो, जानना चाहते हो तो अपने-आपको जानो, मानना चाहते हो तो प्रभु को मानो।

जैसे बिना चाहे सांसारिक दु:ख मिलता है, वैसे ही बिना चाहे सुख भी मिलेगा। अत: साधक सांसारिक सुख की इच्छा कभी न करे।

सांसारिक लोगों का सुख आरम्भ में तो अच्छा दिखता है, पर परिणाम में वह विष के समान सर्वथा अनर्थकारी होता है। सांसारिक पदार्थों को लेकर जो अपने को बड़ा मानता है, उसको ये सांसारिक पदार्थ तुच्छ बना देते हैं।

मनुष्य संसार में जितनी चीज़ों को अपने लिए और अपनी मानता है, उतना ही वह फँसता है।

भगवान प्राप्ति के लिए हुई व्याकुलता समस्त बाधाओं को दूर कर जीव को भगवान के पास पहुँचा देती है।

दूसरे के गुण ही देखें, अवगुण कभी न देखें। मनुष्य को गुणवान होना चाहिए।

किसी को भगवान के मार्ग में लगाना परम सेवा है। लाख आदमियों को भौतिक सेवा की अपेक्षा एवं आदमी की परम सेवा बढ़कर है।

महान गणितज्ञ एवं उनका योगदान

गुरमीत कौर
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

गणितज्ञ	प्रमुख ग्रंथ (पुस्तक)	गणित
1. म्यूक्लिड	एलिमेन्टस	बीजगणितीय सर्वसमिकाएँ सर्वांगसम, क्षेत्रफल आकृतियों का विभाजन शांक्य, तल बिन्दु
2. आर्यभट्ट	आर्यभट्टीय	गणित एवं ज्योतिष अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, पाई का मान चार स्थानों तक 3.1416 दिया। वर्गमूल, घनमूल ज्ञात करने की विधि।
3. ब्रह्मगुप्त	ब्रह्मस्फुट सिद्धांत	चक्रीय चतुर्भुज का क्षेत्र अनन्त की सर्वप्रथम कल्पना
4. महावीराचार्य	गणित सारसंग्रह	क्रमचय एवं संचय की निकालने का सूत्र दिया। ऋणात्मक संख्याओं का वर्गमूल संभव नहीं।
5. श्रीधराचार्य	पाटीगणित, त्रिशतिका नवशातिका वर्ग समी. हल करने का सूत्र	समान्तर श्रेणी के पदों में वर्ग वाली श्रेणी के 4 पदों का योग निकाला। दीर्घवृत्त की परिधी एवं क्षेत्रफल का। (इम्पेरिकल फॉर्मूला दिया) द्विघात समी. को हल करने का सूत्र (श्री धराचार्य सूत्र)
6. आर्यभट्ट द्वितीय	महासिद्धांत	का मान 22/7, मैथेमैटिक
7. पाइथागोरस	पाइथागोरस प्रमेय	परवलय, इलिप्स, अपरवलय की खोज
8. भास्कराचार्य द्वितीय	ग्रह गणित, गोलाध्याय सिद्धांत शिरोमणि लीलावती बीजगणित	पृथ्वी की गोलाकार विचार दिया। करणियाँ, अवकलन, स्थिरांक गोले के क्षेत्रफल एवम् आयतन का सूत्र दिया।
9. नारायण पण्डित	गणित कौमुदी	क्रमचय, संचय, अंक विभाजन, मायावर्ग का प्रतिपादन।
10. श्री निवास रामानुजन		संख्या सिद्धांत आगमन विधि का प्रयोग रामानुजन स्थिरांक, रामानुजन थीटा फलन राजर्स-रामानुजन तत्समक, रामानुजन अभाज्य, अभाज्य थीटा फलन रामानुजन योग, लैडों।
11. प्रो. वी. एन. प्रसाद		इलाहाबाद (मैथेमैटिकल सोसाइटी) की स्थापना इण्डियन जनरल ऑफ मैथेमैटिक्स पत्रिका का प्रकाशन।

मेरे सपनों का भारत

स्वाति कंचन
बी.ए.-प्रथम वर्ष

मेरे सपनों के भारत में,
मैं बिना डरे घर से निकलूँगी।
हर सन्नाटे, हर अँधियारे, हर गली
सड़क और हर चौराहे
न होगा कोई घात लगाए।
न कोई नज़र मुझको चीरेगी
मैं अपनी आज़ादी के रंगों से,
दुनिया को रंग लूँगी।
न मेरी माँ की कोख में
मुझको मारा जाएगा।
न लालच की आग में
मुझको जलाया जाएगा।
मैं खिलूँगी, बढ़ूँगी, दौड़ूँगी
मेरी भी अपनी मंज़िल होगी।
जिस पर मेरा परचम लहराएगा
मेरे सपनों के भारत में
मेरे भी कुछ सपने होंगे
मेरे सपनों के भारत में
मेरी भी दावेदारी होगी
आधी-अधूरी नहीं,
हमारी पूरी दावेदारी होगी।
सपनों के भारत का
सपना देखा है,
जागती आँखों से
अब ये सच होगा।
हमारी सच्चे आज़ादी पर
हमें भी गर्व होगा।

हमारा महाविद्यालय

आरती गोस्वामी
बी.कॉम.-प्रथम वर्ष

चमन लाल महाविद्यालय, तुझे आज बधाई है।
तेरे ज्ञान के दीपक ने, ज्योति जग में जगाई है।
अज्ञानता को दूर कर तूने, शिक्षा दीप जलाया है।
दुर्गुण खोकर हमने तुझसे, सद्गुण रत्न पाया है।
परोपकार कर तूने सबके, सब दुःखों को दूर किया।
ज्ञान धन, विद्या धन, नम्रता धन सबको भरपूर दिया।
नगर-नगर में धूम मचाई, तुझे आज बधाई है।
तू उपवन है, इस जनपद का, हम हैं तेरे खिलने नन्हे फूल।
मेरा जीवन पुष्प खिलाया, ज्ञानामृत असीम दिया।
अपनी नैतिक शिक्षा से, बुराइयों को दूर किया।
मेरी हार्दिक इच्छा है, सदा तेरे गुण गाऊँ मैं
श्रद्धा पुष्पों की भेंट तुझे है, शत्-शत् नवाऊँ मैं।

शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान

निशी शर्मा
बी.लिब.

हमारे समाज में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है।
जिसके पास शिक्षा है, उसका समाज में सम्मान
जिसके पास शिक्षा नहीं है उसका पग-पग पर अपमान
शिक्षा हमें पुस्तकों से और अपने गुरूओं से
मिलता है अधिक से अधिक ज्ञान
शिक्षा से होता है मानव जीवन का विकास
कहते हैं हमारी शिक्षा और हमारा ज्ञान
हमारी राह में सबसे अच्छा साथी होता है।
मानव ने शिक्षा के आधार पर कि
वैज्ञानिक क्षेत्र में इतनी वृद्धि
कि लोगों ने नारा लगाया, जय जवान
जय किसान और जय विज्ञान, भारत महान
जब हम पढ़ते हैं, पुस्तकों में ज्ञान की बातें
भूल जाते हैं अपनी सभी समस्याएं एवं चिंताएं
इसलिए न अंतर करो बेटा और बेटी में
दो शिक्षा का सभी को समान अधिकार
सभी पढ़-लिखकर बने महान
छू लें बुलंदी का आसमान
करें देश में कुछ ऐसे आविष्कार
जिससे भारत देश बने महान
इसलिए हमारे देश में है
शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान

मेरी माँ

साक्षी
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

माँ भगवान का एक अनमोल तोहफ़ा है
भगवान हर जगह नहीं रह सकते इसलिए
उन्होंने माँ को अपने रूप में धरती पर उतारा है
माँ अनेक रूप निभाती है।
माँ सबसे प्यार और दुनिया की सबसे अनमोल तोहफ़ा है
माँ अपने बच्चों की सबसे ज़्यादा फिक्र करती है
माँ कभी अपने बच्चों की आँखों में आँसू नहीं देख सकती
अगर बच्चे की आँखों में एक भी आँसू आता है
तो उससे पहले माँ रो देती है
माँ हर खुशी देती है अपने बच्चें को इसीलिए
किसी ने सच ही कहा है कि
माँ के चरणों में स्वर्ग है।
"सबसे प्यारी होती है माँ.....।"

आदर्श शिक्षक

शिवानी चौधरी
बी.ए.-प्रथम वर्ष

आदर्शों की मिसाल बनकर
बाल जीवन संवारता शिक्षक
महकता और महकाता शिक्षक
नित नए प्रेरक आयाम लेकर
हर पल भव्य बनता शिक्षक
संचित ज्ञान धन हमें देकर
खुशियाँ खूब मनाता शिक्षक
पाप व लालच से डरने की
हमको सीख सिखाता शिक्षक
देश के लिए मर मिटने की
बलिदानी राह दिखाता शिक्षक
प्रकाश पुंज का आधार बनकर
कर्तव्य अपना निभाता शिक्षक
प्रेम सरिता की बनकर धारा
नैया पार लगाता शिक्षक

माँ

प्रणीता भण्डारी
प्रयोगशाला सहायक, वाणिज्य विभाग

आज जो लिखने बैठी हूँ तुझे,
तो शायद लिख न पाऊँ माँ।
कहानी तेरे प्यार की,
मैं शायद कह न पाऊँ माँ।।
कैसे बयां कर दूँ तुझे शब्दों में कुछ,
जब जिन्दगी पूरी तेरी दी है माँ।
तेरे दर्द की दास्तां बयां न कर पायी ये कायनात,
उस दर्द का एक सिला मैं भी हूँ माँ।।
बचपन की वो यादें जब सोचने बैठती हूँ,
मेरी हर उस याद में बस तू रहती है माँ।
अब तो कुछ बोल भी लूँ मैं,
उस वक्त जुबां मेरी सिर्फ एक तू ही थी माँ।।
चोट लगी मुझे जब भी,
आँख तेरी ही रोई माँ।
एक मुझे सुलाने की खातिर,
न जाने कितनी रातों की नींद तूने खोई माँ।।
मेरी हर एक ख्वाहिश को पूरा किया,
मेरी जिद को तूने सर आँखों पर बिठाया माँ।
मेरे हर दुख को तेरी गोद ने सुख में बदल दिया,
मैंने उस ईश्वर से भी ऊपर तुझे मान लिया माँ।।
मेरी हर नाकामयाबी पर भी तेरा मुझ पर विश्वास मुझे
यकीन दिलाता है कि,
तेरा सहारा मैं नहीं मेरा सहारा तू है माँ।
आज जो लिखने बैठी हूँ तुझे,
तो शायद लिख न पाऊँ माँ।
कहानी तेरे प्यार की,
मैं शायद कह न पाऊँ माँ।।

माँ की लोरी

वकार आलम
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

छोटा सा था जब वह उसको हँसाती थी माँ।
लोरी सुना-सुनाकर सुलाती थी माँ।
कपड़े गीले करता था तो सुखाती थी माँ।
थोड़ा रोने पर गोद में उठाती थी माँ।
क्या सही है क्या ग़लत बताती थी माँ।
पहले खाना बच्चों को देकर फिर खाती थी माँ।
अगर वह रूठ जाता तो मनाती थी माँ।
कोई बीमारी होने पर तो पैर दबाती थी माँ।
थोड़ा परेशान होने पर रातों जाग जाती थी माँ।
दुःख दर्द सारे लेकर उन्हें छुपाती थी माँ।
अब बुजुर्ग हो गई अब वो है लाचार।
उसकी औलाद का उसके प्रति फ़ीका हो गया प्यार।
शादी हो गई उस बेटे की अपनी खूब चलाता है।
अपनी माँ को सबसे सामने नीकर वह बताता है।
गिर-गिरकर चलती रही उठ-उठकर सँभलती रही।
आँसू अपने खूब बहाकर आँखों को मलती रही।
ऐसे ही सैकड़ों बेटों ने अपने माँ-बाप को छोड़ दिया।
ऐसा कभी न करना बुजुर्ग है तुम्हारे
कुछ ज़िन्दगी काट लेंगे वह तुम्हारे सहारे।
एक दिन बनना है बुजुर्ग तुमको भी सोच समझकर काम
करो
अपने माँ-बाप की नज़रों में अच्छा सा नाम करो।
वरना माँ-बाप ने औलाद से माँगी माफी है
अगर उन्होंने दे दी छोटी सी बद्दुआ ही काफी है।
लबों पर उसके कभी बद्दुआ नहीं होती
बस एक माँ है जो कभी खफ़ा नहीं होती।

बेटी से माँ तक का सफर

साहिल
बी.कॉम-द्वितीय वर्ष

बेटी से माँ का सफ़र
बेफ़िक्री से फ़िक्र का सफ़र
रोने से चुप कराने का सफ़र
उत्सुकता से संयम का सफ़र
पहले जो आँचल में छुप जाया करती थी
आज किसी को आँचल में छुपा लेती है
पहले जो हाथ जल जाने पर घर को सर पे उठाया करती थी
आज हाथ जल जाने पर भी खाना बनाया करती है।
छोटी-छोटी बातों पर रो जाया करती थी
आज बड़ी-बड़ी बातों को मन में रखा करती है
पहले दोस्तों से लड़ लिया करती थी
आज उनसे बात करने को तरस जाती है।
माँ कहकर पूरे घर में उछला करती थी
आज माँ सुन के धीरे से मुस्कुराया करती है।
दस बजे उठने पर भी जल्दी उठ जाना होता था।
आज पाँच बजे उठने पर भी लेट हो जाती है।
खुद के शौक पूरे करते-करते साल गुज़र जाया करता था
आज खुद के लिए एक कपड़ा लेने में आलस आ जाता है।
पूरे दिन फ्री होके भी बिज़ी बताया करती थी
अब पूरा दिन काम करके भी फ्री बतायी जाती है।
साल के एक एग्ज़ाम के लिए पूरे साल पढ़ा करती थी
अब हर दिन बिना तैयारी के एग्ज़ाम दिया करती है।
न जाने कब किसी की बेटी, किसी की माँ बन गई
कब बेटी से माँ का सफ़र पूरा कर गयी।

क्या है बेटियाँ

असिना
बी.लिब.

ओस की बूँद सी होती हैं बेटियाँ
ज़रा सा दर्द हो तो रोती हैं बेटियाँ
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को
दो-दो कुलों की लाज रखती हैं बेटियाँ
कोई नहीं एक-दूसरे से कम
हीरा अगर है बेटा तो सच्चा मोती हैं बेटियाँ
काँटों की राह पर खुद चलती हैं
औरों के लिए फूल ही बोती हैं बेटियाँ
ये तो विधि का विधान है यही दुनिया की रस्म है
मुट्ठी भर नीर सी होती हैं बेटियाँ
माँ की लाज और पिता का गौरव हैं बेटियाँ
सुख-दुःख की साथी हैं बेटियाँ
ज़िन्दगी की कच्ची डोर में मजबूत बंधन हैं बेटियाँ
पल-पल का एहसास हैं बेटियाँ
झील की स्वच्छ जल और नदी की तेज़ धार हैं बेटियाँ।

माँ क्या है

रज़िया अब्बासी
बी.लिब.

कितने नाज़ों से पाला है हमें माँ ने
गिरने पर सम्भाला है हमें माँ ने
जब-जब हम मुसीबत में घिरे होते हैं
तब-तब दुआ के लिए हाथ उठाया माँ ने
हम लम्हा-लम्हा उनको परेशान करते हैं
तब भी गले से लगाया हमें माँ ने
डूब नहीं सकती उसकी कश्ती दरया में
जिस कश्ती की निगरानी की हो माँ ने
रज़िया नाज़ क्यों न हो अपने मुकद्दर पर
क्योंकि इस मुकाम पर पहुँचाया माँ ने।

भारत की बेटी

काजल पाल
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

सबसे महान होती है भारत की बेटियाँ
हम सबकी शान होती हैं भारत की बेटियाँ
जिस दिन से घर में आती हैं बेटियाँ
माता-पिता की इज़्ज़त बन जाती हैं बेटियाँ

भारत के विकास की डोर थामे हैं बेटियाँ
भारत को बुलंदियों पर पहुँचाती हैं बेटियाँ
हर युग में भारत को नई दिशा देती हैं बेटियाँ
त्याग और बलिदान से भरपूर हैं भारत की बेटियाँ

माँ का आशीर्वाद

मयंक कुँवर
एम.ए. (योगाचार्य)-द्वितीय वर्ष

माता को जो प्यार करे, वो लोग निराले होते हैं
जिसे माँ का आशीर्वाद मिले, वो किस्मत वाले होते हैं
चाहे लाख करो तुम पूजा और तीर्थ करो हज़ार
मगर माँ-बाप को ठुकराया तो सब कुछ है बेकार...
जो माँ की न सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा
जो माँ को ठुकरायेगा, दर-दर की ठोकर खाएगा...
जो माँ की नहीं सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा।
एक बेटा अपने बेटे को भेंट में गाड़ी देता है।
वो ही बेटा माँ-बाप को थाली तक नहीं देता है।
फिर भी वो माता ख़फा नहीं होती जुबाँ से कभी बद्दुआ नहीं देती
माता तो तेरी ममता की ज्योति, माता के आँसू हैं सच्चे मोती
उनके दिल को ठेस लगाके, बेटा सँभल न पाएगा.....
जो माँ की न सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा।
चाहे लाखों कमा लो, चाहे करोड़ों भी कमा लेना
जिसने माता को नहीं जीता, धिक्कार है उसका जीना
गर्व न कर तू धन का ओ पगले
गाड़ी ये बंगले यहीं तो रहेंगे

माता पिता की ले-ले दुआएं, जीवन बनेगा तेरा सुखदाई
जिसने नहीं ली माँ की दुआएं, हरदम वो पछताएगा,
जो माँ की न सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा।
बुढ़ापे में माता-पिता का सपना सब टूट जाता है,
दौलत के संग माता-पिता का बँटवारा हो जाता है।
एक बेटा अपने घर माँ को ले जाए, एक बेटा अपने घर बाप को ले जाए
एक होते भी हो गए पराये, दोनों बिछुड़कर आँसू बहाये
जो बबूल को बोएगा, वो आम कहाँ से खाएगा
जो माँ की न सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा।
इस दुनिया में माँ की महिमा सबको आज सुनानी है
माँ और बेटे के रिश्ते की ये तो अमर कहानी है।
माँ ने बेटे को जन्म दिया है
बाप ने बेटो का सब कुछ किया है।
तूने उसका क्या बदला दिया है, किसके भरोसे छोड़ दिया है
माता-पिता को दुख देके, कहाँ से तू सुख पाएगा।
जो माँ की न सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा।

माँ का रिश्ता

अंजली
बी.ए.-प्रथम वर्ष

फिक्र में बच्चों की कुछ इस कदर घुल जाती है माँ
नौजवाँ होते हुए भी बूढ़ी नज़र आती है माँ।
रूह के रिश्ते की गहराई तो देखिए
चोट लगती है हमें और सिसकती है माँ।
कब ज़रूरत मेरे बच्चों को हो मेरी इतना सोचकर
सो जाती है उसकी आँखें और जागती रहती है माँ।
पहले बच्चों को खिलाती है सुकून और चैन से
बाद में जो कुछ बचा, खुशी से खाती है माँ
हर कष्ट से बच्चों को बचाने के लिए
ढाल बनती है कभी, तलवार बन जाती है माँ।
ज़िन्दगी के सफर में गर्दिशों की धूप में
जब कोई साया नहीं मिलता तो याद आती है माँ।
देर हो जाती है घर जाने में अक्सर जब हमें
रेत पर हो मछली जैसे ऐसे घबराती है माँ।
मरते समय गर बच्चे न आएं परदेस से
अपनी दोनों पुतलियाँ चौखट पर रख जाती है माँ
शुक्रिया कभी हो ही नहीं सकता उसका अदा
मरते-मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।

माँ की दुआ

मयंक कुमार
एम.ए.(योगाचार्य)-प्रथम वर्ष

हमारे हर मर्ज़ की दवा होती है माँ
कभी डाँटती है हमें तो कभी गले लगा लेती है माँ
हमारी आँखों के आँसू अपनी आँखों में समा लेती है माँ
अपने होठों की हँसी हम पर लुटा देती है माँ
हमारी खुशियों में शामिल होकर अपने गम भुला देती है माँ
जब भी कभी ठोकर लगे तो हमें तुरंत याद आती है माँ
दुनिया की तपिश में हमें आँचल की शीतल छाया देती है माँ
खुद चाहे कितनी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ
प्यार भरे हाथों से हमेशा हमारी थकान मिटाती है माँ
बात जब भी हो लज़ीज़ खाने की तो हमें याद आती है माँ
रिश्तों को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ
लफ़्ज़ों में जिसे बयाँ नहीं किया जा सके ऐसी होती है माँ।
मंज़िल दूर और सफर बहुत है
छोटी सी ज़िन्दगी की फिक्र बहुत है
मार डालती ये दुनिया कब की हमें
लेकिन माँ की दुआओं में असर बहुत है।

ममता की छाँव

रीतू कश्यप
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

घुटनों पर रेंगते-रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाँव में
न जाने कब मैं बड़ा हुआ।
काला टीका, दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह
प्यार ये तेरा कैसा है।
मैं ही सबसे अच्छा हूँ,
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
"माँ" मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ॥

माँ-बाप को कभी भूलना नहीं

अंजलि रानी
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

भूलो सभी को मगर माँ-बाप को भूलना नहीं,
उपकार अगणित हैं उनके इस बात को भूलना नहीं।
पत्थर पूजे कई, तुम्हारे जन्म की खातिर।
पत्थर बन माँ-बाप का दिल कभी कुचलना नहीं।
मुख का निवाला दे जिसने तुम्हें बड़ा किया
अमृत पिलाया तुमको ज़हर उनके लिए उगलना नहीं।
कितने लड़ाए लाड सब अरमान भी पूरे किए
पूरे करो अरमान उनके यह बात भूलना नहीं।
लाखों कमाते हो भले, माँ-बाप से ज़्यादा नहीं
सेवा बिन सब राख है, मद में कभी फूलना नहीं।
संतान से सेवा चाहो, संतान बन सेवा करो
जैसी करनी वैसी भरनी नारा यह भूलना नहीं।
सोकर स्वयं गीले में, सुलाया तुम्हें सूखी जगह
माँ की अमीमय आँखों को, भूलकर कभी भिगोना नहीं।
जिसने बिछाए फूल थे हर कदम तुम्हारी राहों में
उस रहबर की राह में कंटक कभी बनना नहीं।
धन तो मिल जाएगा मगर माँ-बाप क्या मिल पायेंगे
पल-पल पावन उन चरण की चाह कभी भूलना नहीं।
अर्थ- माता का गौरव पृथ्वी से भी भारी है, और पिता आकाश से भी ऊँचा है।
"माता गुरूतरा भूमेः खात् पितोच्चतस्तथा"

बेटियाँ

छवि नायक
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

हर घर की रौनक होती हैं बेटियाँ
हर माँ-बाप की मुस्कान होती हैं बेटियाँ
एक मौका तो दो बेटियों को
जीत आपके कदमों में लाएंगी बेटियाँ
इस देश की डूबी सियासत को
पार तक ले जाएंगी बेटियाँ
अपने भारत देश का नाम
रोशन कर जाएंगी बेटियाँ।

माता-पिता का प्यार

मीनाक्षी पाल
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

झील के इस पार
झील के उस पार
पर्वत के इस पार
पर्वत के उस पार
चारों ओर सारे जहाँ में
छाया हुआ है मेरे लिए
सिर्फ मेरे मम्मी-पापा का प्यार
जहाँ भी देखने की कोशिश करती हूँ
अपने मम्मी-पापा का चेहरा नज़र आता है
मेरे हर जिद को पूरा करना
और मुझे मनाना
चारों ओर वही नज़ारा नज़र आता है।
बड़े बदनसीब होते हैं वो लोग
जो मम्मी-पापा का प्यार खो देते हैं।
वो लोग कुछ पाकर भी सब कुछ खो देते हैं
ऐसे इंसान अपने घर कैसे बनाते हैं
जो अपने मम्मी-पापा का
दिल तोड़ जाते हैं।

अमन का पैग़ाम

सबिया खान
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

ये पेड़, ये पत्ते, ये शाखाएं भी परेशान हो जाएं
अगर परिंदे भी हिन्दु और मुसलमान हो जाएं
सूखे मेवे भी ये देखकर हैरान हो गए
न जाने कब नारियल हिन्दु और मुसलमान हो गए
न मस्जिद को जानते हैं, न शिवालों को जानते हैं
जो भूखे पेट होते हैं, वे सिर्फ निवालों को जानते हैं
मेरा यही अंदाज़ ज़माने को खलता है
कि मेरा चिराग हवा के खिलाफ़ ही क्यूँ जलता है
मैं अमन पसंद करता हूँ, मेरे शहर में दंगा रहने दो
लाल और हरे रंग में मत बाँटो
मेरी छत पर तिरंगा लहराने दो।

माँ के नाम

दीपा
बी.ए.-प्रथम वर्ष

मैंने माँ की हथेली पर एक काला तिल देखा और कहा "माँ यह दौलत का तिल है।" माँ ने अपने दोनों हाथों से मेरा चेहरा थामा और कहा, "हाँ बेटा! देखो, मेरे हाथों में कितनी दौलत है।"

एक दिन मैं कॉलेज से घर आने लगा तो, देखा कि आसमान में बादल थे। लग रहा था कि बारिश होगी इसलिए सोचा कि घर जल्दी पहुँच जाऊँ, पर रास्ते में ही बारिश शुरू हो गई और मैं भीग गया। घर जाते ही बड़ी बहन ने कहा- थोड़ी देर रुक नहीं सकते थे? बड़े भाई ने कहा- "कहीं साइड में खड़े हो जाते।" पापा ने कहा- "खड़े कैसे हो जाते? जनाब को बारिश में भीगने का शौक जो है।"

इतने में मम्मी आई और सिर पर तौलिया रखकर बोली, "ये बारिश भी न, थोड़ी देर रूक जाती तो मेरा बेटा घर आ जाता।"

किसी ने माँ के कंधे पर सिर रख के पूछा, "माँ कब तक अपने कंधे पर सोने दोगी? माँ ने कहा जब तक लोग मुझे कंधे पर न उठा लें।"

दिन भर काम के बाद बेटा पूछता है, "क्या लाए? बीवी पूछती है, "कितना बचाया?" पापा पूछते हैं, "कितना कमाया?" लेकिन माँ पूछती है, "बेटा कुछ खाया?"

बेटियाँ

मौ. अरशद शेख़
बी.ए.-प्रथम वर्ष

आज के इस सभ्य समाज में भी
जन्म से पहले ही
मार दी जाती हैं बेटियाँ
जन्म दे भी दिया गया तो
शोषण का शिकार बनती हैं बेटियाँ
फिर भी यदि संकल्प ले लें
तो सपने सँवारती हैं बेटियाँ
बेटियों के बिना तो अधूरा है आदमी
क्योंकि समाज को सभी
रिश्ते देती हैं बेटियाँ।
बेटियाँ ही न रहीं तो
बेटों को जन्म देगा कौन
शोषित होकर भी,
अत्याचारों को सहकर भी
रिश्तों को सँवारती हैं बेटियाँ
सफलताओं के हर क्षेत्र में
झण्डे गाड़ती हैं बेटियाँ
बेटियों को बचाओ क्योंकि
बेटों को जनने के साथ ही
माँ-बाप का सहारा
बनती हैं बेटियाँ।
खानदान को आगे बढ़ाने की
बान भी हैं बेटियाँ
और परिवार का
मान भी हैं बेटियाँ।

पिता

युसरा
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

मेरा साहस मेरी इज़्ज़त मेरा सम्मान है पिता
मेरी ताक़त मेरी पूँजी मेरी पहचान है पिता
घर की इक-इक ईट में शामिल उनका खून-पसीना
सारे घर की रौनक उनसे, सारे घर की शान पिता
मेरी इज़्ज़त, मेरी शौहरत, मेरा रूतबा मेरा मान है पिता
मुझको हिम्मत देने वाले मेरा अभिमान है पिता
सारे रिश्ते उनके दम से, सारे नाते उनसे हैं
सारे घर के दिल की धड़कन सारे घर की जान पिता
शायद रब ने देकर भेजा फल ये अच्छे कर्मो का
उसकी रहमत, उसकी नेअमत, उसका है वरदान पिता।

दोस्त

अंजलि
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

सूनी ज़िन्दगी को हंसी बनाते हैं दोस्त।
डूबती कश्ती को किनारे लगाते हैं दोस्त।
एक बुझे हुए उदास चेहरे पर,
फिर से रोशनी लाते हैं दोस्त।
जब बैठे मिलकर एक साथ कभी
तो यारों के पल सजाते हैं दोस्त।
इस मुरझायी हुई वीरान ज़िन्दगी में
फिर से नये फूल खिलाते हैं दोस्त।
दो पल चलते हैं साथ सभी पर
उम्र भर साथ निभाते हैं दोस्त।
मुश्किलों में जब राह नहीं दिखती है कोई,
तो मिलकर राह बनाते हैं दोस्त।
हर पल को यादग़ार बनाते हैं दोस्त,
शायद इसलिए उम्रभर याद आते हैं दोस्त।

पिता का प्यार

प्रतिभा बाड़ियान
बी.कॉम.-द्वितीय वर्ष

पिता जीवन है, सबल है, शक्ति है
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है।
पिता उंगली पकड़े बच्चे का सहारा है।
पिता कभी खट्टा, कभी खारा है।
पिता पालन है, पोषण है, परिवार का अनुशासन है।
पिता धौंस से चलने वाला प्रशासन है।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है।
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है।
पिता अप्रदर्शित अनन्त प्यार है
पिता है, तो बच्चों को इंतज़ार है।
पिता से ही बच्चों को ढेर सारे सपने हैं।
पिता है तो बाज़ार के सब खिलौने अपने हैं।
पिता से ही प्रतिपल राग है।
पिता से ही माँ की बिन्दी और सुहाग है।

दोस्ती का अहसास

ज्योति चौहान
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

दो दिनों की उमड़ती उमंग है दोस्ती
आकाश में उड़ती पतंग है दोस्ती
हर पल हर दिन एक नई जंग है दोस्ती
दो जवाँ दिलों की ज़रूरत है दोस्ती
ज़मीं पर भगवान की मूरत है दोस्ती
कितनी खूबसूरत, कितनी पाक है दोस्ती
ज़िन्दगी में कितनी खास है दोस्ती
दो टूटे दिलों के जीने की आस है दोस्ती
दो बिछुड़े दिलों को मिलाती है दोस्ती
ज़िन्दगी के अंतिम पलों में याद आती है दोस्ती
टूटे दिलों में जीने की उम्मीद जगाती है दोस्ती
ज़िन्दगी के सभी खूबसूरत पल है दोस्ती
ज़िन्दगी में कल आजकल है दोस्ती।

गुरु

साक्षी
बी.ए.-प्रथम वर्ष

अँधेरी रात का सवेरा हो तुम
बहती हवाओं का गुरूर हो तुम
निराशा में छुपी आशा हो तुम
हर टूटे सपनों का सहारा हो तुम
माता-पिता देते जन्म धरती माता
करती है पोषण
पर जीने का अर्थ समझाते हो तुम
आसमां में चमकते तारों के
बीच चन्द्रमा हो तुम
मंज़िलें हमें पता है पर
हर मंज़िल का रास्ता हो तुम
नीर जैसे पावन हो तुम
सूर्य जैसा तेज़ तुम्हारा
नमन करूँ हर रोज़ तुझे
आशीष मे डूबे पग-पग मेरा।

सुविचार

रॉबिन सिंह
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

किसी मूर्ख व्यक्ति के लिए किताबें उतनी ही उपयोगी हैं जितनी कि एक अँधे के लिए आईना।

'परिवार' प्यार का दूसरा नाम है। अपने परिवार को समय दीजिए, इससे प्रेम और विश्वास का रिश्ता मजबूत बनता है। याद रखना कहीं ज़िन्दगी की भागदौड़ में परिवार पीछे न छूट जाए।

ज्ञानी मनुष्य दूसरों की भूलों से सीखकर अपनी भूलें सुधारता है।

विपरीत परिस्थितियों में भी जो ईमान, साहस और धैर्य को कायम रख सकें, वस्तुतः वही सच्चा शूरवीर है।

ज़िन्दगी तो सस्ती है, बस गुज़ारने के तरीके महंगे हैं।

मूर्ख व्यक्ति को पशु समझकर त्याग देना चाहिए।

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती हैं

एक अनपढ़ व्यक्ति का जीवन उसी तरह से बेकार है जैसे कि कुत्ते की पूँछ, जो न उसके पीछे का भाग ढकती है न ही उसे कीड़े-मकौड़ों के डंक से बचाती है।

किसी को कभी दु:ख मत देना क्योंकि दी गई चीज़ एक दिन हज़ार गुणी होकर लौटती है।

हम अपने विचारों से ही अच्छी तरह ढलते हैं; हम वही बनते हैं जो हम सोचते हैं। जब मन पवित्र होता है तो खुशी परछाई की तरह हमेशा साथ चलती है।

जिसकी आँखों पर अहंकार का पर्दा पड़ा हो, उसे न तो दूसरों के गुण दिखाई देते हैं न ही अपने अवगुणों का पता चलता है।

अपवित्र कल्पना भी उतनी ही बुरी होती है, जितना बुरा अपवित्र कर्म होता है।

इत्र से कपड़ों का महकाना कोई बड़ी बात नहीं है, मज़ा तो तब है, जब आपके किरदार से खुश्बू आए।

कोई भी काम शुरू करने से पहले तीन सवाल अपने आपसे पूछें- मैं ऐसा क्यों करने जा रहा हूँ? इसका क्या परिणाम होगा? क्या मैं सफल रहूँगा?

हर मित्रता के पीछे कोई न कोई स्वार्थ ज़रूर होता है, ऐसी कोई मित्रता नहीं, जिसमें स्वार्थ न हो। यह कड़वा सच है।

शांति वचन

सोनिया कटारिया
बी.लिब.

सत्य और पवित्रता के साथ ईश्वर की सेवा करना और जीवन की सभी घटनाओं में उसकी आज्ञाओं का श्रद्धा के साथ पालन करना ही यथार्थ धर्म है।

विनम्रता का अर्थ है दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा आप अपने साथ किया जाना पसन्द करते हैं।

हमारी आज की शिक्षा में चाहे जितने सद्गुण हों किन्तु उसमें जो बड़ा दुर्गुण है वह यही है कि उसमें बुद्धि को ऊँचा और परिश्रम को नीचा स्थान दिये जाने की भावना है।

करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निशान॥

सच्ची प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए सम्पत्ति की ज़रूरत नहीं उसके लिए त्याग व सेवा काफी है।

वीणा का तार इतना न खींचो कि टूट जाए, इतना ढीला न रखो कि आवाज़ ही न निकले। यह सत्य सम्पूर्ण जीवन का निचोड़ है, यही मूल ध्येय है जीवन में सफलता पाने का।

बार-बार वरदान माँगता झुका चरण में माथा।
युग-युग तक यह चारण गाए वीर जनों की गाथा॥

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल॥

कीमती विचार

शाहरूख
बी.ए. प्रथम वर्ष

जीवन में कठिनाइयाँ हमें बर्बाद करने नहीं आती हैं बल्कि यह हमारी छुपी हुई सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकालने में हमारी मदद करती हैं। कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि आप उससे भी ज़्यादा कठिन हो।

सत्य को कहने के लिए
किसी शपथ की ज़रूरत नहीं होती।
नदियों को बहने के लिए
किसी पथ की ज़रूरत नहीं होती,
जो बढ़ते हैं ज़माने में अपने मजबूत इरादों पर
उन्हें अपनी मंज़िल पाने के लिए
किसी रथ की ज़रूरत नहीं होती।

रास्ते पर कंकड़ ही कंकड़ हो तो भी एक अच्छा जूता पहनकर उस पर चला जा सकता है लेकिन एक अच्छे जूते के अन्दर एक भी कंकड़ हो तो एक अच्छी सड़क पर कुछ कदम चलना भी मुश्किल है। अर्थात् हम बाहर की चुनौतियों से नहीं बल्कि अन्दर की कमज़ोरियों से हार जाते हैं।

भगवान का दिया कभी अल्प नहीं होता,
बीच में जो टूटे वो संकल्प नहीं होता
घर को अपने लक्ष्य से दूर ही रखना
क्योंकि झील का कभी कोई विकल्प नहीं होता।

साँप घर पर दिखाई दे तो लोग डंडों से मारते हैं, और शिवलिंग पर दिखाई दे तो दूध पिलाते हैं, लोग सम्मान आपका नहीं, आपकी स्थिति और स्थान का करते हैं।

बारिश की बूँदें भले ही छोटी हों
लेकिन उनका लगातार बरसना
बड़ी नदियों का बहाव बन जाता है
वैसे ही हमारे छोटे-छोटे प्रयास भी
ज़िन्दगी में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

ज़िन्दगी में तपिश कितनी भी हो कभी हताश मत होना क्योंकि धूप कितनी भी तेज़ हो समंदर कभी सूखा नहीं करते।

पानी की बूँद जब समुंदर में होती है जब उसका कोई अस्तित्व नहीं होता, लेकिन जब वो बूँद पत्ते पर होती है तो मोती की तरह चमकती है। आपको भी जीवन में ऐसा मुकाम हासिल करना है, जहाँ मोती की तरह चमको क्योंकि भीड़ में पहचान दब जाती है।

राष्ट्र का निर्माण

अभिषेक
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

राष्ट्रों का निर्माण हुआ करता है, वीर नरपुगवों के शौर्य से वीरांगनाओं के सतीत्व से और शहीदों के रक्त से।
जिस राष्ट्र ने चरित्र खोया उसने सब कुछ खोया।
चरित्र संग-साथ में विकसित होता है, बुद्धि एकांत में। जिस काबिल तुम अपने आपको बनाओगे कुदरत स्वतः वह स्थान दे देगी।
ईमानदार होने का अर्थ है हज़ार मनको में चमकने वाला अकेला हीरा।

प्रेरणादायी वचन

तृप्ति
बी.ए.-प्रथम वर्ष

सिक्के हमेशा आवाज़ करते हैं मगर नोट हमेशा खामोश रहते हैं इसलिए जब आपकी कीमत बढ़े तो शांत रहिए आपकी हैसियत का शोर मचाने का जिम्मा आपसे कम कीमत वालों के लिए है।

आप कोई भी अद्‌भुत कार्य करो और लोग उसको नज़र अंदाज़ करें तो निराश मत होना, क्योंकि सूर्योदय के वक्त कई लोग सो रहे होते हैं।

खुशियाँ हमेशा चंदन की तरह होती है, दूसरों के माथे पर लगाओ तो अपनी भी उंगलियाँ महक जाती हैं।

अच्छे लोगों की सबसे बड़ी खूबी यह होती है कि उन्हें याद रखना नहीं पड़ता, वो याद रह जाते हैं।

पिता की मौजूदगी सूरज की तरह होती है, सूरज गर्म ज़रूर होता है मगर यह न हो तो अँधेरा छा जाता है।

मुसीबत में ये मत सोचो कि अब कौन काम आएगा? बल्कि ये सोचो कि अब कौन छोड़ के जाएगा।

इरादे मेरे हमेशा साफ होते हैं, इसलिए कई लोग मेरे खिलाफ़ होते हैं।

कुएँ में उतरने वाली बाल्टी यदि झुकती है तो भरकर बाहर आती है। जीवन का भी यही गणित है, जो झुकता है, वह प्राप्त करता है। दादागिरी तो हम मरने के बाद भी करेंगे, लोग पैदल चलेंगे और हम कंधों पर।

झुकते वहीं हैं जिनमें जान होती है, अकड़ तो मुर्दे की पहचान होती है।

अमृत वचन

रितु कश्यप
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

कीमती शब्द जो ज़िन्दगी बदल दे-

इंतज़ार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

पहचान से मिला काम बहुत कम समय के लिए टिकता है, लेकिन काम से मिली पहचान उम्रभर कायम रहती है।

बदल जाओ वक्त के साथ या फिर वक्त बदलना सीखो। मजबूरियों को मत कोसो, हर हाल में चलना सीखो।

प्रशंसा चाहे कितनी भी करो, किन्तु अपमान बहुत ही सोच समझकर करना चाहिए, क्योंकि अपमान वो ऋण है, जो हर कोई अवसर मिलने पर ब्याज सहित चुकाता अवश्य है।

ये ज़रूरी नहीं कि रोज़ मंदिर जाने से इंसान धार्मिक बन जाए, लेकिन कर्म ऐसे होने चाहिए कि इंसान जहाँ भी जाए, मंदिर वहाँ बन जाए।

जब मेहनत करने के बाद भी सपने पूरे न हो तो रास्ते बदलिए सिद्धांत नहीं, क्योंकि पेड़ भी हमेशा पत्ते बदलता है जड़ नहीं।

गीता में साफ शब्दों में लिखा है, निराश मत होना, कमज़ोर तेरा वक्त है, तू नहीं।

सुविचार

शाहबुद्दीन
बी.ए. प्रथम वर्ष

कामयाब व्यक्ति की सिर्फ चमक लोगों को दिखाई देती है, उसने कितने अंधेरे देखे हैं, यह कोई नहीं जानता।
यदि सपने सच न हो रहे हो तो रास्ते बदलो इरादे नहीं, क्योंकि पेड़ हमेशा पत्तियाँ बदलते हैं जड़ें नहीं।

अनमोल विचार

पारुल देवी
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

मंदिर में पूजा करें घर में करें कलेश
बापू तो बोझा लगे, पत्थर लगे गणेश
बचे कहाँ अब शेष है दया, धरम, ईमान
पत्थर के भगवान है, पत्थर दिल इंसान
पत्थर के भगवान को लगते छप्पन भोग
पर जाते फुटपाथ पर भूखे, प्यासे लोग
फैला है पाखंड का अंधकार सब ओर
पानी करते जागरण मचा मचा कर शोर
पहन मुखौटा धरम का करते दिन भर पाप
भण्डारे करते फिरे घर में भूखा बाप।

सबसे बढ़िया दवा हँसी
सबसे बढ़िया सम्पत्ति बुद्धि
सबसे अच्छा हथियार धर्म
सबसे अच्छी सुरक्षा विश्वास
और सबसे अच्छी बात कि
ये सब नि:शुल्क।

प्यारी जग से न्यारी माँ
खुशियाँ देती सारी माँ
चलना हमें सिखाती माँ
मंज़िल हमें दिखाती माँ
सबसे मीठा बोल है माँ
दुनिया में अनमोल है माँ
खाना हमें खिलाती माँ
लोरी गाकर सुलाती है माँ
प्यारी जग से न्यारी माँ
खुशियाँ देती सारी माँ।

जब जब जन्म लेती है बेटी
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी
सुबह की पहली किरण है बेटी
तारों की शीतल छाया है बेटी
आँगन की चिड़िया है बेटी
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी
नये-नये रिश्ते बनाती है बेटी
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी
बार-बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास नहीं है बेटी।

जीवन मंत्र

धीरे बोलिए- शांति मिलेगी
अहम छोड़िए- बड़े बनेंगे
भक्ति कीजिए- मुक्ति मिलेगी
विचार कीजिए- ज्ञान मिलेगा
सेवा कीजिए- शक्ति मिलेगी
सहन कीजिए- देवत्व मिलेगा
संतोषी बनिए- सुख मिलेगा

अपना विचार

शिवानी
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

कहते हैं भारत आगे बढ़ गया है
खूब तरक्की कर ली, पर लोगों
की सोच ने तरक्की की नहीं
आज भी कितने लोग हैं जो अपनी बेटियों
की शिक्षा के खिलाफ़ है
कहते हैं भारत आगे बढ़ गया है
खूब तरक्की कर ली है
फेसबुक के सी.इ.ओ. जकरबर्ग ने बेटी
पैदा होने पर अपनी 90 प्रतिशत दौलत दान दे दी
पर यहाँ लोग बेटी पैदा होने पर उसके दहेज के लिए
अपनी जंजीर तक पहनना छोड़ देते हैं।
कहते हैं भारत आगे बढ़ गया है
खूब तरक्की कर ली है
अरे बहन बेटियाँ को छोड़िये आज कल
लोग अपनी माँ तक भूल जाते हैं
बंटवारा कर लेते हैं उन सबके लिए
मेरा एक सवाल जिनको माँ शब्द का अर्थ नहीं पता
एक दिन सबसे खाना खाने के
बाद रसोई में अपना खाना खुद ढूँढना पता चलेगा
कि माँ क्या होती है अरे माँ तो वो फरिश्ता होती है
जिसे बुखार भी हो और उसका बेटा पूछे कि
माँ आपको बुखार है तो पता है क्या बोलती है,
अरे नहीं मैं खाना बना रही थी न इसलिए गरम हूँ
अगर माँ के बलिदानों पर बात करने लगी तो शाम हो
जाएगी

स्कूल के दिन

सोनम
बी.ए.-प्रथम वर्ष

आयेंगे जब स्कूल के दिन
गिनते रहेंगे हर पल हर दिन।
साथ हमारा कभी न छूटे
बन्धन दोस्ती का कभी न टूटे।
जन्म-जन्म का साथ निभाना
वादा हमारा तोड़ न जाना।
जब आयेंगे जाने के दिन
करते रहना याद प्रतिदिन।
हमारी तो है सच्ची दोस्ती
लगती तो है सच्ची दोस्ती।
लगती है ये सबको अच्छी
दिन भी आते जाते हैं
याद हमें दिलाते हैं।
जाने कौन सा आएगा दिन
होगा हर काम मुमकिन।
सपने सारे सच हो जायेंगे
लक्ष्य को अपने जब हम पायेंगे।

मैं बोझ नहीं हूँ

सोनम
बी.ए.-प्रथम वर्ष

शाम हो गई अब तो घूमने चलो न पापा
चलते-चलते थक गई, कंधे पर बिठा लो न पापा
अँधेरों से डर लगता है, सीने से लगाओ न पापा
मम्मी तो सो गई है, थपकी देकर सुलाओ न पापा
स्कूल तो पूरा हो गया।
अब कॉलेज जाने दो न पापा।
पाल-पोसकर बड़ा किया
अब जुदा तो मत करो न पापा।
अब डोली में बिठा ही दिया तो,
आँसू तो मत बहाओ न पापा।
आपकी मुस्कुराहट अच्छी है,
एक बार तो मुस्कुराओ न पापा।
आपने मेरे बात मानी
एक बात और मान जाओ न पापा
इस धरती पर मैं बोझ नहीं हूँ
दुनिया को समझाओ न पापा।

जिन्दगी का सफर

नीता
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

ज़िन्दगी एक अंजान सफर है।
कहीं काँटों भरा तो कहीं फूलों भरा रास्ता
फूलों पर तो हर कोई चल लेता है
काँटों पर चलना ही हमारी पहचान है।
लेकिन काँटों में तो हम एक गुलाब बनकर
खिल जायेंगे, देखता रह जाएगा सारा ज़माना।
हमें नहीं भाता असफलताओं के सामने सिर झुकाना
कहते हैं तो डर गया वो मर गया।
ज़िन्दगी का यही खेल है जो डर गया वो इस भीड़ में गुम गया।
मोती तो हज़ारों मिल जाते हैं लेकिन हीरा तो हज़ारों में मिलता है
लेकिन सफलता तो किसी एक को ही मिलती है।
ज़माने की हवाओं के साथ तो पत्ते बहते हैं पेड़ नहीं,
अगर हम जैसों ने पत्ते बनकर जीना सीख लिया
तो इस रास्ते का क्या होगा? सफर का क्या होगा?

हिम्मत न हारो

हीना
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

जब कोई काम बिगड़ जाए,
जैसा कि कभी-कभी होगा!
जब रास्ता सिर्फ़ चढ़ाई का ही दिखता हो
जब पैसे कम और कार्य ज़्यादा हो
जब मुस्कुराहट की इच्छा आह बने,
जब चिंताएँ दबा रही हों
तो सुस्ता लो, लेकिन हिम्मत न हारो
भूल-भुलैया है ये जीवन
पगडंडियाँ जिनकी हमें पार करनी हैं।
कई असफल तब लौट गए
पार होते गए जो आगे बढ़ते गए
धीमी रफ्तार तो क्या,
मंज़िल तो इक दिन पाओगे।
सफलता छिपी असफलता में ही
जैसे शंका के बादल में आशा की चमक।
नाप सकोगे क्या इतनी दूरी
दूर दिखती हैं लेकिन मुमकिन है यह नज़दीक हो
डटे रहो चाहे कितनी भी मुश्किल हो
चाहे हालात कितने भी बुरे हों,
लेकिन हिम्मत न हारो, डटे रहो।

अगर आप सोचते हैं

जतिन
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

अगर आप सोचते हैं कि आप हार गए हैं
तो आप हारे हैं
अगर आप सोचते हैं कि आप में हौसला नहीं है
तो सचमुच नहीं है
अगर आप जीतना चाहते हैं
मगर सोचते हैं कि जीत नहीं सकते
तो निश्चित् है कि आप नहीं जीतेंगे
अगर आप सोचते हैं कि हार जाऐंगे
तो आप हार चुके हैं।
क्योंकि हम दुनिया में देखते हैं कि
सफलता की शुरूआत इंसान की इच्छा से होती है।
यह सब कुछ हमारी सोच पर निर्भर करता है
अगर आप सोचते हैं कि पिछड़ गए हैं
तो आप पिछड़ गए हैं
तरक्की करने के लिए आपको अपनी
सोच ऊँची करनी होगी
कोई भी सफलता प्राप्त करने से पहले
आपको अपने प्रति विश्वास लाना होगा
जीवन की लड़ाईयाँ हमेशा
सिर्फ तेज़ और मज़बूत लोग ही नहीं जीतते बल्कि
आज नहीं तो कल जीतता वही आदमी है
जिसे यक़ीन है कि वह जीतेगा।

मेरे मन की अभिलाषा

स्वाति
बी.ए.-प्रथम वर्ष

चाहती हूँ मैं इस संसार में
कुछ नाम कमा के जाऊँ
पढ़-लिखकर महान बनकर
सब के मन को भाऊँ।
चाहती हूँ मैं सभी लोगों में
प्रेम भावना लाऊँ
जो अशिक्षित हैं
उन्हें शिक्षित बनाऊँ।
देख-देखकर मुझे दुनिया वाले
देखते ही रह जायें
और मेरी प्रेम भावना
तो सबको बतलाए।
चाहती हूँ मैं नाम कमाना
और ऊँचे पद पर जाऊँ
समाज के सभी बच्चों को
अपने साथ आगे बढ़ाऊँ।
चाहती हूँ मैं अपनी इच्छा
पूरी करके जाऊँ
समाज में एक टीचर बनकर
बच्चों को शिक्षा दिलाऊँ।

एक दीया शहीदों के नाम

शगुन
बी.ए.-प्रथम वर्ष

कर दिया जिसने हँसते-हँसते
घर का चिराग़ देश के नाम
एक दीया तो जलाओ यारों
उस माँ के भी नाम।
उजाले बिखेरे हर दिशा
दीये जलाओ उसकी शान में
जिसने किया अपना सिंदूर विदा
देश में मान में।
आँगन करो रोशन
बत्तियों की लौ बढ़ाओ
उस बच्चे के त्याग में
लौटे जिसके पिता
लिपट के तिरंगे में।
दीवाली है त्यौहार अपनों का
तो नज़र संग आओ उनके
हो गए अपने शहीद जिनके
देश का अभिमान रखने में।
आइए इस दीवाली एक दीया जलाएं
उनके लिए
जिन्होंने अपने किए कुर्बान, देश के नाम
आओ एक दीया तो जलाओ यारों उन
शहीदों के नाम।

मैं गर्व कर सकूँगा

नीशू कुमार
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

तुझे ज़िन्दगी में आगे बढ़ना होगा
हल पल आगे चलना होगा।
तुझे करना होगा विश्वास खुद पर
रखना होगा हौसला, अपनी सफलता पर।
तेरे लिए बनाई है ये दुनिया
तुझे इस दुनिया में चमकना होगा।
तू राही न बन जाना रास्तों का
तुझे खुद रास्तों का इजाद करना होगा।
नई राहें होंगी, उनपर मुश्किलें भी होंगी।
तू रखना खुद पर भरोसा, उनपर फ़तह भी होगी।
मुझे यक़ीन है तू जीत जायेगा।
हर मुश्किलों पर तू फ़तह पाएगा।
खुद को एक बेहतर इंसान बनाने के लिए
चाँद-तारों से भी ऊपर तू जाएगा।
वहाँ जाकर तू जो मुझे देखना चाहेगा
अपनी बन्द आँखों में तू मुझे ही पाएगा।
तेरी आँखों में खुशी देख मैं झूम सकूँगा।
अपने दिए ज्ञान पर मैं गर्व कर सकूँगा।
तेरी नई सोच, नया इरादा, इस दुनिया को नई दिशा देगा।
तू रखना ईष्वर पर भरोसा, वो तुझे अपना सहारा देगा।

हिन्दी

पूनम
बी.ए.-तृतीय वर्ष

भाषाओं के संघर्ष में हिन्दी को विजयी बनाना है
हिन्दुस्तान में हिन्दी, बस हिन्दी को लाना है।
काम मुश्किल ज़रूर है लेकिन
हिन्दी को हर दिल में बसाना है।
हिन्दी को विश्व तक पहुँचाना है।
हिन्दी राष्ट्र की भाषा है
यही जीवन की आशा है।
बोलने में सरल सुनने में मिठास
बस यही जीवन की आस।
हिन्दी हमारी जान है
इस पर सब कुर्बान है।
है यह बहुत आसान
करना है इसका सम्मान।
हौसलों में आसमाँ के पार जाना है।
हिन्दी को उसका सम्मान दिलाना है।
हिन्दी को हर दिल में बसाना है।
लहरों में जूझते हुए किनारों तक जाना है।
हवाओं में दीप ज्ञान का जलाना है।
हिन्दी को हर भावना में बसाना है।
स्वयं से किया वादा निभाना है।

स्टूडेन्ट

मौहम्मद दानिश
बी.ए.-प्रथम वर्ष

आओ चर्चा करें स्टूडेन्ट क्या है?
स्टूडेन्ट- हम सभी जानते हैं। सात शब्दों से मिलकर बना है। समाज में सबसे ज़्यादा सम्मान स्टूडेंट को दिया जाता है। लेकिन आज बदलते समाज के साथ-साथ अपना अस्तित्त्व खोता जा रहा है। हम जानेंगे इन सात शब्दों का अर्थ-

S-का अर्थ है- Social Worker	समाज सेवक
T-का अर्थ है- Truth	सच्चाई
U-का अर्थ है- Understand	समझदार
D-का अर्थ है- Discipline	अनुशासन
E-का अर्थ है- Education	शिक्षा
N-का अर्थ है- Nature	स्वभाव
T-का अर्थ है- Try	कोशिश

संदेश
मंज़िल उनको नहीं मिलती जो रहते हैं किस्मत के सहारे
वरना प्यासे तो वो भी मर जाते हैं, जो रहते हैं दरिया के किनारे।

भगत सिंह के विचार

छाया
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

ज़िन्दगी तो अपने दम पर ही जी जाती है
दूसरों के कंधों पर तो सिर्फ जनाज़े उठाये जाते हैं।
मेरे जज़्बातों से इस कदर वाकिफ़ है मेरी कलम
मैं इश्क भी लिखना चाहूँ तो इंकलाब लिख जाता है।
जो देश के लिए शहीद हुए उनको मेरा सलाम है
अपने खून से जिस ज़मीं को सींचा उन बहादुरों को सलाम है।
ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम
फूल क्या चीज़ है तेरे क़दमों में हम
भेंट अपने सरों की चढ़ा जायेंगे।

चिंतन

भारत की गरिमा का गौरव हिमालय
ऋषियों के तप का पावन हिमालय
माँ उमा के सपनों का घर है हिमालय
पर्वतों का सिरमौर है जो हिमालय
देवों के देव बसते हिमालय
नारी सुरम्या का घर है हिमालय
शीतल-निर्मल-न्यारा हिमालय
पावन सुरसरि देवा हिमालय
वेदों की रचना रचता हिमालय
मन की तरंगों में बसता हिमालय
सृष्टि की रक्षा करता हिमालय
भारत की रक्षा का प्रहरी हिमालय।

पेड़ लगाओ

उज्जवल पाल
बी.ए.-प्रथम वर्ष

धरती की बस यही पुकार, पेड़ लगाओ बारंबार।

आओ मिलकर कसम ये खाएं, अपनी धरती हरित बनाएं।

धरती पर हरियाली हो, जीवन में खुशहाली हो।

पेड़ धरती की शान है, जीवन की मुस्कान है।

पेड़-पौधों को पानी दे, जीवन की यही निशानी दे।

आओ पेड़ हम लगाएं, पेड़ लगाकर जग महकाए।

जीवन सुखी बनाएं हम, आओ पेड़ लगाएं हम।

कोशिश कर

विशाल कुमार
कनिष्ठ सहायक

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध
मरूस्थल से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर पौधों को पानी दे,
बंजर ज़मीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे।
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिन्दा रख, दिल में उम्मीदों को
गरल के समंदर में भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुज़रने की।
जो है आज थमा-थमा सा चल निकलेगा।

जिंदगी का चिराग

नेहा अंजुम
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

किस कदर अजीब राह है ज़िन्दगी
कभी रौशन तो कभी स्याह है ज़िन्दगी
कभी चिरागों से रौशन लगती है
कभी अँधेरा बनकर डराती है ज़िन्दगी।
तन्हाई में लहलाती, तड़पाती है ये और
कभी हसीन मंजर नज़र आती है ज़िन्दगी।
उम्मीदों का प्रकाश करती है तो कभी
हसरतें डूब के रह जाती हैं।
कभी चन्द लम्हे सुकून के देते हैं ये
और फिर बेकरारियों में डुबा देती है ज़िन्दगी।
कितने तूफ़ानों का सिला देती है ये
अजीब कशमकश नाम है ज़िन्दगी।
कभी रौशन तो कभी स्याह है ज़िन्दगी
ज़िन्दगी इसे कोई न जान पाये
बड़ी खामोश-सी है ये ज़िन्दगी।

जीतने वाला बनाम हारने वाला

हिना
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

जीतने वाला हमेशा समाधान का हिस्सा होता है।
हारने वाला हमेशा समस्या का हिस्सा होता है।
जीतने वाले के पास हमेशा कोई न कोई कार्यक्रम हारने वाले के पास कोई न कोई बहाना।
जीतने वाला कहता है, "मैं आपके लिए यह काम कर देता हूँ।"
हारने वाला कहता है, "यह मेरा काम नहीं है।"
जीतने वाले के पास हर समस्या का कोई न कोई समाधान होता है।
हारने वाले के पास समस्या है हर समाधान के लिए।
जीतने वाला कहता है, "मुश्किल होने के बावजूद यह काम किया जा सकता है।"
हारने वाला कहता है, "इस काम को किया जा सकता है, पर यह बहुत मुश्किल है।"
कोई गलती करने पर जीतने वाला कहता है, "मैं गलत था।"
हारने वाले से कोई गलती होती है तो वह कहता है, "इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी।"
जीतने वाला वचनबद्ध होता है।
हारने वाला खोखले वायदे करता है।
जीतने वाले की आँखों में कामयाबी के सपने होते हैं।
हारने वाले के पास खोखली योजनाएँ होती हैं।
जीतने वाला कहता है, "मुझे कुछ करना है।"
हारने वाला कहता है, "कुछ होना चाहिए।"
जीतने वाला लाभ को देखता है।
हारने वाला तकलीफ को देखता है।
जीतने वाला सँभावनाओं को देखता है।
हारने वाला समस्याओं को देखता है।
जीतने वाला "सभी की जीत" के सिद्धांत में विश्वास करता है।
हारने वाला मानता है कि जीतने के लिए किसी का हारना ज़रूरी है।
जीतने वाला आने वाले कल को देखता है।
हारने वाला बीते कल को देखता है।
जीतने वाला सोचकर बोलता है।
हारने वाला बोलकर सोचता है।
जीतने वाला स्थिर स्वभाव वाले तापस्थायी (थर्मोस्टेट) जैसा होता है।
हारने वाला तापमापी (थर्मोमीटर) जैसा होता है।
जीतने वाला विनम्र शब्दों में कड़े तर्क पेश करता है।
हारने वाला बड़े शब्दों में कमज़ोर तर्क पेश करता हैं
जीते वाला बुनियादी मूल्यों (वैल्यू) पर मज़बूती से टिका रहता है पर छोटी-छोटी चीज़ों पर समझौता कर लेता है।
हारने वाला छोटी-छोटी बातों पर अड़ जाता है, लेकिन मूल्यों पर समझौता कर लेता है।
जीतने वाला दूसरों की भावनाओं को महसूस करने में विश्वास करता है।
वह मानता है कि दूसरों के साथ वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जैसे व्यवहार की उम्मीद हम दूसरों से अपने लिए नहीं करते।
हारने वाला इसमें विश्वास करता है कि दूसरे तुम्हारे साथ युद्ध करे, उससे पहले ही तुम वह काम उनके साथ कर दो।
जीतने वाले काम को अंजाम देते हैं।
हारने वाले काम के होने का इंतज़ार करते हैं।
जीतने वाला जीतने की योजना बनाता है और तैयारी करते हैं। तैयारी ही मूलमंत्र है।

समय का महत्व

अनु वर्मा
बी.ए.-प्रथम वर्ष

वक्त क्या है, कौन जान पाता है
यह तो जैसे एक हवा का झोंका है, आता है चला जाता है।
हर शख्स सोचता है, मेरे पास अभी वक्त है
पर वक्त इसी सोच में गुज़र जाता है।
जिस आदमी ने वक्त की कदर न की कभी
उस आदमी के काम पीछे रह गए सभी
जब तलक होश उसे आता है
सिर्फ अफसोस ही उसके हाथ में रह जाता है
यूँ तो दुनिया में बहुत ग़म हुआ करते हैं
पर वक्त की मार से कुछ और आलम हुआ करते हैं
वक्त की मार जिस पर पड़ती है
वो क्या से क्या हो जाते हैं
अच्छा भी वक्त आता है, बुरा भी वक्त आता है
पर इंसान वही जो, हर हाल में मुस्कुराता है
मुस्कुराना ही हमें जीना सिखाता है
और वक्त का आईना यही हमें दिखाता है।

मत करना नज़र अंदाज़ माँ-बाप की तकलीफ़ों को
जब ये बिछड़ जाते हैं, तो
रेशम के तकियों पर भी नींद नहीं आती।
सम्पन्नता मन से होती है, धन से नहीं
बड़प्पन बुद्धि से होता है, उम्र से नहीं।
मैं शुक्रगुज़ार हूँ उन तमाम लोगों का
जिन्होंने बुरे वक्त में मेरा साथ छोड़ दिया
क्योंकि उन्हें भरोसा था कि मैं
मुसीबतों से अकेले ही लड़ सकता हूँ।
तू छोड़ दे कोशिशें इंसानों को पहचानने की
यहाँ ज़रूरतों के हिसाब से, सब बदलते नकाब हैं
अपने गुनाहों पर पर्दे डालकर
हर शख्स कहता है, ज़माना बड़ा खराब है।
मत करना कभी गुरूर अपने आप पर ऐ इंसान
न जाने खुदा ने तेरे और मेरे जैसे
कितने मिट्टी के बनाकर मिट्टी में मिला दिए।
पैसा इंसान को ऊपर ले जा सकता है
लेकिन इंसान पैसे को ऊपर नहीं ले जा सकता।

नोटबंदी पर ग़ालिब का दर्द

प्रियंका
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

बदलवा दे मेरे नोट ऐ ग़ालिब
या वो जगह बता दे, जहाँ कतार न हो...
उमरे दराज़ माँग कर लाए थे चार दिन,
दो कमाने में लग गए, दो बदलवाने में।

मेरा गाँव

छवि नायक
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

मेरा गाँव इतना प्यारा
जैसे होता चन्द्रमा न्यारा
चारों तरफ रहती हरियाली
फूलों से खिल उठी हरेक डाली
इसके चारों तरफ है जंगल हज़ार
जिसमें उठती है जानवरों की दहाड़।
देखो चारों दिशाओं की ओर
दिखती है पहाड़ों की होड़
इतनी ऊँची-ऊँची चोटियाँ शोभाशाली
चढ़ते-चढ़ते निकले जान सारी।
ऊँचे, टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलती है गाड़ी
गंगा के कारण आ जाती है कभी बाढ़ भारी।
संगम स्थल है यह तीन नदियों का
अलकनंदा, भागीरथी और मंदाकिनी मिलकर
बनती है गंगा
यह है मेरे पूर्वजों की आँखों का तारा,
जो लगता है मुझको सबसे प्यारा।

एक दीप जला दें

रोहिणी
बी.ए.-प्रथम वर्ष

यदि ईट पर ईट धरें तो
महल खड़ा हो जाएगा
छोटा सा एक दीप जला दो
अंधकार मिट जाएगा
नन्हा बीज यदि बो दें हम
वही वृक्ष बन जायेगा
अच्छे-अच्छे काम करें तो
देश बड़ा बन जाएगा।
बूँद-बूँद घट में डालें तो
घड़ा शीघ्र भर जाएगा
सब मिलकर जब करें सामना
शत्रु नहीं टिक पाएगा
बिना रूके चलते जाए तो
लक्ष्य हमें मिल जाएगा
मधुर बोल यदि हम बोलें तो
अपनापन बढ़ जाएगा।

मुझे मत काटो

टिवंकल
बी.ए.-प्रथम वर्ष

चीख -चीखकर कह रहे हैं पेड़
मुझे मत काटो, मुझे मत काटो
तुम्हें फल-फूलों से सजी-भरी धरती दी,
मैंने हवा को शुद्ध किया
मैंने तुम्हारे प्राणों की रक्षा की
मेरे ही कारण आज तुम बड़े-बड़े महलों में रहते हो
मेरे ही कारण तुम वर्षा एवं भीषण
सर्दी से स्वयं को बचा पाते हो
मैंने सदैव तुम्हे धन-धान्य से परिपूर्ण किया।
तुम मुझे क्यों सताते हो?
मुझे बचाओ मुझे बचाओ
मुझे मत काटो, मुझे मत काटो।

आज़ादी

अमित पँवार
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

आज तिरंगा फहराता है, अपनी पूरी शान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से॥
आज़ादी के लिए न्यारी, लम्बी चली लड़ाई थी।
लाखों लोगों ने प्राणों से, कीमत बड़ी चुकाई थी॥
व्यापारी बनकर आए और छल से हम पर राज किया।
हमको आपस में लड़वाने की नीति अपनाई थी॥
हमने अपना गौरव पाया, अपने स्वाभिमान से।
हमें मिली आज़ादी, वीर शहीदों के बलिदान से॥
गाँधी, तिलक, सुभाष, जवाहर का प्यारा यह न देश है।
जियो और जीने दो का, सबको देता संदेश है॥
प्रहरी बन कर खड़ा हिमालय, जिसके उत्तर द्वार पर
हिन्द महासागर दक्षिण में, इसके लिए विशेष है॥
लगी गूँजने दसों दिशाएँ, वीरों के यशगान से।
हमें मिली आज़ादी, वीर शहीदों के बलिदान से॥
हमें हमारी मातृभूमि से इतना मिला दुलार है।
इसके आँचल की छाया से, छोटा ये संसार है॥
हम न कभी हिंसा के आगे, अपना शीश झुकायेंगे।
सच पूछो तो पूरा विश्व, हमारा ही परिवार है॥
विश्व शांति की चली हवाएं, अपने हिन्दुस्तान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से॥

ऐतिहासिक तथ्य

मौहम्मद सलमान
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

भारत की प्रथम महिला आई.ए.एस. ऑफिसर कौन थी?	आना रामाजन मल्होत्रा
बैंक को हिन्दी में क्या कहा जाता है?	अधिकोश
फेसबुक के मुख्य संस्थापक कौन हैं?	मार्क जुकरबर्ग
राज्य सरकार ने किसानों के लिए सूर्य शक्ति योजना शुरू की है?	गुजरात सरकार
भारत को विश्व के सबसे अमीर देशों की सूची में कौन सा स्थान मिला है?	6 (छठा)
विश्व की सबसे लम्बी सुरंग है?	नॉर्वे सुरंग
विश्व का सबसे बड़ा पक्षी कौन सा है?	शुतुरमुर्ग
विश्व का सबसे छोटा पक्षी कौन सा है?	गुनगुना पक्षी
विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय कौन सा है?	तक्षशिला विश्वविद्यालय
विश्व का प्रथम कागज़ी मुद्रा जारी करने वाला देश कौन सा है?	चीन
विश्व जल दिवस कब मनाया जाता है?	22 मार्च
सामान्य किस्म का कोयला कौन सा है?	बिटुमिनस
कौन सा पक्षी पानी में 20 मिनट तक अपनी साँस रोक सकता है?	पेंगुइन
भारत में सूरज सबसे पहले किस राज्य में निकलता है?	अरूणाचल प्रदेश
चाय में कौन सा उत्तेजक पदार्थ पाया जाता है?	थीन व टेनिन
कॉफी में कौन सा उत्तेजक पदार्थ पाया जाता है?	कैफीन
दूध में उपस्थित प्रोटीन होता है?	कैसीन
भारत में सर्वप्रथम किस वर्ष एड्स की पहचान की गई?	1986
मनुष्य मस्तिष्क का सबसे बड़ा भाग है?	सेरीब्रम
भारत के किस राज्य का अपना अलग झण्डा होता है?	जम्मू-कश्मीर
जहरीले पदार्थों को कहा जाता है?	टॉक्सिन

पैसा जीवन का उद्देश्य नहीं

फातिमा नूर
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

पैसे से मूर्ति खरीद सकते हैं, भगवान नहीं
पैसे से बिस्तर खरीद सकते हैं, नींद नहीं
पैसे से भोजन खरीद सकते हैं, भूख नहीं
पैसे से ऐनक खरीद सकते हैं, आँखें नहीं
पैसे से आदमी खरीद सकते हैं, वफ़ादारी नहीं
पैसे से दवा खरीद सकते हैं, स्वास्थ्य नहीं
पैसे से किताबें खरीद सकते हैं, ज्ञान नहीं
पैसे से पाउडर खरीद सकते हैं, सुन्दरता नहीं
पैसे से कलम खरीद सकते हैं, विचार नहीं
पैसे से नौकर खरीद सकते हैं, सेवक नहीं
पैसे से औरत खरीद सकते हैं, पत्नी नहीं
पैसे से शस्त्र खरीद सकते हैं, हौसला नहीं
पैसे से सुख-साधन खरीद सकते हैं, शान्ति नहीं
पैसे से शरीर खरीद सकते हैं, आत्मा नहीं।

जीवन के तीन मंत्र

कार्तिक
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

खुशी में वचन न दें।
क्रोध में उत्तर न दें।
दु:ख में निर्णय न लें।
देने के लिए दान
लेने के लिए ज्ञान
और त्यागने के लिए
अभिमान सर्वश्रेष्ठ है।

प्रकृति

ख्याति वर्मा
बी.कॉम.-प्रथम वर्ष

कलयुग में अपराध का
बढ़ा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख।
समय-समय पर प्रकृति
देती रही कोई न कोई चोट
लालच में इतना अँधा हुआ
मानव को नहीं रहा कोई खौफ़।
कहीं बाढ़, कहीं पर सूखा
कभी महामारी का प्रकोप।
यदा कदा धरती हिलती
फिर भूकम्प से मरते बे मौत।
मंदिर मस्जिद और गुरूद्वारे
चढ़ गए भेंट राजनीति के लोभ
वन सम्पदा, नहीं पहाड़, झरने
इनको मिटा रहा इंसान हर रोज़।
सबको अपनी चाह लगी है
नहीं रहा अब प्रकृति का शौक
धर्म करे जब बातें जनमानस की
दुनिया वालों को लगता है जोक।
कलयुग में अपराध का
बढ़ा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख।

पैसे की सीमा

स्वाति
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

पैसा किताब खरीद सकता है-विद्या नहीं।
पैसा संगीत खरीद सकता है-स्वर नहीं।
पैसा डॉक्टर खरीद सकता है- जीवन नहीं।
पैसा मूर्ति खरीद सकता है- भगवान नहीं।
पैसा शरीर खरीद सकता है- आत्मा नहीं।
पैसा नारी खरीद सकता है-पत्नी नहीं।
पैसा लड़का खरीद सकता है- बेटा नहीं।
पैसा आराम खरीद सकता है-चैन नहीं।
पैसा तलवार खरीद सकता है-साहस नहीं।

जिन्दगी के स्टेटस

शीबा परवीन
बी.ए.-तृतीय वर्ष

मैं कुछ खास तो नहीं हूँ दुनिया में, लेकिन मेरे जैसे लोग कम हैं।

खुश हूँ मैं.....क्योंकि मुझे सपनों से ज़्यादा अपनों की फिक्र है।

हो सके तो दिलों में रहना सीखो, गुरूर में तो हर कोई रहता है।

गलतियाँ कर सकती हूँ, पर किसी का गलत नहीं कर सकती।

सोच ब्रांडेड होनी चाहिए, कपड़े नहीं।

ज़िन्दगी को रिवाइंड में नहीं, प्ले मोड में जीना चाहिए।

लाइफ का फण्डा कहता है, बातें उन्हीं से करो जिनसे करना पसंद हो

बट आई वांट टू टेल यू

बातें उन्हीं से करो जिन्हें आपकी बातें सुनना पसंद हो।

जिन्दगी ने दिए है बहुत धोखे, बट कोई बात नहीं इट्स ओके

लाइफ तो एक फोटोग्राफी है, उसे अच्छे से एडिट करो, फिर देखो ये दुनिया उसे कितना लाइक करती है।

मुझे दोस्ती करनी है वक्त के साथ, सुना है ये अच्छे-अच्छे को बदल देता है।

कुछ लोगों ने मुझसे कहा- बहुत बदल गई है यार तू... मैंने मुस्कुराकर कहा- लोगों के हिसाब से जीना छोड़ दिया है मैंने।

जो लोग पीठ पीछे मेरी बुराई करते हैं न, उन्हें मैं बहुत पसंद करती हूँ, क्योंकि ये वो लोग हैं जो नि:शुल्क मेरा प्रचार करते हैं।

गुस्से के तेज़ लोग अक्सर दिल के साफ हुआ करते हैं।

हमेशा ज़िन्दगी में ऐसे लोगों को पसंद करो, जिनका दिल चेहरे से ज़्यादा खूबसूरत हो।

नौकरी

अंकेश कुमार
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

बड़ी हसीन होगी तू ऐ नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं
सुख चैन खोकर, चटाई पर सोकर
सारी रात जागकर पन्ने पलटते हैं
दिन में तहरी और रात को मैगी
आधे पेट ही खाके तेरा नाम जपते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।
अंजान शहर में छोटा सस्ता रूम लेके
किचन बेडरूम सब उसी में सहेज के
चाहत में तेरी अपने माँ-बाप और
दोस्तों से दूर रहते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

राशन की गठरी सिर पर उठाये
अपनी मजबूरियाँ और मायूसी खुद ही छुपाये
खचाखच भरे ट्रेन में बिना टिकट के
रिस्क लेके सफर करते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं
इंटरनेट अखबारों में तुझको ही तलाशते हैं
तेरे लिए पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते-पढ़ते बत्तीस साल
तक के जवान
कुँवारे फिरते हैं
बड़ी हसीन होती तू ऐ नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

आओ फिर दीप जलाएं

(अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा रचित)

प्रस्तुति
शीतल
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतरतन का नेह निचोड़े, बुझी हुई बाती सुलगाए
आओ फिर दीया जलाएँ।
हम पड़ाव को समझे मंजिल
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्तमान के मोह जाल में, आने वाला कल न भुलाएँ
आओ फिर से दीया जलाएं।
आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का दर्ज बनाने,
नर दधीचि हड्डियाँ लगाएँ
आओ फिर से दीया जलाएं।

शायरी

साक्षी देवी
बी.कॉम.-प्रथम वर्ष

ले आँख मीच अन्याय देख
खून नहीं वह पानी है
हिन्दी से जिसको प्यार नहीं
वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

प्रेरणा शहीदों से अगर हम नहीं लेंगे
आजादी ढलती हुई साँझ हो जाएगी।
शहीदों की पूजा हम नहीं करेंगे,
तो यह मानो वीरता बाँझ हो जाएगी।

अंजान है वो व्यक्ति जो गुरूओं का अपमान करते हैं।
अरे गुरू तो वो कोहिनूर है जिन्हें देखकर भगवान भी प्रणाम करते हैं।

शिक्षक

सिमरन
बी.कॉम.-प्रथम वर्ष

माँ-बाप से भी ज़्यादा ऊँचा मान होता है
भारत में शिक्षकों का सम्मान होता है।
प्यार से डाँट से या कभी इंकार से
शिष्यों के लिए शिक्षक वरदान होता है।
मिट्टी को कोहिनूर सा बनाना
नींव के ईटों में योगदान होता है।
ज्ञान का भण्डार इनके चरणों में
रोम-रोम इनसे प्रकाश मान होता है।
जीवन अंश 'मानस' चरणों में है अर्पण
आँख खोल देता है कृपानिधान होता है
भारत में शिक्षकों का सम्मान होता है।

किताब

आशु
बी.ए.-प्रथम वर्ष

सरस्वती माता ने ज्ञान का वरदान दिया
किताबों को पढ़ने का वरदान दिया।
किताबों में है जो ज्ञान
वो ज्ञान किसी और में नहीं
किताबें कभी ग़लत नहीं सिखाती
देती है हमें हमेशा ज्ञान।
किताबे हैं ईश्वर के समान
न करो कभी इनका अपमान
ज्ञान है यह हमको देती
करो इनका सदा सम्मान।
किताबें कभी धोखा न देंगी
देंगी हमेशा किताबें हमारा साथ
ज्ञान करो इनका मन से प्राप्त

देवी ज्ञान माता देवी हमेशा साथ।
छोड़ दे साथ सारा संसार
न छोड़े किताबें कभी हमारा हाथ।
जानता है यह, ये सारा संसार
कि सच्ची मित्र है हमारी किताब।
किताबें हैं कितनी अनमोल
ज्ञान है इनका बड़ा सर्वश्रेष्ठ
खरीद सकते हो तुम कुछ भी
खरीद नहीं सकते किताबों का ज्ञान।
बुरा है आज का संसार
करता न किताबों का सम्मान
पर्चे फाड़ किताबों के
करता है किताबों का अपमान।

शांति की तलाश

मनीषा
बी.ए.-प्रथम वर्ष

शांति इंसान के अंदर ही
है उसे बाहर तलाश करने
का कोई फायदा नहीं है
आप चाहे कितने भी
पवित्र शब्दों को पढ़
या बोल लें लेकिन
जब तक उन पर
अमल नहीं करते
उसका कोई फायदा नहीं है।
हर इंसान को यह
अधिकार है कि वह
अपनी दुनिया की
खोज स्वयं करे।
मैं कभी नहीं देखती कि
क्या किया जा चुका है
मैं हमेशा देखती हूँ कि
क्या किया जाना बाकी है।
हम अकेले पैदा होते हैं
और अकेले ही मृत्यु
को प्राप्त होते हैं
इसलिए हमारे
अलावा कोई और
हमारी किस्मत का
फैसला नहीं कर सकता।
अगर आप वाकई में
अपने आप से प्रेम
करते हैं तो आप
कभी भी दूसरों को
दु:ख नहीं पहुँचा सकते।
घृणा-घृणा करने से
कम नहीं होती
बल्कि प्रेम से
घटती है यही
शाश्वत नियम है।
अतीत पर ध्यान
मत दो भविष्य का
सपना भी मत देखो
वर्तमान पर ध्यान
केन्द्रित करो।

जीवन बीत चला

शीतल
बी.एससी.-द्वितीय वर्ष

कल कल करते आज
हाथ से निकले सारे
भूत भविष्य की चिंता में
वर्तमान की बाज़ी हारे
पहरा कोई काम न आया
रंग्रशट रीत चला
जीवन बीत चला।

हानि लाभ के पलड़ों में
तुसत जीवन व्यापार हो गया
मोल लगा बिकने वालों का
बिना बिका बेकार हो गया
मुझे हाट में छोड़ अकेला
एक-एक कर मीत चला
जीवन बीत चला

अँधेरी रात

गुरुप्रीत
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

अँधेरी ये रात
सपनों की सौगात
हज़ारों इसमें सपने
फिर भी नहीं है अपने
नहीं भाती अँधेरी रात
भोर की किरण करती सौगात
भोर की किरणों को
सहारा बनाकर चलना सीख रही हूँ
अँधेरी ये रात
इसे उधेड़ना सीख रही हूँ।

क्या लिखूँ

रूपा सैनी
बी.ए.-प्रथम वर्ष

महाविद्यालय की पत्रिका छप रही थी
मिला मुझे यह समाचार
सोचा मैं भी लिख डालूँ लेख दो-चार
कविता लिखूँ कहानी लिखूँ या फिर कोई लेख
इसी सोच में बैठी मैं सिर तकिए पर टेक
पूछा भैया विषय बताओ या कोई प्रसंग
जिसे पढ़े मज़े से सब लोग हो न कोई तंग
इन्हीं विचारों से खोकर जब दिमाग होने लगा खाली
तब मैंने टूटे फूटे शब्दों में यह कविता लिख डाली।

भूल

अनिल
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

जो भूल कर जाए उसे नादान कहते हैं
जो भूल करता रहे उसे मूर्ख कहते हैं
जो भूल करके मुस्कुराए उसे शैतान कहते हैं
जो भूल कर भूल से सीखे उसे बुद्धिमान कहते हैं
जो कभी भूल न करे उसे भगवान कहते हैं

विश्वास कर्म पर

समता
बी.ए.-प्रथम वर्ष

पावक सा था मन मेरा
फिर भी यूँ ही भटकती रही
नभ की नीड़ पकड़े यूँ ही
मैं चलती रही...
भाग्य का हाथ छोड़ कर्म
को साथ लिए चलती रही
अनजान परिणाम से फिर
भी नभ की नीड़ पकड़े यूँ ही
मैं चलती रही.....
सफलता मिलेगी मुझे यह
विश्वास पा मनको तभी
तो कर्म में विश्वास करती
रही नभ कि नीड पकड़े यूँ ही
मैं चलती रही....

दुनिया का बोझ

शिवानी कपूर
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

दुनिया का उठाकर बोझ
खुद एक बोझ कहलाई है
हारकर अपनी खुशी, जीत में दु:ख ही लाई है
होठों पर लाकर हँसी, आँखों की नमी छुपाई है
बीवी बनकर किसी का घर बसाया
तकलीफें सहकर माँ कहलाई है
अँधेरे में रहकर भी रोशनी बनी खुद
फिर भी क्यों ये दुनिया को नही दिख पाई है।
आसमान से ऊँचा है इसका सिर
समंदर से गहरी इसकी गहराई है
फूल से भी नाजुक तन है इसका
पर्वतों से भी कठोर इसकी परछाई है
पहेली है ये अजीब कितनी
सुलझ कर भी नहीं सुलझ पाई है
हाय रे! यह कैसी किस्मत
एक लड़की लेकर आई है।
माँ तूने भगवान को जना है
संसार तेरे ही दम से बना है
तू मेरी पूजा है मन्नत है मेरी
तेरी ही कदमों में जन्नत है मेरी।

आस

दुष्यंत शर्मा
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

बन्धन दो जीवन भर का
बन्धन का आभास न दो
मृग तृष्णा हो जाए जीवन
ऐसी मुझको प्यास न दो
मुट्ठी भर देदो अपनापन
ये सारा आकाश न दो
बस कुछ क्षण देदो अपने
लोगों का उपहास न दो
क्षण भंगुर है प्यार तुम्हारा
तुम ऐसा विश्वास न दो
सुधापान अधिकार मुझे दो
यूँ निर्जल उपवास न दो
प्रणयदान दे दो मुझे
मुझको झूठी आस न दो
अंतिम हो जाए जीवन
ऐसी कोई साँस न दो

मेरे मन की अभिलाषा

स्वाति
बी.ए.-प्रथम वर्ष

चाहती हूँ मैं इस संसार में
कुछ नाम कमा के जाऊँ
पढ़-लिखकर महान बनकर
सबके मन को भाऊँ।
चाहती हूँ मैं सभी लोगों में
प्रेम भावना लाऊँ
जो अशिक्षित बने हैं
उन्हें शिक्षित बनाऊँ
देख-देखकर मुझे दुनिया वाले
देखते ही रह जायें
और मेरी प्रेम भावना
वो सबको बतलाए
चाहती हूँ मैं नाम कमाना
और ऊँचे पद पर जाऊँ
समाज के सभी बच्चों को
अपने साथ आगे बढ़ाऊँ
चाहती हूँ मैं अपनी इच्छा
पूरी करके जाऊँ
समाज में एक टीचर बनकर
बच्चों को शिक्षा दिलाऊँ।

जीवन में अनमोल वचन

अनु वर्मा
बी.ए.-प्रथम वर्ष

दुनिया का सबसे बड़ा कार्य हमारी व आपकी मेहनत है।
जो हाथ सदा सेवा के लिए उठते हैं, वे प्रार्थना करने वाले हाथों से भी पवित्र होते हैं।
स्वार्थ में अच्छाईयाँ, ऐसे खो जाती हैं जैसे मानो समुद्र में नदियाँ।
दुनिया का सबसे बड़ा ज़ेवर उसका अपना चरित्र होता है।
धन से पुस्तक मिलती है, किन्तु ज्ञान नहीं,
धन से आभूषण मिलते हैं, किन्तु रूप नहीं।
इस तरह न खर्च करो कि कर्ज़ा हो जाए।
इस प्रकार कमाओ कि पाप न हो जाए।

कविता

नुसरत
बी.कॉम-द्वितीय वर्ष

इस जीवन की चादर में
साँसों के ताने बाने हैं
दु:ख की थोड़ी सी सलवट है
सुख के कुछ फूल सुहाने हैं
क्यों सोचें आगे क्या होगा
अब कल के कौन ठिकाने हैं
ऊपर बैठा वो बाज़ीगर
जाने क्या मन में ठाने है
चाहे जितना भी जतन करे
भरने का दामन तारों से
झोली में वो ही आएँगे
जो तेरे नाम के दाने हैं....

भारत के वीर जवान

अमजद
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

नाज़ हमें है उन वीरों पर
जो मान बढ़ाकर आए हैं
दुश्मन को घुसकर के मारा
शान बढ़ाकर आए हैं।
मोदीजी अब मान गए हम, 56 इंची सीना है
कुचल मसल दो अब उन सबको,
जिन्होंने चैन हमारा छीना है
और आस है बड़ी वतन की, अरमान बढ़ाकर आए हैं।
नाज़ हमें है उन वीरों पर, जो मान बढ़ाकर आए हैं।
एक मरा तो 100 मारेंगे, अब रीत यही बन जाने दो
लहू का बदला सिर्फ लहू है, अब रीत यही बन जाने दो
गिन ले लाशें जाकर दुश्मन, श्मशान बढ़ा कर आए हैं
नाज़ हमें है उन वीरों पर, जो मान बढ़ाकर आए हैं
अब बारी उन गद्दारों की, जो घर के होकर डरते हैं
भारत की मिट्टी का अन्न खाते हैं, मगर उसी पर हँसते हैं
उनको भी चुन-चुन कर मारेंगे, ऐलान बड़ा कर आए हैं
नाज़ हमें उन वीरों पर, जो मान बढ़ाकर आए हैं
लेंगे बदला दुश्मनों से उनका, जो शहीद होकर आए हैं
नमन है उन वीरों को, जो तिरंगे में लिपटकर आए हैं
नाज़ है हमें उन वीरों पर, जो मान बढ़ाकर आए हैं।

शिक्षक का ज्ञान

मोनिका
बी.ए.-प्रथम वर्ष

नन्हे से कदमों को लेकर बढ़ चले हम ज्ञान की ओर
कभी न रूकेंगे कभी न झुकेंगे बढ़ चले हम ज्ञान की ओर
हम सब उनको शीश झुकाते जिनको ज्ञान की देवी कहते
वो ही ज्ञानी, वो ही महाज्ञानी ले जाती जो ज्ञान की ओर
नन्हे से कदमों को लेकर बढ़ चले हम ज्ञान की ओर
देकर माँ हमको सहृद बुद्धि जीवन को जीना सिखलाती
सत्य झूठ की राह बताती सबको ज्ञान की ओर ले जाती
अच्छी-अच्छी बातें सिखलाती हम सब चलते हैं इस ओर।
नन्हे से कदमों को लेकर बढ़े चले हम ज्ञान की ओर
अँधकार से लेकर जाती हमको उजाले की ओर
कभी गिरकर कभी सँभलकर मंज़िल तक
हमको पहुँचाती आओ बढ़े चले उस ओर।
नन्हे से कदमों को लेकर बढ़ चले हम ज्ञान की ओर
उन तक जो हमको पहुँचाते
ईश्वर की पहचान बताते
उनको कहते हैं हम शिक्षक
जिनको हम सब शीश झुकाते
ले जाते हमें वही इस ओर
नन्हे से कदमों को लेकर बढ़ चले हम ज्ञान की ओर

अडिग मन

श्रेव्या धीमान
बी.ए.-प्रथम वर्ष

तुम धीर बनो
तुम वीर बनो
सागर की भांति
गंभीर बनो।
मन अचल रखो
मन अडिग रखो
पर्वत की भाँति
स्थिर रखो
तुम कर्म करो
तुम धर्म करो
रेशम की भाँति
खुद को नरम रखो

-----x-----

कविता

श्रेव्या धीमान
बी.ए.-प्रथम वर्ष

आ गई है महाविद्यालय की पत्रिका
छा गई है महाविद्यालय की पत्रिका
बच्चों के दिल में समा गई पत्रिका
हर जगह देखो, छा गई पत्रिका
मेरा फोटो आया है
महाविद्यालय की मैग्ज़ीन में छाया है
दिल में खुशियाँ लाया है
दोस्तों को भाया है
मेरे लेखन का सुधार होगा
जीवन का सुधार होता
आ गई है महाविद्यालय की पत्रिका
छा गई है महाविद्यालय की पत्रिका

-----x-----

विचार

उस्मान आलम
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

गरीब वह नहीं जिसके पास कम है, बल्कि वह जो अधिक चाहता है।
अँधेरी रात कितनी भी अँधेरी क्यों न हो, सूर्य आने के बाद समाप्त हो ही जाती है।
शिक्षक एवं शिक्षार्थी एक दूसरे के पूरक एवं पहचान हैं।
पुरूषार्थ वह है जो मानव को सप्रयास, प्रयत्नशील व महान बनाता है।
श्रेष्ठ ग्रन्थों को पढ़कर नहीं, जीवन में ग्रहण ही व्यक्ति महान बनता है।
भाषा बुद्धि का उपकरण मात्र है, जिसका सावधानी पूर्वक प्रयोग हो।
समय मूल्यवान है, आज का काम कल पर मत छोड़ो।
अगर सूरज की तरह चमकना है, तो सूरज की तरह जलना सीखो।

कॉलेज की दुनिया

मुनिश्ता अंसारी
बी.एससी.-प्रथम वर्ष

है दिल में जोश साँसों में तूफां
ये है अपनी कॉलेज की दुनिया
पढ़ना-लिखना तो चलता ही रहेगा
ऐसा तो कर कोई कुछ नहीं कहेगा।
यहाँ आके बस बिन्दरा हो जाओ।
ऊपर वाली छत पे गप्पे लड़ाओ।
लंच में कैन्टीन में चाय पीके आना।
इसके बाद लैक्चर में फिर नींद का बहाना।
इकट्ठे होकर एसाइन्मेंट बनाना
लास्ट डेट को सब्मिट कराना।
क्लास में कभी भी ध्यान नहीं
अरे! लैक्चर लगाना आसान नहीं
मच गया शोर हो गई लड़ाई
किसी की शर्ट तो किसी की टाई
अगले ही दिन ये कैसे हुआ ठंडा।
दादागिरी करने का सारा ये फंडा।
मानते हैं ये अपने आप को डॉन।
कॉलेज के बाद इन्हें पूछेगा कौन।
अरे छोड़ो ये झगड़े ध्यान लगाओ
कुछ भी करो बस पास हो जाओ।
दोस्तों में कभी-कभी रूठना मनाना
मिल के सब की खिल्ली उड़ाना।
मैडम भी आए तो उनको सताना
रोज़ लेट आने का नया बहाना
क्या कॉलेज में तू यही करने आता है।
ऐश के साथ-साथ यहाँ पढ़ना भी चाहिए
लाईफ बनानी है तो चमनलाल में आइए
कुछ भी कहो कॉलेज मस्त है
यही तो दिन है, जो याद आयेंगे
सोचो दोस्तों के बिन कैसे जी पायेंगे
लगता है मुझे ये गाना है अधूरा
बैठ के इसे फिर कभी लिखूँगी पूरा।

जिन्दगी की कहानी

साक्षी
बी.ए.-द्वितीय वर्ष

जिन्दगी को इतनी गंभीरता से
मत लेना यारों
यहाँ से जिन्दा बचकर
कोई नहीं जाएगा।

फूलों की तरह महकते रहो
सितारों की तरह चमकते रहो
किस्मत से मिली है ज़िन्दगी
खुद भी हँसो
और, औरों को भी हँसाओ।

शिक्षक वर्ग

बैठे हुये (बाँये से दाँये)– डॉ. मौ. इरफान, डॉ. प्रभात कुमार सिंह, डॉ. देवपाल, श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबंध समिति), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य), डॉ. दीपा अग्रवाल, डॉ. तरूण कुमार गुप्ता, डॉ. किरन शर्मा

खडे हुये(बाँये से दाँये)– श्री विमलकान्त तिवारी, डॉ. मीरा चौरसिया, डॉ. अनीता रानी, कल्पना पँवार, डॉ. विधि त्यागी, डॉ. अपर्णा शर्मा, डॉ. ऋचा चौहान, श्रीमति शबनम

द्वितीय पंक्ति (बाँये से दाँये)– श्री विपुल सिंह, श्री विनीत कुमार, श्री राजेश कुमार, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, श्री कुलदीप कुमार, डॉ. नीशू कुमार, श्री आशुतोष शर्मा, श्री नवीन कुमार, डॉ. नवीन कुमार, डॉ. सूर्यकान्त शर्मा

नवागत शिक्षक एवं कार्मिक

डॉ. अरविन्द कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. नीतू गुप्ता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

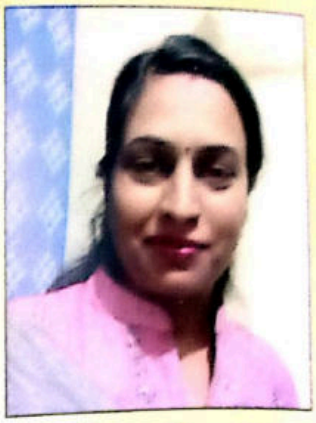

श्रीमती अनामिका चौहान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. हिमाशु कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. पुनीता शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

डॉ. दीपिका सैनी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

श्री विदित कौशल
लेखाकार

श्रीमती मंजूलता
उप सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

सुश्री वैशाली
प्रयोगशाला सहायक

प्रयोगशाला सहायक वर्ग

बैठे हुये (बाँये से दाँये)– श्री रामकुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबंध समिति), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य)
खडे हुये (बॉये से दॉये) प्रथम पंक्ति – श्री अमित बहादुर, कु. सोनिया, प्रणीता भण्डारी, कु दीपाक्षी शर्मा, श्रीमति प्रियंका शर्मा, श्रीमति रीना गुप्ता
(बाँये से दाँये) द्वितीय पंक्ति– श्री नवेद आसिफ, श्री भुवनचन्द ब्रजवासी, श्री अभिषेक, श्री जितेश बगडवाल, श्री गौरव अग्रवाल

बैठे हुये (बाँये से दाँये)— श्रीमति मन्जू रानी, श्री दिनेश कुमार (कार्यालय अधीक्षक), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य), श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष, प्रबंध समिति), श्री अतुल हरित (कोषाध्यक्ष), श्री निशिथ कुमार

खड़े हुये (बाँये से दाँये)— श्री विपिन कुमार, श्री विशाल कुमार, श्री दीपक चौधरी, श्री दिनेश कौशिक, श्री सुमित कौशिक, श्री रविन्द्र सिंह, श्री सचिन शर्मा

बैठे हुये (बाँये से दाँये)– श्री दिनेश कुमार (कार्यालय अधीक्षक), डॉ. सुशील उपाध्याय (प्राचार्य), श्री राम कुमार शर्मा (अध्यक्ष प्रबंध समिति), श्री अतुल हरित (कोषाध्यक्ष)
खडे हुये (बाँये से दाँये) प्रथम पंक्ति– श्री सत्तार, श्री दुष्यन्त शर्मा, श्री अंकुर, श्री फारूख, श्री प्रदीप कुमार, श्रीमति अर्चना
(बाँये से दाँये) द्वितीय पंक्ति– श्री अनुज, श्री अनुराग पाल, श्री अर्जुन, श्री विशाल, श्री अमित

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह–2018

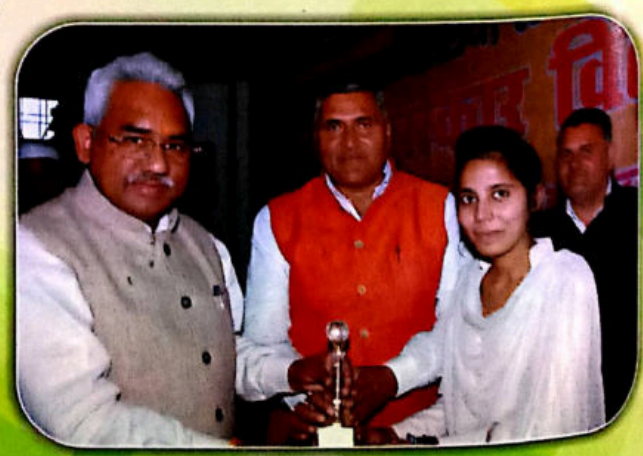

ENGLISH SECTION

रविना
B.A 1st yr

Anti-reflection Coating

Dr. Arvind Kumar and Mr. Vipul Singh
Assistant Professor, Deptt. of Physics

What is Antireflection Coating

Reflection is a natural phenomenon, which occurs when light passes through one medium to another medium. For instance, ~9% of incident light is lost due to reflection at air/glass interface, which causes a performance deterioration of many optical and electronic devices. Therefore, this reflection loss cannot be ignored and should be minimized. Antireflection (AR) coatings/structures provide a solution to suppress the reflection loss. These AR coating applied to the surface of lenses and other optical elements to avoid the reflection loss (as shown in Fig. 1). For example, in typical imaging and display systems, this improves the efficiency since less light is lost. For solar energy application, efficiency of PV and solar thermal devices can be enhanced by utilizing the AR coatings/structures. In complex systems such as a telescope, the reduction in reflections also improves the contrast of the image by elimination of stray light.

Figure 1: Comparison between plain (left) and AR coated glass(right).

Basic principle of AR coatings

To achieve the AR property, two conditions should be satisfied for zero reflection :

(i) The optical thickness of the coating/structure should be ë/4, where ë is the wavelength of the incident light and (ii) the refractive index of the coating/structure (n_c) should be $\sqrt{n_{air} \times n_{glass}}$, where n_{air} and n_{glass} are refractive indices of air and glass substrates, respectively. Refractive index of glass is approximately 1.53, therefore, the ideal value of n_c would be 1.23 to achieve minimum reflection at glass/air interfaces. However, homogeneous coatings/structures, which satisfy these two conditions, cannot minimize the reflection over a broad range of wavelength. For broadband AR properties the refractive index should change gradually rather than a uniform refractive index in the coatings.

Examples of AR structures exist in nature

There are many motivating examples of sub-wavelength nanostructures present in the natural world, which exhibits excellent broadband AR effect over a wide range of angles of incidence. For instance, hawk moths wings (*Cephonodes* and *Cryptotympana*), *Greta oto* butterfly wing, Cicada wings, moth eyes, have been inspired researchers to mimic these structure on various substrates for optical and electronics applications. To achieve the high quality AR nanostructures, the feature size must be restricted to sub-wavelength or else it would otherwise reduce the transparency *via* light scattering. Additionally, for broadband omnidirectional AR, the aspect ratio of these nanostructures should be as high as possible.

Applications of AR Coatings

AR coating can be used in various optical and electronic applications such as eye glasses, camera lenses, LEDs, sola cells, displays, etc. For example, AR coating on eye glasses improves vision, therefore, reduces eye strain on eyes. In addition, these coating makes eyeglasses look more appealing. By eliminating reflections loss, AR coating also makes your eyeglass lenses nearly invisible so that your eyes and facial expressions can be seen more clearly in all lighting conditions (as shown in Fig. 2). These coatings have also been applied for solar energy application. When these coatings are applied to solar panel glasses, efficiency of solar panel can be improved (right side of Fig. 2). This enhancement is ascribed to the fact that AR glass allows more light to incident on solar cell, and hence generates more photocurrent.

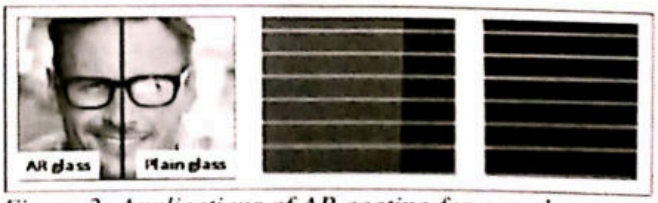

Figure 2: Applications of AR coating for eye glasses (left) and for solar cell (right)

IMPORTANCE OF HOME SCIENCE IN OUR LIFE

Anamika Chauhan
Assistant Professor, Deptt. of Home Science

Home Science is concerned with the home, health and happiness of all the people living in it. As a field of specialization, Home Science draws its content from courses in both science and art. Thus, representing an interdisciplinary field that prepares young learners for the two most important goals in their lives - caring for their home and family as well as preparing for a career or vocation in life. Hence, its scope extends to activities associated with setting home based enterprises as well as consultancies.

Combination of science and art holds true in all the areas of Home Science. Some of these are as follows:

The interpersonal communication amongst family members;
The family that you care for;
The food that you eat;
The house that you live in;
The clothes that you wear;
The resources that you use;
The environment around you and the skills and environment that can lead to successful career.

Home Science is for both Boys and Girls:

- Both have to succeed in an increasingly competitive world.
- Both have to share household responsibilities and tasks.
- Both need to manage resources.
- In case of a problem they have to solve it together with other family members.
- Home Science offers varied vocational and professional avenues for both boys and girls.
- Joint knowledge and skills help to improve the standard of living.

AREAS OF SPECIALIZATION IN HOME SCIENCE

Home Science covers a few areas of specialization such as :-

1.Food and nutrition
2.Communication and Extension
3. Resource Management
4.Human Development
5.Fabric and apparel science.

We learn and develop good interpersonal relationships within and outside the family. We also learn to manage our resources like time, energy and money so that we get maximum satisfaction. Home science also involves learning the skills intending all this useful to our family or community, especially the underprivileged for better life.

CAREER OPPORTUNITIES IN HOME SCIENCE

Before you study the different opportunities available in the subject of Home Science, you must understand the concepts of wage employment and self-employment. To understand these concepts, let us take an example - a tailor who sets up a tailoring shop is self-employed whereas he/she is said to be in wage employment when he/she works in a garment factory and gets a salary or wage. Wage employment means that you work for another person and receive wages or salary for your services. Self-employment means that you are the owner of an enterprise which you run and finance.

You have already read that specializing in Home Science may choose to work in salaried jobs or as self-employed entrepreneurs or as consultants using any of the skills that they may have developed.

A NOTE ON DETERMINISTIC AND PROBABILISTIC MODELS OF THE INVENTORY SYSTEM

ANU SAYAL
PH.D SCHOLAR, DEPARTMENT OF MATHEMATICS,
UTTARAKHAND TECHNICAL UNIVERSITY,
DEHRADUN-248001. UTTARAKHAND. INDIA.
E-MAIL ID: anu.sayal.07@gmail.com

A. P. SINGH
ASSOCIATE PROFESSOR, DEPARTMENT OF
MATHEMATICS, S.G.R.R.(PG) COLLEGE.
DEHRADUN-248001.UTTARAKHAND. INDIA

DEEPAK AGGARWAL
ASSOCIATE PROFESSOR, DEPARTMENT OF
MATHEMATICS, GRD IMT.
DEHRADUN-248001.UTTARAKHAND. INDIA

I. INTRODUCTION:

Inventory refers to the stock of goods which are preserved by an organisation to fulfil the future requirements. The inventory is primarily made up of raw materials, work in progress goods, finished goods and supplies. The basic motive behind maintaining a proper inventory is that the level of sale, time of production, demand as well as production time are unpredictable. Thus for the smooth functioning of any organisation it is mandatory to maintain proper system of the inventory. The inventory management primarily focuses on the fulfilment of the following objectives:

1. To ensure the independence of the operations.
2. To meet in the variation of the demand of products.
3. To allow a flexible schedule of production.
4. To ensure there is no time lag in supply of raw material.

The proper management of the inventory system serves as a sort of buffer in case of fluctuating demands and non-availability of the raw materials. The primary motive of the inventory management is to minimize the total cost of production of the commodity and to maximize the overall profit of the inventory system.

I.I INVENTORY COSTS:

Following costs are involved in the inventory system:

1. Holding or carrying cost: the cost required to hold the goods, commodities or the other economic resources in an inventory system.
2. Ordering cost: the cost required for ordering the calling, transportation or receiving of the commodities/ raw materials.
3. Shortage cost or the stock out cost: cost incurred due to shortage of goods or specific sales.
4. Setup or production cost: the cost incurred for the production process.
5. Total cost of the commodity.

I. II INVENTORY MODELS:

Depending on the pattern of demand the models of the inventory system can be classified as follows:

1. Deterministic inventory model: in which the rate of demand of the commodity is assumed to be constant.
2. Probabilistic inventory model: the rate of demand of the commodity fluctuates and it is expressed in the form of probabilistic terms.

Depending on the frequency at which the orders are being placed for the procurement of the inventory we have the following two types of models of the inventory system.

1. Single period models: In these models the orders are placed only once and they are referred to as one time ordering models.
2. Multi-period models: In these models the orders are placed numerous times over the entire cycle of production. These models based on their pattern of

the pattern of reviewing the inventory system they are further classified as follows:

1. Continuous review models or fixed quantity of Q system.
2. Periodic review models or P system.

II. DETERMINISTIC MODELS:

Every inventory system faces the problem of depletion of stock level with the passage of time and its replenishment with the arrival of new stock. This situation is represented by the simple model of the inventory system known as the Economic order quantity model. By the minimization of the total cost of the inventory system the amount of quantity to be ordered and point of reorder can be determined with ease. The total cost of the inventory system is expressed as below:

TC = TH + TO + TS + d * c

Where TH represents the holding cost.
TO represents the ordering cost.
TS represents the shortage cost.
d represents the demand of the commodity
c represents cost of each item.

The deterministic models are of the following types:

1. Single-item static (EOQ) model with no shortages
2. Single-item static (EOQ) model with shortages

III. PROBABILISTIC MODELS:

In real life situations the pattern of demand is uncertain therefore the system of the inventory cannot be modelled by the application of the deterministic approach. in such situations probabilistic models are used which are based on the probability distributions. These models are the continuous review models as the inventory level is being monitored on a continuous basis such that when the level of the inventory drops to the reorder point the new order can be placed.

The probabilistic models are classified as follows:

1. Single-period inventory model with probabilistic demand
2. A stochastic single-period model for Perishable products
3. Stochastic periodic-review models
4. Stochastic Multiperiod Models

As there are various types of models of the inventory system thus it is really tough to decide as to which model should be used by a particular organisation. Thus a combination of different models is used for different items for proper functioning of an organisation.

Passive Smoke Poses Risk to Children

Dr. Vidhi Tyagi
Assistant Professor, Deptt. of Zoology

Third-hand smoke contains the chemicals in second-hand smoke from a cigarette that are deposited on indoor surfaces. People are exposed to these chemicals by touching contaminated surfaces or breathing in the off-gassing from these surfaces. This residue is thought to react with common indoor pollutants to create a toxic mix including cancer causing compounds. These compounds induce double-stranded breaks (DSBs) in DNA, posing a potential health hazard to nonsmokers especially children. So, what is the difference between first-hand smoke, second-hand smoke, and third-hand smoke?

- First-hand smoke is cigarette smoke that a smoker draws into his or her lungs when inhaling from a lit cigarette.
- Second-hand smoke is a combination of exhaled first-hand smoke and the smoke wafting into the air from the end of a burning cigarette.
- Third-hand smoke can be broken down into three distinct parts:

1. Gases and small particles that are suspended for hours in the air of rooms or other closed spaces.
2. Tiny solid particles that settle and stick to surfaces of an enclosed area.
3. Toxins on surfaces or in air that combine with other common indoor pollutants, creating new chemical compounds or more dangerous forms of chemicals in the process.

Scientists have discovered the solid particles in THS fall to surfaces within 20 minutes; some solid matter does remain in the air and can be inhaled into the lungs. Additionally, the levels of some chemicals in second-hand smoke actually increase for a time as the smoke transitions to THS, making breathable air in a room more dangerous.

Three toxic chemicals of this type that have been identified are acrolein, methacrolein, and acrylonitrile. The first two are respiratory and eye irritants, and the third, a highly flammable carcinogenic compound.

Passive Smoke Risks to Children

The chemical fallout that settles on surfaces from the gases and small particles in cigarette smoke isn't good for anyone to be exposed to, but it's especially harmful for small children. They are much more likely to ingest these invisible toxins when touching furniture, floors, and toys because they put their fingers (and toys, etc) in their mouths often.

It should also be noted that THS in the air is a greater risk for babies and young children too, because their respiratory rate is faster. This causes them to inhale more toxins in the same amount of time as someone who is older with a slower rate of breathing.

Bottom Line

We've known for a long time that cigarette smoke is dangerous air to breathe. Now, we also know that second-hand smoke lingers, settles and even transforms into other dangerous chemicals known as third-hand smoke. It is important for your health and those you care about to avoid indoor areas where smoking is allowed. If you have smokers in your family, set a strict boundary about smoking outside.

Importance of Language

Dr. Deepa Agarwal
Assistant Professor, Deptt. of English

Language plays a very important role in our whole life. Language is one of the fundamental approaches to impart and connect with other individuals around us. It keeps us in contact with other individuals. English language is a case for the significance of a dialect since it is the global language and has turned into the most essential dialect to individuals in numerous parts of the world. It is most broadly utilized in conveying far and wide. It is spoken as the first language in many countries. Today most people speak English even when they are not the native speakers. It has become the international language. There are more people who speak English as a second language. English is playing a major role in many sections like educations, medicine, engineering, and business. There are many reasons that make English is the most important language in the world.

The first reason is that even though English is not an official language around the world but it is the most common language used to communicate around by two billion regularly.

The second reason is that learning English is very important and necessary for the business-world. Researchers' show that cross-border business communication is in English and learning it changes our lines.

The third reason English is mostly used in publishing book, making films, music and a lot of entertaining things. The last reason is that 50% of the information on the internet is available in English and easy to access in any website.

The usage of English language has become significant in our daily lives. It is a fact that English language is the language that is used globally now a days. The vast bulk of language teaching is based on the assumption that the learner desires to acquire the ability to communicate with native speakers. However, not all native speakers are identical is the kind of language they speak. All languages have a variety of regional dialects and social/economic/educational registers. In a formal classroom setting, we would usually expect to learn the most important regional dialect (usually that of the principal metropolitan area).

English is not the first international language. It is, however the first truly global languages. People have long been interested in having one language that could be spoken throughout the world. Such a language would help to increase cultural and economic ties and simplify communication between people.

English is used today...

- 75% of the world's mail is in English.
- 60% of the world's radio stations broadcast in English.
- 50% of the world's periodicals are printed in English.
- 80% of the information in the world's computers is in English.
- 44 countries have it as an official language.

Use of English is growing country-by-country internally and for international communication. Modern English, sometimes described as the first global language, is also regarded as the first world language. English is the world's most widely used language in newspaper publishing, book publishing, international telecommunications, scientific publishing, international trade, mass entertainment.

Learning English Can Make You Smarter.

Importance of English language is same as the colors are required to fill a painting. Without colors painting also exist but a colorful world is always better than a colorless universe. Similarly, the importance of English language in life can be understood.

If you know several languages then it is good, if you speak your mother language frequently, it is also wonderful, but having a good knowledge of English language makes you awesome. It is like an extra cheese layer on your piece of pizza.

We all have seen the importance of English language in today's world. On the internet, you find yourself more comfortable in English. If you don't have proper English knowledge then you will get only limited search results and you will gain only half of the knowledge.

When you are rejected by a higher English speaking class only because you cannot interact with them easily. You have great ideas, you know that you are more intelligent than them but due to your

lack of the communicating skill in English, makes you helpless.

After having an excellent academic career you are rejected, by an enterprise only because you can't communicate in the English language. You were always topper of your class but at this stage suddenly you are disqualified, only because of a single reason i.e. No English!

You want to admit your child in a very reputed school of the city but you couldn't because knowledge English to parents is mandatory there. It hurts your emotions, your dreams you have seen about the future of your child.

You want to connect to different people from the world but due to lack of knowledge of English language, you have a limited friends list. You want to make friends, you love to talk to people, and you want to know the people all around the world but how?

You want to share your ideas, thoughts to all over the world, you want to let the people know your opinion about a particular topic but you can't, until you know that how to be perfect in the English language.

All things considered, what are you sitting tight for? Don't hesitate! The sooner you start learning English, the sooner you'll be able to enjoy all of these benefits.

Industrial Importance of Microbiology

Deepakshi Sharma
Lab Assistant, Deptt. of Microbiology

Industrial Microbiology is one of the most preliminary and evergreen branch of science persisting successfully in our country .It is broadly related to the study of the most important living mechanism in this environment, which plays a major role in the recycling phenomenon of our nature,and that's called Micro-organisms, the smallest part of the big world. Microbiology provides not only a great interest and knowledge related to our environment but also embrace us with a wide career prospects in the field of research and development. It is the only field which had made still a connection between human being to its nature alive in all respects.Now a days, this field is not only concerned with scientists research project but also had touched our daily life starting from doing tooth past and ending with sleep in a room having burning mosquito repellent coil. Microbiology has made possible the production of almost all our daily used items like antibiotics, alcohol, drugs,different components such as lactic acid, citric acid] used in drugs, brewery, cosmetics and many more.

The Bachelor of the science program in industrial Microbiology focuses to build up the graduates with high technical skills in the respective field, it is the most fruitful career in the field of research, and students after completing their graduate course are capable enough to be absorbed in some of the pharma companies & research laboratories. It also provides a wider scope in the food and enzyme industry which provide us a wider option to eat food of our choice.

The respective program course the following major areas;-

English and personality development, zoology for the animal study, study of flora community i.e botany ,introduction to basics of computer application , study of chemical compounds, that's chemical my stery referred as chemistry, Introduction of biological compounds with chemistry that's Biochemistry basic genetics for the knowledge of gentic structure of living data in the world, Analytical and Practical Techniques in Microbiology , photo chemical and herbal medicine environment sciences, Biochemical the dynamic food science and Technology, Industrial production of Antibiotics, chemicals Enzymes etc.

Biotechnology- A Modern Tool to Resolve Hindrances in Genetic Improvement in Pulses

Dr. Richa Chauhan
Assistant Professor, Deptt. of Botany

Pulses account for about one fifth of the average under food grains and about one twelfth of their production. Besides, enriching the soil fertility, they play a vital role in balancing the quality of protein in our diet. They are cultivated over an area between 22-24.5 million ha with the production level between 10 to 14.26 million tonnes. There has been improvement of pulses has been assessed at 17 million tonnes by the planning commission for the terminal year of eight plan (1996-97). The import is made to bridge the demand-supply gap to some extent. The import depends upon the price in the internal and external markets, import duty and availability of foreign exchange.

There are number of production constraints in pulses. More than 90% area being under cultivation in rain fed situation, susceptibility to frost, water logging, temperature variation, pest and diseases. The production of pulses can be increased both by increasing the area under cultivation as well as increasing genetic yield potential of genotypes of pulse crops.

There are number of genetic constraints which are responsible for low genetic potential of pulses. However, the following constraints are of paramount importance for geneticist, breeders, cell biologist and molecular biologist for genetic manipulation of pulse crops for increasing genetic yield potential:

1. Narrow genetic base
2. Lack of genetic variability in useable gene pool.
3. Inability to transfer increased input(water, fertilizer)to increase output (seed yield).
4. Inherent susceptibility to diseases and pests.
5. High competition for energy (photosynthesis) for storage protein, vegetative and reproductive growth of plants.
6. Selection history for adaptation (survival) not for yield.
7. Photo-thermal sensitivity.
8. Non-synchronous flowering and maturity.
9. Shattering habit.
10. Low polymorphism at molecular level.
11. Poor response to in vitro culture (recalcitrance).
12. Loss of energy for maintenance of nodules for nitrogen fixation.

Biotechnology and genetic engineering has emerged as potential tool in recent years for genetic manipulation of crop plants. The said technology promise to improve crop productivity, complimenting traditional breeding by decreasing our dependence on harmful chemicals, pesticides, fertilizers and antibiotics etc. Genetic engineering is available to breeders and can supplement conventional practices in improving crop performance. In the past. Agriculture has been an energy and labour intensive industry. Biotechnology offers the opportunity to reduce both these costs.

The tools and techniques of biotechnology can be categorised as follows based on objectives of crop improvements programme:

1. In vitro approaches to wide hybridization
   a. Embryo culture
   b. Ovule culture
   c. Ovary culture
   d. Endosperm culture
2. Induction and selection of new genetic variation
   a. Induction of somaclones
   b. In vitro mutagenesis and cell selection
3. Development of new and noble genotype
   a. Genetic transformation and transgenic development
4. Increasing selection efficiency and precision.
   a. DNA marker and marker assisted selection.
   b. In vitro selection
5. Shortening breeding cycle and fixation of characters .
   a. Anther/pollen culture.
   b. Marker assisted selection.
6. Quantification of genetic diversity and genetic distance and selection of parents.
   a. DNA fingerprinting
7. Early and long conservation of germplasm.
   a. In vitro conservation
   b. Cryopreservation
   c. DNA bank
8. Efficient transportation and distribution of material
   a. Synthetic seeds

Forest Fire and its Impact on Deforestation and Environment in Uttarakhand

Jitesh Bagdwal
Lab Assistant, Deptt. of Computer Science

Area in Uttarakhand

Deforestation is the most serious environmental problem in the Himalayan forest region. The area under present study in Himalayan region of Uttarakhand (fig-0.1).This region is situated between latitudes 29° 44" 25"and31° 27' 25" North and longitudes 77° 27 34" and 81° 02' 22" east and encompasses an area of 53483 sq km. with 848934 population as per 2001 and 10116752 population as per 2011 census. The region forms a compact geographic entity with Nepal east, Tibet in the North, Himanchal Pradesh is the west and Uttar Pradesh in south. The eastern part of the uttarakhand constitutes kumaun division including six districts- Nainital , Pithoragarh, Almora, Champawat, Bageshwar,Udhamsingh nagar. On the western part of Pouri Garhwal, Dehradun, Rudraprayag , Uttarkashi, Chamoli, Tehri Garhwal and Haridwar. District Haridwar and Udhamsingh nagar comes under tarai and wider plans. Uttarakhand is 27th state and 18th biggest state in India. It embraces a great geographical diversity stretching right from Tarai bhabar and doon belt in the south to trans-himalayan region in the north in between lying shiwalik , lesser and greater Himalayan region. Although more than 80% of the area in mountains extends in length 225km. from north to south and breath 310km.from west to east. The altitude varies from about 300m. to more than 7317m and slopes from less than 5 to more than 50. The climate is subtropical at higher elevation, on snow cold mountain tops. However, forest cover is estimated to be above the minimum requirement, according to Forest Department of Uttarakhand 2013-14, According to the Satellite Imageries 2013 -14 ,forest cover is 45.82 percent in the Himalayan region(which is below the minimum requirement of 60 percent as per suggestion of 1952 forest policy). On other hand, the growing fire problems on forest resources, various forms of environmental degradation are evident in different parts of Uttarakhand Himalaya. The major fire episodes and its impact on deforestation is the most serious environmental problem in the Himalayan forest region. Fire is a most important ecological factor and it operates to influence a whole range of biogeographical phenomena. Natural fires are quite common in certain parts of the world .Natural fires means fire started by natural consequences such as lighting .Burning is a common practice in the Himalayan hill and most of the fire are set in the summer months. Fires may be of two broad types viz; accidental and intentional fires. The accidently started fire, is becoming increasingly common due to people's mistakes such as throwing a lit up cigarette or bidi in a dry forest path .Secondly, the intentional fire is a planned fire to modify an ecosystem .Deliberate fire like this has a very long history. In the Himalayan hills, fire is set to the floor by the villagers so to induce a good growth of grass in summer season. Controlled fires are also set by the forest department in some cases, but such fires hardly produce any harmful effect on environment. Uncontrolled fire is the greatest enemy of the standing vegetation .The extent of fire in any landscape depends on the heat of the fire and is determined by the amount of fuel on the ground, the dryness of the fuel ,with the velocity of wind, , atmospheric temperature, steepness of the slope.

Result and discussion

Fire impact on Deforestation and Environment

A large areas of the Himalayan forest degrade each year. There are unmistakable sign of deprivation and poverty in the people who have to depend on such a depleted resource base. Fire is an important factor towards the disappearance of forest. The crown fire is a severe form of fire which burns the whole tree, and usually leads to the death of many species. The surface fire has less ecological impact and the burnt material is confined to the undergrowth species and particularly the organic matter occurring on the forest floor Forest fires damage vegetation to a large extent, harm regeneration and accelerates erosion and above all damages the valuable fauna of the Himalayan forest. Evergreen, semi evergreen and mountain temperate forest are comparatively immune from serious fire hazards. Ground fire destroys the organic matter which is very necessary to maintain an optimum level of humus in the

soil, pine forest are very inflammable in all seasons except in the rains, while in the hot weather their condition becomes very precarious. During summers high radiation which greater insulation period enhance the atmospheric temperature which results in the greater evapotranspiration, and this period seems to be most sensitive to fire. Burning these forests thus offers a constant temptation to evil - doers and those with a grievance, while danger from accidents and carelessness is considerable. Forest fires are the most destructive of all but the protection and management of chir forest is the biggest problem. The main difficulty in the protection of chir [Pinus roxburghi]regeneration is during the first five to ten years of its life. Even a light down hill fire is fatal to one year old seedling and may kill two or three years old plants also. The intensity of damage depends on age and locality factors. In the Kumaun Himalaya, ak and deodar forests suffer most from fire followed by the chir forest. So, when a bed fire does spread into these forests, the damage may be very severe. However, owing to the pressure of rapidly growing population and the increasing tempo of human activities, the forest cover is depleting at an alarming rate which is one of the major cause for environmental degradation in the hilly region. There is annual depletion of forest stock amounting to 3. 76 million cubic meter per annum or an exponential rate of depletion of 5.8 per cent per annum in the U.P. hills. On the other hand, there is average burnt area of forest stock amounting to 1.50 sq km. per year in the Kumaun Himalaya.

The forest fire, apart from removing many micro-vegetation from the ecosystem also destroys much micro-flora and micro-fauna in the topsoil and litter layers. These ecosystem components play a vital role in organic decomposition and soil fertility. Serial development in the micro-vegetation may take many decades, as in the case of forest climax community destroyed by fire. Because, each plant community has an associated animal community and destruction of former by fire has severe repercussions for the leter, besides most fires are followed by some soil erosion and chemicals washed or blown away. These all of the direct influences of fire in forest ecology but there are several indirect consequences which may be of even greater importance. Such as, fire has been slight, damage to branches takes place and fallen, rotting wood accumulates on the forest floor. At these sites insect and fungal populations become established and quickly multiply, spreading

Fig-1-District Wise Forest Fire in Uttarakhand

Si.n.	Name of the districts	Fire Area (in hac.)	No.of Fire Episode	Loss Forest Resources for forest fire
1-	Almora	29.75	17	43125.00
2-	Bagheshwar	17 .00	08	2725.00
3	Champawat	11.00	07	17250.00
4	Pithoragarh	2.00	01	1000.00
5	Nanital	4.00	06	1328.00
6	Rudrapur	17 40	16	1100.00
7	Chamoli	4.75	05	618.75
8	Haridwar	18 .50	11	9250.00
9	Tehri	42.45	28	61675.00
10	Uttarkashi	74.15	54	79425.00
11	Pouri Garhwal	76.50	45	102000.00
12	Rudrapryag	39.00	13	58500.00
13	Dehradun	31.45	32	27025.00
TOTAL-		405021.75	368.75	236

rapidly to point of damage on other trees.There must be some advantages in using fire or man would not have persisted with its use for so long. There is a long history of fire misuse but man can control this factor better than most others which operate in ecosystems. Fire maybe used to reduce the thick layer of raw humus present in the mountain temperate forests which may increase the chances for the establishment of natural regeneration. Fire whilst indirectly assisting the spread of pests and diseases, may also be used to control such spreads by burning out the undergrowth at the correct time of the year the fungus can be prevented from completing its cycle on the nearby trees. Fires may also encourage the growth of certain soil bacteria and a nitrogen-fixing legumes, thus enhancing the soil fertility of the site. Protection from fire is at present one of the most important problems in the Himalayan forests. Repeated annual burring is generally a very poor form of controlled burning and requires vast improvement to reduce the damage done and increase the subsequent safety of the forests concerned. Large amount of labour and capital are invested for raising plantations and if sufficient fire protection measures are not provided, the huge investment may be converted into ashes by fires. Although, there is great difficulty in setting up complex and delicate instrumentation to monitor its precise operation. Therefore, in some sensitive forest areas during fire season ,fire watchers are appointed to help the forest staff in detection and extinguishing fires in the forest. In many areas, early burning of forests and fire lines is usually carried out and local people should help and cooperate with forest officers in extinguishing fire in the forest. Forest control plans are usually for forest fire protection organizations of the hilly areas. In this, each area is classified into different categories from the point of view of fire control depending upon the area, forest type, topography, presence of water sources and various other factors.

Water Pollution in Our Surroundings

Dr. Deepika Saini
Assistant Professor, Deptt. of Zoology

Environmental pollution and food safety are two of the most important issues of our time. Soil and water pollution, in particular, have historically impacted on food safety which represents an important threat to human health. Nowhere has that situation been more complex and challenging than in our country, where a combination of pollution and an increasing food safety risk have affected a large part of the population. Water scarcity, pesticide overapplication, and chemical pollutants are considered to be the most important factors impacting on food safety in our country.

As technology improved, scientists are able to detect more pollutants, and at smaller concentrations, in Earth's freshwater bodies. Containing traces of contaminants ranging from birth control pills and sunscreen to pesticides and petroleum, in our country lakes, rivers, streams, and groundwater are often a chemical cocktail.

Beyond synthetic pollution, freshwater is also the end point for biological waste, in the form of human sewage, animal excrement, and rainwater runoff flavored by nutrient-rich fertilizers from yards and farms. These nutrients find their way through river systems into seas, sometimes creating coastal ocean zones void of oxygen-and therefore aquatic life-and making the connection between land and sea painfully obvious. When you dump paint down the drain, it often ends up in the ocean, via freshwater systems.

In the developed world, regulation has restricted industry and agricultural operations from pouring pollutants into lakes, streams, and rivers. Technology has also offered a solution in the form of expensive filtration and treatment plants that make our drinking water safe to consume. Some cities are even promoting "green" infrastructure, such as green roofs and rain gardens, as a way to naturally filter out pollutants. But this is not the situation in our country, where there is less infrastructure-politically, economically, and technically-to deal with the barrage of pollution threats facing freshwater and all of the species that rely on it.

In India inadequate quantity and quality of surface water resources have led to the long-term use of waste-water irrigation to fulfill the water requirements for agricultural production. In some regions, this has caused serious agricultural land and food pollution, especially for heavy metals. It is important, therefore, that issues threatening food safety such as combined pesticide residues and heavy metal pollution are addressed to reduce risks to human health. The increasing negative effects on food safety from water and soil pollution have put more people at risk of carcinogenic diseases, potentially contributing to 'cancer villages' which appear to correlate strongly with the main food producing areas. Currently in India, food safety policies are not integrated with soil and water pollution management policies. Here, a comprehensive map of both soil and water pollution threats to food safety in India is presented and integrated policies addressing soil and water pollution for achieving food safety are suggested to provide a holistic approach.

As a vastly populous and developing nation, we still dump industrial wastes untreated into waters, polluting the usable water supply. On average, millions of tons of fertilizers and chemicals (Pesticides) are used each year, as a result in our neighborhoods town like "Laksar" and surrounding villages, peoples are reported cancer affected in large number. This number is increasing every year because they are drinking polluted ground water from upper layer. The reverse dumping of industrial waste and toxins has made ground water a major cause of health related issues. This is happening only due to lack of awareness. Movie like 'Irada' shows us a way forward to look into such issues.

In my opinion Public participation and awareness is the only effective way to educate people about preservation and consumption of ground water and avoid health hazards, and achieve sustainable development. Government should create such a development policy which reflects the needs and the desires of the local community. To achieve effective public participation, a full understanding of public attitudes with regard to environmental /development issues is essential. As a premier institution we can make the people in surrounding aware of these issues and educate to take necessary steps.

Women Empowerment

Dr. Aparna Sharma
Assistant Professor, Deptt. of English

Substance: women empowerment is a must for the betterment of our country's future, as women are better manager than men.

Women empowerment is a must for the betterment of our country's future, as women are better manager than men. They can properly manage both her house and office in a systematic way as compared to men. Many of us oppose women education and feel sad when a girl child is born, due to our narrow minded thought process. Now it is on us to decide whether we want a son like Kasab, Nirbhaya rapist on whom the world is ashamed of or we want daughters like, Kalpna Chawla, Lata Mangeshker, who are pride of our country. Till date, a woman has played pivotal role of a mother, daughter, sister and wife, so think if she gets a chance to work for the development of India she will definitely prove herself like Indira Nooyi, Isha Kocchar, Neeta Ambani, and many more that are beautiful example for our country's pride. So, educate your daughter and let her fly in this open sky freely, who knows one day they will also make you feel proud.

We all know that nobody gets everything in their life, but what about those who get nothing from birth till death. They are none other than women of our country, who plays vital role of various characters in our life. Some people of our society feels they just pretend of not getting anything to acquire sympathy. Not just having food, shelter and clothing is enough for the betterment of life. In today's fast moving era, mental peace is the most important essential of our life. This is possible only when nobody will interfere in anyone personal matters unless and until they ask for interference. Everyone should live happily and let others live in their own way that is the basic mantra to live in peace. We talk about women empowerment, but our so called society, don't allow our women to lead their own way of life according to their wish?

Are girls really burden for the family and society? Many girls are now a day's educated enough to survive in a better way than boys, then why in this modern and broad minded era, girls have to compromise and sacrifice more as compared to men? On 8th March we celebrate 'World Women's Day' to give honor and respect to all women of the world. Do really our women getting that honor and respect what they well deserve and what's their right?

We all know, ratio of girls is less as compared to boys in our country, India. And it is due to orthodox mentality of society who wants to have boys and not girls. According to them a daughter can't perform funeral rites of her parents, as their soul will rest is peace after death only when a son did so. On which holy book it is written like this? In some places women are not educated more than men, as they feels in future she has to take care of her family and do household, and if they are educated then who will marry them. Life of a girl becomes hell from the day she comes on this earth till she takes her last breath. We are saying, now the world has changed, there is no difference between boys and girls, both have equal rights to survive on this earth. OK, to some extent I agree with it, in many places girls treated similarly as boys, even they same type of education.

In corporate and public sectors also women are given same wages according to their labor in their professional life too. If there is equality in everything, then why our educated girls family has to give a huge amount of dowry for marriage? Marriage is a bond between two souls, and a bond between two families, where in today's date girls father also has same expenditure on her upbringing as boys, then why should a bride gets her soul mate at the cost of dowry? According to law, give and take of dowry is a crime and a punishable offence, but a daughter's father is helpless to fulfill the huge demand of boy's family for sake of their daughter's happy married life.

According to me, Dowry means a big amount of money paid to buy a bridegroom for a girl, to have a licensed husband. Just like we purchase vegetables from the vendor and use it according to our wish, so in that way after buying husband, a wife should use him according to her desire, but nothing happens like that. A daughter's father betroth her to a guy

with dowry in hope that he and his family will love, respect and take all care of her after marriage, but everything seems fake. Some families in Haryana, Punjab and many other states it is openly done which is visible, but in many places, they are internally tortured, so it gets lime lighted very rarely. In this case, what could a helpless, innocent girl can do, if she goes and makes voice against them, their rigid stone-hearted husband and his family treats like an animal and force her to commit suicide.

For this reason many daughters don't want to marry when they observe the worse cases of women after their married life that don't get freedom and rights to come out of the cage of their in-laws house.

Brutality of our society doesn't end here only. Women who are not interested in marriage as they don't want to compromise with their liberty of joy after wedding, nobody is there to support her wish, as the family feel a women life is vague without husband and children. Can anyone tell me if some are not ready for marriage then why are they forced to do so, they are educated, self-dependent and can survive on their own, so why she can't live according to her own choice!

On one side, our men worship Goddess Durga, Lakshmi, Kali, and Saraswati on other side we harass women for dowry, rape and kill her. One side we praise successful women of our country, such as Shobha De, Shreya Ghoshal, Deepika Padukone, on the other side punishable crime of female foeticide is done fearlessly. Daughters are killed without any fault in her mother womb before she opens her eyes to see this wicked world, who knows they are future pride of our country like Saina Nehwal, Marry Kom and Kalpna Chawla. Many girls commit suicide because her father can't afford to marry her with a huge amount of dowry. Many women helplessly burn themselves alive, since they failed to fulfill the ridiculous wish of their in-laws by not giving birth to a boy child.

Happiness

Sagar Sharma
B.Sc. - 1st Year

Happiness is not the absence of problems,
It's the ability to deal with them.
If you are not making mistakes,
Then you are not doing anything.
To be a great champion you must believe you are the best,
If you're not pretend you are.
Light can devour the darkness,
But darkness can not consume the light.
The important thing is to teach a child.
that good can always triumph over evil.

William Shakespeare

Azra
B.A. - 2nd year

Shakespeare, the greatest name in English literature was born on April 23, 1564 at Startford-on-Avon, in the country of Warwick. He was baptised on April 26. His mother Mary Arden belonged to a noble family. His father John Shakespeare was the merchant of grains, meat, wool and timber. John was rich. So he was elevated to the judicial post of Justice of Peace and High Bailiff of the town. His eldest son-William assisted him. So William had a deep knowledge of the contemporary law.

Education- William was not good as a student in the school. He was indifferent to his studies. He was truant, sometimes. He sought pleasure in the natural beauty of his village and minor games of the children. At the Grammar School of the village he learnt 'small Latin and less Greek' as Ben Jonson says.

Works- His contribution as a writer for the stage extended for over 24 years begining from about 1588 upto 1612. These 24 years of his great works can be presented as follows-

1. His early and experimental works (1588-93)- The three parts of Henry VI, Titus Andronics, Love's Laborlost, the two Gentlemen of Varena the comedy of errors. A Midsummer Night's Dream.
2. The great comedies and chronicle plays (1594-1600)- Richard II King John, the Merchant of Venice, Henry IV Part I and II, Henry V, The taming of the Shrewd. As you like It and Twelth Night are full of the depth of this knowledge.
3. Great Tragedies (1601-08)- Julius Caesar, Hamlet, All's well than Ends well, Measure for Measure, Trolips and Cressider, Othello, Kinglear etc.
4. His later comedies or Dramatic Romances (1900-12)- Cymteslins the Tempest. The writer's tale and percies are very famous and full of understanding of human problems.

In all his works Shakespeare has very opty universalised his personal feelings and experiences.

Death- In1612, Shakespeare retired from his work and returned to his native village, Startford. He brought a house "New Palace" there. He died on April 23, 1616 either by drinking board. This house "New Palane" is a National museum today and Startford School is up-to-date pilgrimage for the literary lovers.

The Role of a Teacher

Shivani Kapoor
B.A. - 2nd year

Education is like a train
The teacher is like a driver
Syllabus is like a journey
The student is like a traveller

As a driver takes pain to handle his vehicle and makes it reach towards its destination, similarly a teacher makes the syllabus interesting. So what is the student may have attention. The teacher is not only a guide, gardener and a chrioteer but also a guard ceaselessly and tirelessly. Always drive your student upward.

In some respect teacher is a God. So I respect my teacher like a God.

Discipline in Life

Suheliya
B.A. - 2nd Year

Discipline is a means of keeping the things in order. It is a duty and obedience. According to Swami Vivekanand, "Duty is obedience to the voice of conscience, discipline is necessary not only in schools and college but also in all walks of life."

Discipline is training, especially of the mind and character, aimed at producing self control. It implies submission to orders and rules. Discipline is absolutely essential for the growth and development of an individual and a healthy society. Discipline must be taught early in life. The home is the nursery where we receive our first lesson of discipline through obedience to parents.

Life without Ruddar. Since discipline is required in all works of life.

"Never forget that only dead fish swim with the skam."

Faith has Great Power

Sakshi Chauhan
B.A. - 3rd Year.

The dictionary meaning of "Faith" is strong belief especially without proof, confidence or trust. It is said where reason or logic ends, faith starts from there. But one needs to have a scientific temper for development of faith. Scientifically unproven faith can lead to disaster. No doubt, "Faith is something higher than Science. Faith and belief are strong forces within an individual. Capable of braving any external crisis of fear and danger."

Faith and belief are strong forces within an individual, capable of braving any external crisis of fear and danger. This faith is nurtured by experiencing the presence of God. "Faith is a bread for everyday breakfast, not a cake for special occassions." Ask and it shall be given, seek and you shall find it. Knock and it shall be opened into you.

Hope

Shahista Perveen
B.A. - 3rd Year

Dad I hope you can see how much
I look up to you
I wish I can be
The person you want me to
I wish that I can
Stand out from the crowd
I can make you feel proud.
It's a special bond that Zpans the years.
Through laughter, worry, smile and tears.
A Zehse of trust that can't be broken,
A depth of love sometime unspoken.
A life long friendship built on sharing.
Hugs and kisses warmth and carried
mother and daughter their a link
that can never be undone.

Importance of Education

Tanu Singh
B.A. - 1st Year

Education is the most important factor for the development of human civilization. Education provides the nation with man powers, promotes national unity and uplifts public awareness. A country needs different kinds of man powers such as Doctors, Engineers, Teachers, Judges, Administrative officials, Economists and other Technical hands. Education provides the nation with those educated hands. If people are educated, they can understand their duties and rights. In order to uplift human society, each should be capable to understand others. If people can understand each other, they will be united. Thus, education can promote national unity. In order to uplift the degree of awareness in the society. Education profoundly enhances human prosperity. Educated people understand what is wrong and what is right. It means "Education is the most powerful weapon, which you can use to change the world."

Clean India, Green India

Nazmi
B.Com - 1st Year

Once there lived four friends: One day, they decided to go camping in the forest, they packed their bags and left. They reached the forest and found a place to built the tent. After eating, they went to the river, they saw a girl sitting near the loft of garbage. They went to her and asked, who she was. She replied, "I am mother earth".

They were all shocked. What are you doing here, asked a friend. Mother earth sadly replied, I am looking at what you humans have done to my forest, it has become so dirty! Then all friends promised to clean up the garbage.

Mother earth was happy and thanked the four friends for their help.

God India

Chiranjana Goswami
B.A. - 3rd Year

Next to of course God India
Love you land of the pilgrims and so forth oh.
Say can you see by the dawn's early my country' of centuries come and go
and are no more what of it we should worry.
In every language even deaf and dumb
thy sons acclaim your glorious name by gorry.
Vande Matram, Vande Matram.....
Why talk of beauty what could be more beautiful
than these heroic happy dead
who rushed like lions to the roaring slaughter
they did not stop to think they died instead.
Then shll the voice of liberty be mute?"

How Simplify Our Busy Life

Heena Chaudhary
B.Sc. - 3rd Year

Our lives are full of so much activities everyday. We live in an age, where social media, instant communication, and fast service are the norm. Culture begs us to buy items to make ourselves better, but this leaves us unsatisfied. Every day feels like we have so much to do that if we don't have a full adverturous schedule, then we are not doing right life. We all want to have an abundant life, but this doesn't mean we have to have plans every weekend to fill up our time. We get so busy keeping our lives full that we never truly get to focus on being fulfilled.

Ways to simplify your life.....

1. Be content- Being content is hard because our culture feeds our lack of simplicity by advertising products and adventures to try to make us feel discontent without them. We almost always desire far more than we need. When we don't live by the desire for more and gaining material things, we can begin to find contentment in God and in his will for our lives. An abundant life isn't categorised by being busy, but by being content. An easier, fulfilling life will never be found through satisfying our immediate desires, but through being content no matter the circumstances.

2. Get rid of your stuff- We have too much stuff. When the self storage industry make over $ billion in one year. We obviously have an issue with an overcrowded life. Our desire should be to simplify our life by getting rid of our stuff before controls us. When we clutter our lives with stuff, we accumulate a desire in our hearts far them and they take the place of what we treasure most. Simply, love for stuff in this world more than anything incompatible with love for Jesus (God).

THE FIRST STEP TO GETTING
WHAT YOU WANT, IS
HAVING THE COURAGE
TO GET RID
FOR WHAT YOU DOES NOT

3. Enjoy where God has you- Everything in this world tells us to live for more, but God calls us to enjoy life where we are now. Twitter feeds, Instagram posts, and Pinterest boards give us advice for leading a fulfilled life by telling us the next great thing we should be doing. They promise the secrets to a simple, organized, and content life, but it doesn't take long to realize that everything they advertise leaves us longing for more.

A fulfilled life isn't about where you want to be in five years or what you will have, but where God has you now, says that we should enjoy what we have rather than desiring what we don't have. A simple life doesn't have anything to do with stuff or a future version of ourselves.

Living the abundant life doesn't mean our lives are full of activity, but that our lives are fulfilled in God.

Yoga (21st June International Yoga Day)

Abhishek Tomar
B.A. - 2nd Year

Yoga is a group of physical, mental and spiritual practice or discipline which originated in ancient India. Yoga is one of the six orthodox schools of Hindu philosophical traditions.

There is a broad variety of Yoga schools, practices and goals in Hinduism, Buddhism and Jainism. The term 'Yoga' in the Western world often denotes a modern form of Hatha yoga, which include the physical practice of postures called asanas.

15 Health benefits of Yoga-

1. Improve your flexibility.
2. Builds muscle strength.
3. Perfects your posture.
4. Prevents cartilage/joint breakdown.
5. Protects your spine.
6. Betters your Bone health.
7. Increases your blood flow.
8. Ups your hearts rate.
9. Drops your blood pressure.
10. Make you happier.
11. Founds a healthy lifestyle.
12. Towers blood sugar.
13. Help you focus.
14. Relaxes your system.
15. Improve your balance.

Just Like A Child

Kartik
B.A. - 2nd Year

How I wish to trust
In life no questions asked,
Hanging on God's words.
Confident and relaxed
Just like a child.
How I long for conscience
As mild as the breeze,
Having good will worth often,
Just like a child.
How I long for courage
that toughs at year,
knowing I'd surely be caught
When tosses in the air,
Just like a child.
How I wish to take
life's journey with ease,
Jolly through thick and thin,
As cool as you please.
Just like a child.
How I need this grace
So dear cord, to you I come,
Help me to believe
And receive your leivgdom,
Just like a child.

Maths Tricks

Priyanka
B.Sc. - 2nd Year

(i) 38 x 32 = 1216
(ii) 112 x 118 = 13216
If last digit are sum = 10
First digit are same.

Pythogorus trick
(i) If m is even No. (m = no.) = 2m, m2-1, m2+1
(ii) If m is odd No. = m1, m2-1/2, m2+1/2

(i) Choose 2 digit number.
(ii) Reverse the digits to get a new number.
(iii) Add this to the number you started with.
(iv) Now divide the answer by 11.
(v) There won't be any remainder.
Eg. 51---15
51 + 15 = 66/11= 6
(i) Choose 2 digit number
(ii) Reverse the digit to get a new number
(iii) Subtract the smaller number from larger one.
(iv) Now divide the answer by 9.
(v) There won't be any remainder.
Eg. 16-----61
61-16 = 45/9= 5

(i) Choose 3 digit number- a,b,c
(ii) Replace number- cab + bca
(iii) Adding them + divisible by 37
(iv) There will be no remainder.
Eg. abc cab bca
243 324 432
243 + 324 + 432 = 999/37 = 27

Importance of Yoga in Our Life

Akshma Chaudhary
M.A. (Yoga) - 2nd Year

Yoga is the journey of the self,
Through the self,
To the self.

Introduction- "A healthy mind resides in a healthy body." To make one healthy and wealthy yoga plays a very effective role. It has been said, "If wealth is lost something is lost but if health is lost everything is lost. We should make ourselves healthy, wealthy and prosperous. We should make it our habit to do yoga regularly.

True Nature of Yoga- The goal of yoga is to help everyone. So, be powerful and attain knowledge. As Gita says, "A person is said to have achieved yoga, when the mid perfectly gets freedom from all desires and becomes absorbed into self along."

"Yoga is not a religion", it is a way whose aim is 'to nature healthy mind in a healthy body.'

Man is a physical, mental and spiritual being. He has to raise balanced development of all the three. It has little to do with the development of the soul.

Yogic exercised recharge the body with the energy. This facilitates:

1. Attainment of perfect balance.
2. Increases self awareness.
3. Raise self healing.
4. Remove negative block from the mind.

Hence, to keep our body and soul together, let's take an oath to attain yoga as a part and parcel of our daily walk of life.

Slogans

Sachi Bansal
B.Sc. - 3rd Year

1. Don't dream to be somethings but rather dream to do something great. — Shri Narendra Modi Ji.
2. We don't need acts but action. — Shri Narendra Modi Ji.
3. I am patriot, I am nationalist, I am born Hindu. — Shri Narendra Modi Ji.
4. You give me your blood, will buy you your freedom. — Netaji Subhash Chandra Bose.
5. Jai Jawan, Jai Kisan. — Shri Lal Bahadur Shastri.
6. Jai Jawan, Jai Kisan, Jai Vigyan. — Shri Atal Bihari Vajpayee.
7. Aaram Haram Hai. — Pt. Jawahar Lal Nehru.
8. Satyamev Jayate. — Pt. Madan Mohan Malviya.

Amazing Facts

Arshi Maharukh
B.Sc. - 2nd Year

MANDIR	=	6 Words
MASJID	=	6 Words
CHURCH	=	6 Words
&		

GEETA	=	5 Words
QURAN	=	5 Words
BIBLE	=	5 Words

They all saya the same 6 -5 =1
"GOD IN ONE"

Life and Work of Shri Bharati Krishna Teerth

(Founder of Vedic Mathematics)

Dr. Tarun Kumar Gupta
Assistant Professor, Deptt. of Mathematics

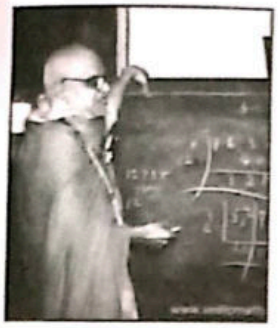

Swami Bharati Krishna Teerthji was born in 1884. His father, Late Sh. Narsimha Shastri was Tehsildar in Madras Presidency and functioned as Deputy Collector. Late Sh. Shastri was a learned and pious man. He graduated in 1903 and the following year appeared for the M.A. examination of the Rochester University College of Science from their centre at Bombay. He appeared for seven subjects which included Sanskrit, Philosophy, English, Mathematics, History and Science and topped in all subjects. He was at this time just 20 years of age. He was known for his brilliance, inquisitiveness and extraordinary intellegence. He showered difficult questions at his teachers.

In 1909 he had reorganised the National College and became the Principal, as well as Secretary of the executive committee.

According to Hindu Philosophy and belief we are born in families whose traditions and way of life is pious and otherwise depending upon our actions in the life before, meeting pious, noble and holy people is termed by most as accidental or incidental. He was dignified in his simplicity. His discourses were full of knowledge as he spoke without fear of attachment. He was easily approachable . Men and women came to seek his blessings and some came to seek solace and solution to their Miserics. He would listen, tell them kind words and give them Prasad. If he saw people suffering, tears rolled out of his eyes and he would pray for the release from their sorrows. Is is impossible to define such as person. He had astonishing knowledge and was extremely learned. His sharp intellect, long memory and profound enthusiasm had made him a famous scholar of his time. He would not waste time and in his leisure was always found reading or mediating. He had vast knowledge and was well versed in Astrology and Ayurveda amongst other things.

Sixteen Subsutras (Formulae) of Vedic Mathematics are given below:

1. By one more than the previous one
2. All from nine and last from ten
3. Vertically and Crosswise
4. Transpose and Apply
5. The summation is equal to zero
6. If one is in ratio, the other one is zero
7. By addition and subtraction
8. By the completion and noncompletion
9. Sequential motion
10. The deficiency
11. Whole as one and one as whole
12. Remainder by the last digit
13. Ultimate and twice the penultimate
14. By one less than the previous one
15. The whole product is the same
16. Collectivity of multipliers

Thirteen Sutras (Formulae) of Vedic Mathematics are given below:

1. Proportionately
2. The remainder remains constant
3. The first by the first and the last by the last
4. For 7 the multiplicand is 143
5. By Osculation
6. Lessen by the deficiencyWhatever the deficiency lessen by that amount and set up the square of the deficiency
7. Last Totalling 10
8. Only the last terms
9. The sum of the products
10. By alternate Elimination and Retention
11. By mere observation
12. The product of the sum is the sum of the products
13. On the Flag

NAME - NISHA KANCHAN

B. A. II year

संस्कृत अनुभाग

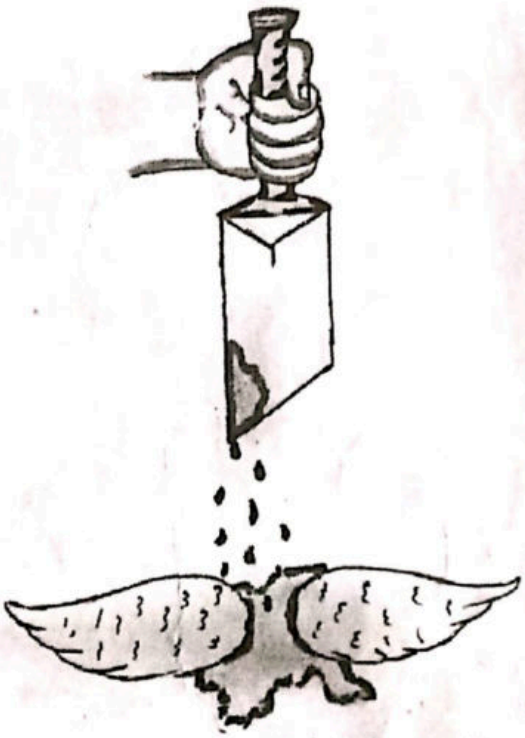

SAVE THE BABY GIRL

MOHIT KUMAR
B.Sc. II nd
(P.G.M)

मानवजीवने संस्काराणाम् उपयोगिता

डॉ. अनिता रानी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

मानवजीवने संस्काराणां सा एव उपयोगिता अस्ति। मानवस्य सम्पूर्णविकासे संस्काराणां महत्त्वं तथैव अस्ति यथा आभूषणानां पूर्वजीवने भवति। सुवर्ण अग्नौ दह्यते, ताडयते, छिद्यते तत्पश्चादेव आभूषणस्य स्वरूपम् गृहणाति तथैव मानव: यावत्कालं संस्कारान्नसंक्रियते तावतकालं जीवने स: स्वस्य समाजस्य च कृते उपयोगी न भवति। संस्क्रियते, अलांक्रिते, शरीरादिर्येन से संस्कार:। संस्कारादेव जन: द्विज भवति अर्थात् श्रेष्ठान् आचारान् कर्तुम् सिद्ध: भवति। यथोक्तम् मनुनाकृ

वैदिकैकर्माभि: पुण्यैर्विवेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्य: शरीर संस्कार: पावन: प्रेत्य चेह च।। मनु0 2-27

संस्कारो नाम स भवति यस्मिन् जाते पदार्थो भवति योग्य: कस्याचिदर्थस्य। संस्कारो गुणाधानेन वा स्वाद्दोषापनयनेन वा। संस्काराणाम् महत्ता अस्माकं जीवने एतावती अधिका अस्ति। यत् प्रत्येक: भारतीय: स्वस्य जीवने पूर्वरूपेण एतेषां पालनं करोति। एतस्मात् कारणात् एकत: जनस्य वाह्यविकास: तु भवत्येव अपरत: स आन्तिरीकान् गुणान् अपि पुष्णाति। संस्कारस्य प्रयोजनं द्वयम् प्रथमम् बाह्यविकास: द्वितीयम् आन्तरिकी समुन्नति: च। एतै: बालकस्य व्यक्तित्व विकासाय प्रयत्न: क्रियते। प्रकृतोऽप्राकृतश्च एव संस्कारो द्विविधो मत:। गर्भाधानात् आरभ्य अन्त्येष्टि यावत् अर्थात् आजन्मन: मत्युं यावत् मानव: यत्किंचिदपि करोति तत्सर्वं संस्काराधीनं भवति। संस्कारेण गुणान्तराधानं संस्कार:। एतस्य कारणम् तस्य गुणेषु निरन्तरम् अभिवृद्धि: भवेत्। स: व्यक्तित्व विकासम् आचरन् जीवनस्य विकास मानेषु सोपानेषु व्यवस्थितरूपेण अधिरोहेत्। बीजञ्च कर्मणो ज्ञेयं संस्कारो मात्र संशय:
सृष्टे: संस्कार एवास्ति कारणं मूलं। अयं विकासक्रम: एवं सुनिश्चित: यत् उपनयनम्, समावर्तनम्, विवाहादिकानां संस्काराणाम् साहाय्येन जन: आत्मन: विकासं करोति। एतेषां समुज्ज्वल स्वरूपम् उपनयने दृश्यते। जन्मत: प्रत्येक: वालक: शूद्र: भवति। संस्कारेणैव स: द्विजत्वं प्राप्नोति। "जन्मना जायते शूद्र: संस्कारातद्विज उच्यते,, मानवस्य विकासे बहु: बाधा: आपतन्ति। एतेषां बाधानां परिष्कार: अपि संस्कारै: करणस्य विधानम् अस्ति। संस्कारेषु उपकरणरूपेण अग्ने: जलादिनाम् उपयोग: क्रियते। एतानि उपकरणानि अशुभनाशकानि सन्ति। महर्षि: दयानन्द: संस्कारविधौ: संस्काराणाम् उपयोगितां प्रदर्शयन् लिखति।

स: कथयति यत् शरीरात्मनो शुद्धयै यद्यन्मेध्यमात्रत दुच्यते। गर्भाधानमाध्यमेन् मन:शुद्धि:, वीर्यशुद्धि: च भवति। संस्कारेण जन: बालकं पुत्रं, पुत्रीं वा यमिच्छति तं प्राप्तुं शक्नोति। पुंसवनसंस्कारे केषाचिदौषधीनाम् सेवनम् निदृष्टम् अस्ति। एतेन माध्यमेन आधुनिकलिङ्.ग परीक्षणादिकं बिना अपि पुत्रं: प्राप्तुं शक्यते। सीमन्तोन्नयने अपि विशिष्टभोज्येन केशबन्धनेन शृंगारेण स्त्रिया: प्रसन्नताया: प्रयास: क्रियते अनेन विधिना गर्भस्य यथेष्ठ: विकास: भवति।
गर्भाधानसंस्कारे होमै: जातकर्मचूडाकर्मादिभि: संस्कारै: बैजिका: गार्भका: दोषा: दूरी भवन्ति। जातकर्मणि संस्कारे बालके श्रेष्ठसंस्काराधानादतिरिक्तं विशिष्टहोममाध्यमेन प्रसूति गृहे बालकस्य असूराणां कृमीणां नाशनाय प्रत्यते। विवाहसंस्कारस्य महत्त्वं तु सर्वसिद्धम एव। अद्यपि अस्मिन् भौतिकयुगे भारते विवाहविच्छेदानां संख्या अतिन्यूना अस्ति। अस्य कारणम् अस्ति अत्र विवाह: शारीरिकसम्पर्कार्थम् समाजे स्वीकृति मात्रम् नास्ति अपितु विवाहस्य तात्पर्यं भवति न केवलम् अस्मिन् जीवने अपितु जन्मजन्मान्तरेषु सहैव धर्माचरणम्। एषा एव वेदशास्त्राणां मान्यता अस्ति। इयम् एव अस्माकं समाजमान्यता।

एतदर्थमेव शतश: वैदेशिका: ये पाश्चात्यजीवनपद्धत्या त्रस्ता: यत्र विवाहविच्छेदस्तु प्रायश: सर्वेषां जीवनेषु भवति तत्र भारते विवाहं कर्तुम् आगच्छन्ति, भारतीयपद्धत्या: विवाहं कुर्वन्ति। एतेषां समाचारा: प्राय: समाचारापत्रेष्वपि प्रकाशिता: भवन्ति। अत्र सर्वं धर्माचरणाय अस्ति। धर्मेण विना मनुष्यस्य स्थिते: कल्पना एव नास्ति।

अति तृष्णा विनाशाय

वन्दना
बी.ए.-प्रथम वर्ष

अहमेकदा दक्षिणारण्ये चरन्नपश्यम्। एको वृद्धो व्याघ्रः स्नातः कुशत्सतः सरस्तीरे ब्रूते भोः भोः पान्थाः। इदं सुवर्णकंकणं गृह्यताम्, ततो लोभाकृष्टेन केन चित्पान्थे नालोचितम्-भाग्येनैतत्सम्भवति। किन्त्वस्मिन्नात्मसन्देहे प्रवृत्तिर्न विधेया। तन्निरूपयामि तावत्। प्रकाशं ब्रूते-कुत्रतव कंङ्कण्म्? व्याघ्रो हस्तं प्रसार्य दर्शयति पान्थोऽवदत् कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः व्याघ्र उवाच श्रृणु रे पान्थ! प्रागेव यौवनदशायामतिदुवृत्तः आसम्। अनेकगोमानुषाणां वधान्मे पुत्रा मृता दाराश्च, वंशहीनश्चाहम् ततः, केनचिद्धार्मिकेणाहमादिष्टः दानधर्मादिकं चरतु भवान्। तदुपदेशादिदानीमहं स्नानशीलो दाता वृद्धो गलितनखदन्तो कथं न विश्वासभूमिः। मम, चैतावांल्लोभीवरहो येन स्वहस्तस्थमपि सुवर्णकंङ्कणं यस्मै कस्मै चिद्दातुमिच्छामि। तथापि 'व्याघ्रो मानुषं खादति' लोकप्रवादो-दुर्निवारः। तदत्र सरसि स्नात्वा सुवर्णकङ्कण गृहाण। ततो यावदसौ तद्वचः प्रतीतो लोभात्सरः स्नातुं प्रविशति तावन्महापङ्के निमग्नः पलायितुमक्षमः। पङ्के पतितं दृष्टवा व्याघ्रोऽवदत्-अहह। महापङ्के पतितोऽसि, अतस्त्वामुथापयामि" इत्युक्त्वा शनैः शनैरूपगम्य तेन व्याघ्रेण धृतः सः पान्थोडचिंतयत् इति चिन्तयन्नेवासौ व्याघ्रेण व्यापादितः खादितश्च।

सावित्री बाई फुले

सोनाक्षी
बी.ए.-प्रथम वर्ष

महाराष्ट्रस्य प्रथमा महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले नामधेया जनवरी मासस्य तृतीये दिवसे 1831 तमे खिस्ताब्दे महाराष्ट्रस्य नायगांव-नाम्नि स्थाने अजायत। तस्याः माता लक्ष्मीबाई, पिता च खंडोजी इति अभिहितौ। नववर्ष देशीया सा ज्योतिबा फुले महोदयेन परिणीता। यतोहि सः स्त्रीशिक्षायाः प्रबलः समर्थकः आसीत् अतः सावित्र्याः मनसि स्थिता अध्ययननाभिलाषा उत्सं प्राप्तवती। अतः परं सा साग्रहम् आङ्.ग्लभाषाया अपि अध्ययनं कृतवती।

1848 तमे खिस्ताब्दे पुणे नगरे सावित्री ज्योतिबामहोदयेन सह कन्यानां कृते प्रदेशस्य प्रथमं विद्यालयस्य आरम्भृत। तदानीं सा केवलं सप्तदशवर्षीया आसीत्। 1851 तमे खिस्ते अस्पृश्यत्वात् तिरस्कृतस्य समुदायस्य बलिकानां कृते पृथक्तया अपरः विद्यालयः प्रारब्धः।

सामाजिककुरीतीनां सावित्री मुखर विरोधं अकरोत्। विधवानां शिरोमुण्डनस्य निराकरणाय सा साक्षात् नापितैः मिलिता। एकदा सावित्रया मार्गे दृष्टं यत् कूपं निकषा शीर्णवस्त्रावृताः तथाकथिताः निम्नजातीयाः कश्चिद् नार्चः जलं पातुं याचन्ते स्म। उच्चवर्गीयाः उपहासं कुर्वन्तः कृपा जलोद्धरणम् अवारमन्।

सावित्री एतत् अपमानम् सोढुं नाशक्नोत्। सा ताः स्त्रियः निजगृहं नीतवती। तडागं दर्शयित्वा अकथयत् च यत यथेष्टं जलः नयत्। सार्वजनिकोऽय तडागः। अस्मात् जलग्रहणे नारित जातिबन्धनम्। तया मनुष्याणां समानतायाः स्वतन्त्रतायाश्च पक्षः सर्वदा सर्वथा समर्थितः।

'महिला सेवामण्डल' 'शिशुहत्या प्रतिबन्धक गृह' इत्यादीनां संस्थानां स्थापनायां फुलेदम्पत्योः अवदानम् महत्वपूर्णम्। सत्यशोधकमण्डलस्य गतिविधिषु अपि सावित्री अतीव सक्रिया आसीत्। अस्य मण्डलस्य उद्देश्यम् आसीत् उत्पीड़तानां समुदायानां स्वाधिकारान् प्रति जागरणम् इति। सावित्री अनेकाः संस्थाः प्रशासनकौशलेन संञ्चालितवती। दुर्भिक्षकाले प्लेग-काले च सा पीड़ितजनानाम् आश्रान्तम् अविरतं च सेवाम् अकरोत्।

सहायता- सामग्री-व्यवस्याफले सर्वथा प्रयासम् अकरोत्। महारोगप्रसारकाले सेवारता सा असाध्यरोगेण ग्रस्ता 1897 तमे खिस्ताब्दे निर्धन गता।

साहित्यरचनाया अपि सावित्री महीयते। तस्याः काव्यसङ्कलनद्वयं वर्तते 'काव्यफुले' 'सुबोधरत्नाकार' चेति। भारतदेशे महिलोत्थानस्य गहनबोधाय सवित्रीमहोदयाथाः जीवनचरितम् अवश्यम् अध्येतव्यम्।

गीता के उपदेश

स्वाति
बी.ए. - प्रथम वर्ष

श्लोक

(क) सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानापि।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति

सभी प्राणी प्रकृति को प्राप्त होते हैं। अर्थात् अपने स्वभाव के परपश हुए कर्म करते हैं। ज्ञानवान् भी अपनी प्रकृति के अनुसार चेष्टा करता है। फिर इसमें किसी का हठ क्या करेगा ?

(ख) इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ॥

हिन्दी अनुवाद-इन्द्रिय के अर्थ में अर्थात् प्रत्येक इन्द्रिय के विषय में राग और द्वेष छिपे हुए स्थित हैं। मनुष्य को उन दोनों के वश में नहीं होना चाहिए क्योंकि वे दोनों ही इसके कल्याण मार्ग में विघ्न करने वाले महान् शत्रु हैं।

(ग) श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्नुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

हिन्दी अनुवाद- अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुण रहित भी अपना धर्म आदि उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

(घ) काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्॥

हिन्दी अनुवाद- रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगों से कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है। इसको ही तू इस विषय में वैरी जान।

(ड.) धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्वेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

हिन्दी अनुवाद- जिस प्रकार धुएँ से अग्नि और मैल से दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेर से गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस काम के द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है।

विद्यार्थी जीवनम्

स्वाति
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

मानव जीवने हि विद्यार्थि-जीवनस्य नितरां महत्त्वं वतत्ते। अस्मिन्नेव मनुजस्य जीवनं विकसति। अत्रैव मानसिकम् आध्यात्मिकञ्च उत्थानं जायते। विद्यार्थि जीवनं च विद्याध्ययनस्य समयः। चतुर्वर्गस्य फलप्राप्तिश्च् विद्ययैव संभवति, नान्यथा। भवन्ति किल विद्यालयाः विद्यानां स्थान ललितकलानां चापि निधानाम्। ततश्च अत्र नैके छात्रा आगच्छन्ति शिक्षन्ते च स्वं चरित्रम्। विद्यार्थिजीवनं चातीव सौख्यप्रदम्। अत्र हि छात्राः सुखं वसन्ति स्वच्छन्दं च यापयन्ति स्वसमयम्। न चिन्तायाः स्थानाम्, न भयस्यावकाशः न जीवन-निर्वाहस्य चिन्ता, न च मानापमानयोः विचारः।

विद्यार्थी हि सुखं भुड़क्ते, स्वच्छन्द क्रीडति यथेच्छमधीते, मित्रैः सह क्रिडति, नाटकैः, चित्रपटैः, संगीतेन च मनः विनोदयति। मातापितरौ तेषां कृते धनम् अर्जयतः कुरुतश्च तेषां सुखस्यं चिन्ताम्। छात्रास्तु सुखेन जीवनं यापयन्ति।

आचार्यास्तु संयमाय एव विद्यार्थिजीवनम् इति वदन्ति। विद्याध्ययनाय, जीवननिर्माणाय चायं कालः। येन प्रथमेऽस्मिन जीवने विद्या नार्जिता सः अग्रे किं कदिष्यति। ये छात्राः तपसा विद्यामर्जन्ति त एव सफला संजायन्ते। उक्तं हि-

सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम्।

वस्तुतः महाविद्यालयो हि जीवननिर्माणस्य स्थानम्। एवञ्च सर्वैरपि ध्यातव्यमेतद् यद् विद्यार्थिजीवनम् नाम मानव जीवनस्य प्रथमं सोपानम्, तच्च न केवलम् आपातरमणीयानां सुखानां साधानमपि तु श्रेयसामपि द्वारम्।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात

सोनम
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

वाणी हि मानवस्य महती शक्तिः। सुव्यक्ता च वाणी मानवेषु एवोलभ्यते यथा चेयं मानवस्य विलक्षणा शक्तिः। उत्तमा वागेव मानवं समुन्नेतुं शक्नोति, न तु दूषिताऽपि। का चोत्तमा वाक्? किं चोत्तमं वचनम्? इति प्रश्ने या सत्या समयानुकूला श्रेयस्कारी च स्यात् "सत्यं प्रियं हितं च यत् (वचनम्)-" इति प्रवदन्ति वृद्धाः।

सत्यता हि वचसां भूषणम्। अस्ति च जीवनयापनाय सत्यस्य महत्यावश्यकता। संसारस्य कार्याणि सत्येनैव सिध्यन्ति। सत्यवचनेन एवं कश्चित् विश्वसिति।

सत्येनैव संसारस्य व्यवहारः सरति। सत्ये एव लोकस्य स्थितिः। तथा चोक्तं- "सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्।" सत्यं खलु धर्माणां सारः, गुणानां तत्त्वम्, आत्मज्ञानस्य आलोकः, समाजस्य सुखकरेः व्यक्तेरून्नायकश्च धर्मः। उक्तञ्च- "नहि सत्यात्परो धर्मः।" सत्येन मानसं निर्मलं सम्पद्यते उक्तं हि मनुना- "मनः सत्येन शुध्यति।" सत्यं च नाम महत्तपः। सत्यस्य महिमा वर्णयितुं न शक्यते। सर्वैर्महापुरुषैः अस्य महत्त्वं स्वीकृतम्।

सत्यमपि वचनं यदि मानवस्य हिंत विदधाति तदैव सर्वेभ्यः रोचते नान्यथा। अनुपयोगि वस्तु कथं कस्मै चन रोचते? तथा च वचसा हितकरत्वं परमावश्यकम्। सैव वाक् प्रसरति या मानवानां हिताय प्रयुज्यते। एतादृशमपि वचनं यदि कटु अप्रियं च स्यात्, तर्हि न कस्मैचन रोचेत। उक्तञ्च- "सत्यं ब्रूयात् प्रिंय ब्रूयात्।"

मानव की प्रकृति

रीना
बी.ए. - प्रथम वर्ष

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु॥

भोजन भी सबको अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार तीन प्रकार का प्रिय होता है और वैसे ही यज्ञ, तप और दान भी तीन-तीन प्रकार के होते हैं। उनके इस पृथक्-पृथक् भेद को तू मुझे सुन॥

आयुः सत्ववलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः॥

आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले, रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहने वाले तथा स्वभाव से ही मन को प्रिय-ऐसे आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ सात्विक पुरुष को प्रिय होते हैं।

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।
आहाराः राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः॥

कड़वे, खट्टे, लवणा युक्त, बहुत गरम, तीखे, रूखे, दाह कारक और दुःख, चिन्ता तथा रोगों को उत्पन्न करने वाले आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ राजस पुरुष को प्रिय होते हैं॥

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसा प्रियम्॥

जो भोजन अधपका, रस रहित, दुर्गन्ध युक्त, वासी और उच्छीष्ट है तथा तो अपवित्र भी है, वह भोजन तामस पुरुष को प्रिय होता है॥

अफलाकाङिक्षभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः॥

जो शास्त्रविधि से नियत, यज्ञ करना ही कर्त्तव्य है- इस प्रकार मन को समाधान करके, फल न चाहने वाले पुरुषों द्वारा किया जाता है, वह सात्त्विक है॥

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्॥

केवल दम्भाचरण के लिये अथवा फल को दृष्टि में रखकर जो यज्ञ किया जाता है, उस यज्ञ को राजस जान॥,

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते॥

शास्त्रविधि से हीन, अन्न दान से रहित, बिना मंत्रों के बिना दक्षिणा के और बिना श्रद्धा के किये जाने वाले यज्ञ को तामस यज्ञ कहते हैं॥

लक्ष्मी का स्वभाव

ख्याति II
बी.ए.- प्रथम वर्ष

केचित् श्रम् वश शिथिल शकुनि गल पुट चपलाभि: खद्योतोन्मेषमुहूर्त मनोहराभिर्मनस्विजनगर्हिताभिः सम्पदिभः प्रलोभ्यमाना:, घन लवलाभावलेपविस्मृतजन्मानोऽनेक दोषोपचितेन दुष्टासृजेव रागावेशेन बाध्यमाना: विविध विषय ग्रासलालसै: पञ्चभिरप्यनेकसहस्त्रसंख्यै-रिवेन्द्रियैरायास्यमाना:, प्रकृतिचञ्चलताया लब्धप्रसरेण एकेनापि सहस्रतामिवोपगतेन मनसा आकुलीक्रियमाणा विह्वलतामुपयान्ति।

व्याख्या- लक्ष्मी द्वारा प्रदत्त सांसारिक सम्पत्तियाँ उसी प्रकार चंचल हैं जिस प्रकार श्रम से थके हुए पक्षी का धक-धक करता गला चंचल होता है। इनकी चमक यद्यपि मन को अधिक सुहावनी होती है, किन्तु यह जुगनू की चमक के समान क्षणस्थायी होती है। इसीलिए मनीषी लोग इन सांसारिक सम्पत्तियों की निन्दा करते रहते हैं, किन्तु संसार में ऐसे अज्ञानी मनुष्यों की कमी नहीं है जो इन चंचल स्वभावों संपत्तियों के लिए लालयित न रहते हों। यदि इन धन-लोभी मानवों को थोड़ा सा भी धन उपलब्ध हो जाए तो वे उसी को अपनी जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि मानकर गर्व के कारण फूले नहीं समाते। धन की आसक्ति अनेक दोषों से भरी हुई है। जो मनुष्य इसमें बंध जाते हैं, वे उसी प्रकार नाना कष्ट उठाते हैं। जिस प्रकार वात्-पित्त-कफ विकारों से जनित दुष्ट रोगों से दु:ख उठाते हैं। इतने पर भी सांसारिक विषयों के भोग की लालसा शान्त नहीं होती। इन विषयों के भोगों के लिए उनकी इन्द्रियाँ संख्या में पाँच होने पर भी असंख्य प्रतीत होने लगती हैं। और स्वभाव की चंचलता के कारण उनके मन का इतना विस्तार हो जाता है कि वह संख्या में एक होने पर भी हजार मानों के समान प्रतीत होने लगता है। परिणाम यह होता है कि इन्द्रियों और मन की अस्थिरता तथा विषय-भोगों से अतृप्ति के कारण वे सदा व्याकुल ही बने रहते हैं कभी सुख-शांति नहीं प्राप्त कर पाते।

ग्रहैरिव गृह्यन्ते, भूतैरिवाभिभूयन्ते, मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, सत्वैरिवावष्टभ्यन्ते, वायुनेव विडम्ब्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते, मदनशरैर्मर्म्माहता इव मुखभंग सहस्त्राणि कुर्वते, धनोष्मणा पच्यमाना इव विचेष्टन्ते गाढप्रहाराहता इवाङ्गानि न धारयन्ति, कुलीरा इव तिर्य्यक परिभ्रमन्ति अधर्मभग्नगतय: पङ्.गव: इव परेण सञ्चार्यन्ते।

हिन्दी अनुवाद- मानों वे राजा लोग ग्रहों के द्वारा पकड़ लिए जाते हैं। मानो भूतों के द्वारा आक्रान्त किये जाते हैं, मानों मंत्रों से वश में कर लिए जाते हैं; मानो (विकराल) प्राणियों द्वारा (हठपूर्वक) पकड़ लिए जाते हैं, मानो वायु के अर्थात् वायु रोग के द्वारा पीड़ित किये जाते हैं, मानो राक्षसों द्वारा पकड़ लिए जाते हैं। मानो कामदेव के बाणों से मर्महित हुए सहस्त्रों मुख्य-भंगिमाएँ बनाते हैं। मानो धन की गर्मी से तपाये जाते हुए के समान विविध प्रकार की चेष्टायें करते हैं। तीव्र प्रहारों से आहत हुए के समान अंगों को धारण नहीं करते हैं। केकड़े के समान टेढ़े चलते हैं। अर्थात् कुटिल आचरण करते हैं।

विद्वानों का आदर करना चाहिए

काजल
बी.ए. - प्रथम वर्ष

शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः शिष्यप्रदेयाऽऽगमाः
विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य प्रभोर्निर्धनाः।
तज्जाडयं वसुधाधिपस्य, कवयस्त्वर्थं विनापीश्वराः
कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षिका हि मणयो यैरर्घतः पातिताः॥

जिनकी वाणी शास्त्रों (व्याकरण आदि) द्वारा परिष्कृत शब्दों से सुन्दर है और जो शिष्यों को नाना शास्त्रों की शिक्षा देते हैं, ऐसे सुकवि जिस देश में निर्धन रहते हैं इससे वहीं के राजा की ही मूर्खता सिद्ध होती है। क्योंकि विद्वान कवि तो धन के बिना भी पूज्य होते हैं। वे मूर्ख परीक्षक ही निन्दनीय है जिन्होंने महा रत्नों का उचित मूल्य नहीं आँका, इससे रत्नों की महत्ता में कमी नहीं आती, वे तो बहुमूल्य ही रहते हैं॥

हर्तुर्याति न गोचरं, किमपि शं पुष्णति यत्सर्वदा
ऽप्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते॥

जो धन चोर को भी दिखाई नहीं पड़ता है, जो सदा अनिर्वचनीय सुख को प्रदान करता है, जो निरन्तर बाँटने पर भी बढ़ता ही रहता है तथा जो प्रलय के समय भी विनष्ट नहीं होता है ऐसा विद्या नामक अत्यन्त गुप्त धन जिनके पास है उनके सामने गर्व करना छोड़ दो, उनकी बराबरी भला कैन कर सकता है?

अधिगतजपरमार्थान् पण्डितान् माऽवमस्थः
तृणमिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि।
अभिनवमदलेख्याश्यामगण्डस्थलनां।
न भवति विसतन्तुर्वारणं वा रणानाम्॥

शास्त्रों के वास्तविक मर्म को समझाने वाले विद्वानों का अपमान न करें। तुच्छ तिनके के समान संपत्ति से उन्हें वश में नहीं किया जा सकता। नई-नई मदरेखासे काले कपोलों वाले मदोन्मत हाथी को कमल नाल के सूत से बाँधकर नहीं रोका जा सकता।

मानव जीवन में विद्या

सूरज
बी.ए. - प्रथम वर्ष

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकारी यशः सुखकरी विद्या गुरूणा गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवत।
विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

विद्या ही पुरूष का सुन्दर स्वरूप और अत्यन्त गुप्त सम्पत्ति है। विद्या (वस्त्रादि) भोग्य पदार्थों को देने वाली है। विद्या कीर्ति तथा सुख को प्रदान करती है। विद्या गुरुओं की भी गुरु है। विद्या विदेश जाने पर बन्धु की तरह सहायता करती है। वही सबसे बड़ी देवता है। राजाओं के यहाँ धन की पूजा न होकर विद्या की ही पूजा होती है। इसलिए विद्या से हीन मनुष्य पशु है।

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

जिन मनुष्यों में विद्या (व्याकरण आदि का ज्ञान), तपस्या (कृच्छ्चान्द्रायण आदि व्रतों को करना) दान, ज्ञान, सदाचार, गुण (दया दाक्षिण्य आदि) एवं धर्म भावना (वेद के अनुसार चलना) नहीं है वे इस मरणशील संसार में भार (बोझ) स्वरूप ही हैं जो पशु की भाँति व्यर्थ घूमा करते हैं।

केयूराणि न भूषयन्ति पुरूषं हारा न चन्द्रोज्जवलाः
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ.कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणनि सतातं वाग्भूषणं भूषणम्॥

मानव को (वस्तुतः) न तो बाजुबन्द आदि गहने ही शोभित करते हैं, न चन्द्रमा की भाँति चमकने वाले मोतियों के हार, न स्नान न चन्दन कपूर आदि के द्वारा लेपन, न फूल और न सँवरे हुए बाल ही मनुष्य की शोभा बढ़ाते हैं। एक केवल (व्याकरण आदि से) शुद्ध वाणी मनुष्य को सर्वदा विभूषित करती है एवं अन्य आभूषण तो शीघ्र नष्ट भी हो जाते हैं किन्तु वाणीरूप भूषण सर्वदा पास में रहता है।

उर्दू अनुभाग

पूजा तोमर
बी.ए. - प्रथम वर्ष

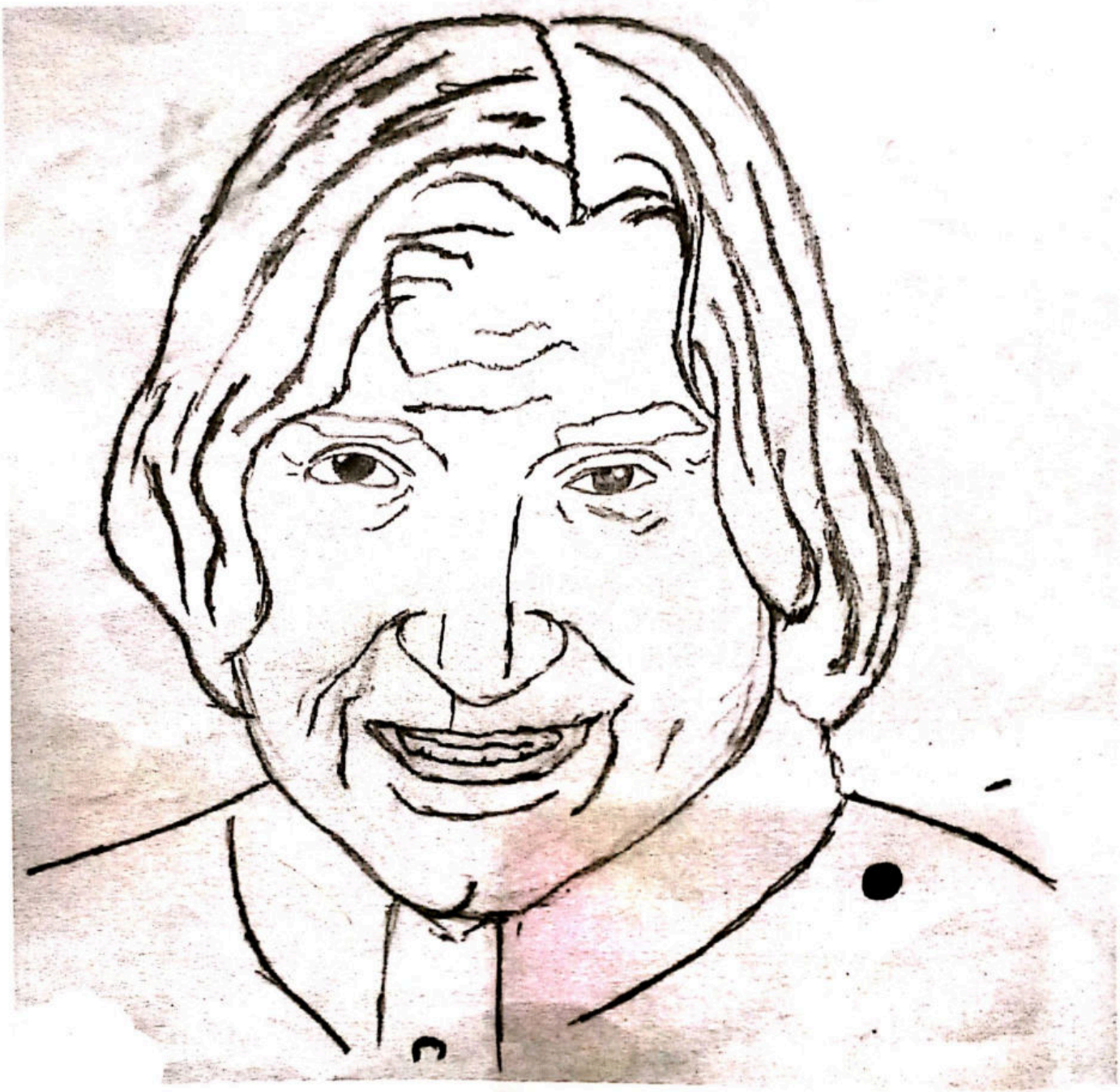

کہ شہر کے حاکم نے انہیں مسلمانوں کے خلیفہ ہارون کے پاس بھیج دیا خلیفہ شہر بغداد میں رہتا تھا اسے اپنے بیٹے شہزادہ محمد امین کے لئے بہت عمدہ قسم کے استاذ کی ضرورت تھی جو اسے ان تمام مضامین اور علم و ہنر میں قابل بنا دے جو خلیفہ بننے پر اس کے کام آئیں جب شہزدے نے سارے علم حاصل کر لیے تو خلیفہ نے اس کا امتحان لیا اور خوش ہو کر امام صاحب کو بہت انعام دیا تمام وزیروں اور دوسرے درباریوں نے بہت سارے تحفے دیئے جن سے ان کے پاس ایک بہت بڑا خزانہ جمع ہو گیا سب نے انہیں بڑی عزت اور احترام کے ساتھ رخصت کیا سچ ہے علم بڑی دولت ہے محنت کبھی نہ کبھی ضرور رنگ لاتی ہے جو محنت سے علم حاصل

محمد - عبدالرحمان

محمد - عبدول رحمان

علم کا پھل

علامہ اصمعی ایک بہت بڑے عالم تھے بچپن میں وہ بہت غریب تھے لیکن انہیں علم حاصل کرنے کا بہت شوق تھا علم کے شوق میں انہوں نے بہت پریشانیاں اٹھائیں بڑی محنت سے علم حاصل کیا تب انہیں علم کا بہت عمدہ پھل ملا علم کی بدولت ان کی غریبی ختم ہوگئی انہیں بہت ترقی حاصل ہوئی انہوں نے اتنا بلند مقام حاصل کیا اور اتنی دولت کمائی کہ لوگ ان پر رشک کرتے تھے اور وہ اتنے مشہور ہوئے کہ آج بھی ان کا نام زندہ اور مشہور ہے ان کا بچپن بہت غریبی میں گذرا تھا غریبی کی وجہ سے نہایت تنگ و پریشان رہتے تھے پہننے کو پھٹے پرانے کپڑے ہی ہوتے کھانے کو کبھی مل جاتا تو کبھی فاقہ ہی کرنا پڑتا تھا پھر بھی ہر روز صبح ہوتے ہی پڑھنے کے لئے نکل جاتے ان کے شہر بصرہ میں کوئی کالج یا اسکول نہیں تھا عالم اور استاد لوگ اپنے اپنے گھروں میں پڑھاتے تھے انہیں الگ الگ مضمون پڑھنے کے لئے الگ الگ استادوں کے پاس جانا پڑتا تھا ان کی گلی میں ایک سبزی والے کی دکان تھی وہ آتے جاتے ان سے پوچھتا تھا کس کس کے پاس جاتے ہو کیا پڑھتے ہو پھر ان کا مذاق اڑاتا اور کہتا میاں کتابوں میں کیوں خواہ مخواہ مغز کھپاتے ہو ان میں کیا رکھا ہے میں تو خدا کی قسم کھا کر کہتا ہوں کہ اگر تم اپنی ساری کتابیں مجھے دینا چاہو تو ایک روٹی کے بدلے بھی نہ لوں میری بات مانو کوئی ایسا کام سیکھ لو جس سے تمہیں روزی روٹی مل سکے تمہارے یہی دن سیکھنے کے ہیں امام اصمعی اس کی روز روز کی ایسی باتوں سے تنگ تھے آخر یہ طریقہ اختیار کیا کہ بہت سویرے اندھیرے میں ہی گھر سے نکل کر چلے جاتے اور رات کو بہت دیر سے واپس آتے اس طرح سبزی فروش کا سامنا نہ ہوتا ان کی غریبی اور تنگ دستی کا حال یہ تھا کہ گھر کی ایک ایک اکھاڑ پچھاڑ کر بیچ دیتے اور جو کچھ ملتا اس گزارہ کرتے آخر چند برسوں میں اپنے شوق اور محنت سے اتنا علم حاصل کر لیا کہ شہر بھر میں عزت اور شہرت حاصل ہوگئی یہاں تک

نام - صدف بنت محمد فرقان

رسول صلی اللہ علیہ وسلم کا مشہور نام محمد صلی اللہ علیہ وسلم ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ نام
آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے دادا نے رکھا تھا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا ایک اور نام احمد بھی ہے جو
آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی امی نے رکھا تھا ہمارے نبی کے ابا جان کا آپ صلی اللہ علیہ وسلم
کی پیدائش سے پہلے ہی انتقال ہو گیا تھا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو دائی حلیمہ نے دودھ پلایا
جن کا تعلق قبیلہ بنی سعد سے ہے یہ قبیلہ مکّہ کے پاس ہی ایک گاؤں میں رہتا تھا حضرت
حلیمہ بہت نیک خاتون تھی آپ صلی اللہ علیہ وسلم چار سال ان کے یہاں رہے ہمارے
آپ صلی اللہ علیہ وسلم چھ برس کے ہوئے تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی امّاں جان کے بھی انتقال
ہو گیا تب آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے دادا نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو پالا مگر جب آپ صلی
آٹھ سال کے ہوئے تو دادا بھی وفات پا گئے اب ہمارے رسول صلی اللہ وسلم کو آپ صلی اللہ علیہ وسلم
کے چچا ابو طالب نے پالا وہ آپ سے بڑی محبت کرتے تھے آپ کو ہمیشہ اپنے ساتھ رکھتے تھے
ہمارے رسول اللہ صلی علیہ وسلم بچپن ہی بڑے نیک اور سچے تھے اسلئے سب لوگ آپ صلی اللہ علیہ وسلم
کو صادق کہتے تھے آپ صلی اللہ علیہ وسلم بڑے امانت دار تھے اسلئے سب آپ صلی اللہ علیہ وسلم امین
کہتے تھے چھوٹے بڑے سب آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی عزت کرتے تھے سچ ہے اگر ہم بھی نیک اور اچھے
بنے تو سب لوگ ہم سے بھی پیار کریں گے ہماری بھی عزت ہوگی ہمارے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کو
بچپن سے اپنے کام آپ کرنے کی فکر تھی خد کمانے کی اور اپنا خرچ خد اٹھانے کی فکر تھی کچھ
دن بکریاں بھی چرائیں پھر تجارت کرنے لگے ہمارے رسول صلی اللہ وسلم کو تجارت کا پیشہ
سب سے زیادہ پسند تھا آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے تجارت کو سب سے اچھا پیشہ قرار کیا ہے آپ
تجارت کے طریقے اور رنگ ڈھنگ بہت اچھی طرح جانتے تھے لین دین کا حساب صاف رکھتے سچائی
امانت داری محنت مستعدی شریفانہ برتاؤ اور میٹھی بولی پر بہت زور دیتے تھے بڑے ہوئے تو حضرت خدیجہؓ سے
شادی کی وہ بہت نیک عورت تھی اپنے شوہر کی بہت خدمت کرتی تھی بہت محبت کرتی تھی ہمارے رسول پر سو جان سے قربان

حضرت محمد مصطفیٰ ؐ

ایک دن اسکول میں ماسٹر صاحب حضرت محمد مصطفیٰ ؐ کے بارے کچھ باتیں بتا رہے تھے ظفر کے دل میں آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے حالات جاننے کا خیال پیدا ہوا اس نے پوچھا ماسٹر صاحب ہمارے رسول حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کہاں پیدا ہوئے تھے

ماسٹر صاحب نے بتایا ہمارے رسول صلی اللہ علیہ وسلم مکہ معظمہ میں پیدا ہوئے مکہ معظمہ ملک عرب کا ایک شہر ہے ملک عرب ہمارے ملک سے بہت دور مغرب کی جانب ہے جدھر سورج چھپتا ہے اسی شہر میں خانہ کعبہ ہے جس کی طرف منہ کرکے ہم نماز پڑھتے ہیں اور جہاں حاجی حج کرنے جاتے ہیں ظفر ماسٹر صاحب ہمارے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے حالات بتائیے ماسٹر صاحب بہت دن کی بات ہے چودہ سو سال سے بھی زیادہ پہلے کی بات ہے عرب کے ملک میں سب سے عزت والا قریش کا خاندان تھا ہمارے رسول ؐ اسی خاندان میں پیدا ہوئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے ابا کا نام عبداللہ اور دادا کا عبدالمطلب تھا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی امی کا نام آمنہ تھا آپ صلی اللہ وسلم کا کوئی بھائی بہن نہیں تھا ہمارے

मीडिया दर्पण

(समाचार पत्रों से...)

हिन्दुस्तान

शुक्रवार, 07 दिसंबर 2018

200 लोगो की स्वास्थ्य जांच

दैनिक जागरण

18 दिसंबर 2018

गंगा स्वच्छता की शपथ ... न हो अंतर

अमर उजाला

18 दिसंबर 2018

रैली निकालकर दिया गंगा स्वच्छता का संदेश

शाह टाइम्स

चमनलाल में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

हिन्दुस्तान

मंगलवार, 18 दिसंबर 2018

लंढौरा में गंगा स्वच्छता रैली निकाली

लंढौरा। चमनलाल महाविद्यालय के एनएसएस स्वयंसेवकों की ओर से लंढौरा में गंगा स्वच्छता रैली निकाली गई। इस दौरान गंगा स्वच्छता के बारे में विस्तार से समझाया गया। सोमवार को रैली कॉलेज से शुरू होकर मुख्य मार्गों से होती हुई वापस कॉलेज में पहुंची। इस दौरान प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय ने कहा कि नदियां, राष्ट्र के लिए रक्त परिसंचरण तंत्र की तरह होती है। कार्यक्रम में डॉ. संजीव कुमार, डॉ. निशु कुमार, प्रभात कुमार, हिमांशु, आशुतोष, सूर्यकांत, धर्मेंद्र आदि ने शिरकत की।

अजीत समाचार

मंगलवार, 18 दिसम्बर, 2018

एन.एस.एस. स्वयंसेवकों ने निकाली रैली

शाह टाइम्स

19 दिसंबर 2018

हिन्दुस्तान

अमर उजाला

बुधवार, 2 जनवरी 2019

संसदीय शैक्षिक भ्रमण पर जाएंगे चमनलाल महाविद्यालय के छात्र

रुड़की। चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा में मंगलवार को बैठक हुई। इसमें प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय ने बताया कि राजनीतिक विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राएं और शिक्षक संसदीय शैक्षिक भ्रमण के लिए दो जनवरी से जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि छात्रों को लोकसभा और राज्यसभा की सीधी कार्रवाई देखने का अवसर मिला है इससे सभी छात्रों को विषय के अध्ययन के लिए गहन अवलोकन करेंगे। डॉ. धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि संसदीय भ्रमण के लिए पूरे भारत से गिने चुने शैक्षिक संस्थानों को ही यह अवसर प्राप्त होता है। बैठक में अतुल हरित, डॉ. दीपा अग्रवाल, डॉ. नीशु कुमार, डॉ. सूर्यकांत शर्मा, दिनेश त्यागी, दिनेश कौशिक आदि मौजूद रहे। वहीं, महाविद्यालय में नववर्ष के अवसर पर रोवर्स रेंजर्स की ओर से पौधारोपण किया गया। ब्यूरो

दैनिक जागरण

2 जनवरी 2019

संसद का भ्रमण करेंगे महाविद्यालय के विद्यार्थी

भ्रमण कार्यक्रम

- भ्रमण के लिए गिने-चुने शैक्षिक संस्थानों को ही मिलता है मौका
- छात्र और शिक्षक देख सकेंगे लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही

शाह टाइम्स

बुधवार, 2 जनवरी 2019

चमनलाल में नववर्ष के अवसर पर किया वृक्षारोपण

लंढौरा। चमनलाल महाविद्यालय में आज रोवर्स रेंजर्स ने महाविद्यालय में वृक्षारोपण किया तथा नववर्ष के अवसर पर महाविद्यालय के प्रबंध समिति अध्यक्ष राम कुमार शर्मा एवं प्राचार्य डॉ सुशील उपाध्याय ने पर्यावरण सरक्षण के लिए पालिथीन एवं प्लास्टिक को प्रतिबंधित एवं प्रयोग न करने का आहवान किया। रोवर्स रेंजर्स के प्रभारी डॉ. सूर्यकान्त शर्मा एवं डॉ. रिचा चौहान ने इस अवसर पर रोवर्स रेंजर्स एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को पर्यावरण सरक्षण के संबंध ...

अमर उजाला

छात्रों ने देखी लोकसभा की कार्यवाही

दैनिक जागरण

5 जनवरी 2019

छात्रों ने देखी संसद की कार्यवाही

शाह टाइम्स

43 शिक्षक व छात्र लोकसभा की कार्यवाही देखने पहुंचे संसद

अजीत समाचार

जैव विविधता को बाजारवादी दृष्टि से बचाने की जरूरत : डा. निशंक

सोमवार, 7 जनवरी, 2019

दैनिक जागरण

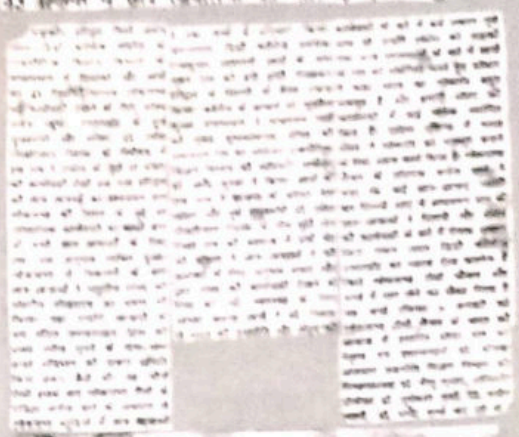

जैव विविधता को बचाने की जरूरत

चमन लाल महाविद्यालय में जैव विविधता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

हिन्दुस्तान

चमनलाल महाविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में हरिद्वार सांसद निशंक बोले

जैव विविधता को बाजारवादी दृष्टि से बचाने की आवश्यकता

अमर उजाला

SUNDAY 19.08.2018

पूर्व प्रधानमंत्री को दी श्रद्धांजलि

अमर उजाला

बृहस्पतिवार, 26 जुलाई 2018

श्रीदेव सुमन की याद में रोपे पौधे

लंढौरा। शहीद श्रीदेव सुमन की शहादत दिवस पर चमन लाल महाविद्यालय में पौधारोपण किया गया। इस दौरान महाविद्यालय के प्र[illegible] समिति अध्यक्ष ने शहीद श्रीदेव सुमन के योगदान पर प्रकाश डाला। इस मौके पर महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा बताया कि टिहरी राज्य से राजशाही को समाप्त करने में श्रीदेव सुमन का विशेष योगदान रहा है। जिन्होंने कष्टों को सहते हुए टिहरी को [illegible] को राजशाही से मुक्ति दिलाई। इस मौके पर महाविद्यालय में [illegible] याद में पौधे लगाए गए। इस दौरान प्रबंध समिति [illegible] अतुल, डा. दीनपाल, डा. सूर्यकांत शर्मा, डा. [illegible]

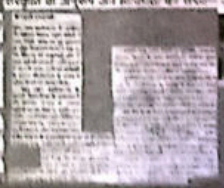

राष्ट्रीय सहारा

शाह टाइम्स

रविवार, 2 सितम्बर 2018

चमनलाल में उच्च शिक्षा गुणवत्ता एवं विकास संगोष्ठी का आयोजन

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा में स्थापना दिवस सप्ताह के अंतर्गत दिनांक 01 सितम्बर को उच्च शिक्षा गुणवत्ता एवं विकास विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष राम कुमार शर्मा [illegible]

अमर उजाला

जैव विविधता को बाजारवाद से बचाने की जरूरत: निशंक

शाह टाइम्स

[illegible], 26 जुलाई 2018

श्रीदेव सुमन के शहादत दिवस पर किया वृक्षारोपण

शाह टाइम्स

रविवार, 19 अगस्त 2018

चमन लाल महाविद्यालय में पूर्व प्रधानमंत्री पर संगोष्ठी का आयोजन

हिन्दुस्तान गुरुवार, 22 अगस्त 2018

225 छात्र-छात्राओं के ब्लड ग्रुप की जांच

लंढौरा। चमनलाल महाविद्यालय में 225 छात्र-छात्राओंके ब्लड ग्रुप की जांच की गई। माइक्रोबॉयोलॉजी विभाग की ओर से यह निशुल्क शिविर लगाया गया। अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने बताया कि शिविर में 225 छात्र छात्राओं के ब्लड ग्रुप की जांच की गई है।

अमर उजाला बृहस्पतिवार, 6 सितंबर 2018

जीवन जीने की राह दिखाते हैं शिक्षक

दैनिक जागरण

छात्रवृत्ति वितरित की

20 सितंबर 2018

देहरादून, गुरुवार

लंढौरा : चमन लाल महाविद्यालय में निर्धन छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इस मौके पर प्रबंधक राजकुमार शर्मा ने बताया कि पिछड़ा एवं सामान्य वर्ग के छात्र प्रदीप कुमार, शुभम सैनी, शावेज, अंकित कुमार, रोहित कुमार, मोहित कुमार, मोहित शर्मा, शिवम शर्मा, अर्जुन कुमार, शाहिल, हिमांशु, राजू कुमार, विनय कुमार, भीम सिंह, शाहरुख, तमन्ना, अंशुल कुमार समेत 19 छात्रों को छात्रवृत्ति दी गई। इस मौके पर प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय और अन्य शामिल रहे।(संसू)

हिन्दुस्तान 22 अगस्त 2018

225 छात्र-छात्राओं के ब्लड ग्रुप की जांच

दैनिक जागरण 27 सितंबर 2018

भक्तों की रक्षा को आते हैं भगवान

शाह टाइम्स रविवार, 2 सितम्बर 2018

चमनलाल में उच्च शिक्षा गुणवत्ता एवं विकास संगोष्ठी का आयोजन

दैनिक जागरण 2 सितंबर 2018

स्थापना दिवस पर संगोष्ठी

लंढौरा : चमनलाल महाविद्यालय लंढौरा में स्थापना दिवस सप्ताह के अन्तर्गत संगोष्ठी का आयोजन किया। इस पर उच्च शिक्षा की समस्याएं एवं गुणवत्ता विषय पर विचार विमर्श किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि मनोज नायक, अध्यक्ष रामकुमार शर्मा, प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय, डॉ. प्रभात कुमार, डॉ. विपुल सिंह, डॉ. धर्मेन्द्र आदि ने विचार व्यक्त किए।(जासं)

दैनिक जागरण 25 अगस्त 2018

स्वच्छता पर दिया जोर

दैनिक जागरण 7 सितंबर 2018

महाविद्यालय के स्थापना दिवस पर रंगारंग प्रस्तुति

शाह टाइम्स शुक्रवार, 7 सितम्बर 2018

चमनलाल में स्थापना दिवस का आयोजन

शाह टाइम्स बुधवार, 19 सितम्बर 2018

दैनिक जागरण

कथा के शुभारंभ से पूर्व निकाली कलश यात्रा

शाह टाइम्स

चमनलाल में सामान्य व पिछड़ा वर्ग के छात्रों को दी छात्रवृत्ति

दैनिक जागरण 20 सितंबर 2018

छात्रवृत्ति वितरित की

अमर उजाला

चंदनपुर में कलश यात्रा निकाली

अमर उजाला सोमवार, 28 जनवरी 2019

शौर्य दीवार पर देश के अमर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय में धर्म जागरण मंच के प्रांत अध्यक्ष अनुराग ने ध्वजारोहण किया। इसके बाद शौर्य दीवार पर देश के अमर शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मुख्य अतिथि अनुराग, शैक्षणिक अध्यक्ष ईश्वर चंद शर्मा, प्रबंध समिति अध्यक्ष राम कुमार शर्मा, सचिव अरुण कुमार हरित, कोषाध्यक्ष अतुल हरित एवं प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय ने मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रबंध समिति अध्यक्ष राम कुमार शर्मा ने कहा कि हम अपनी दृष्टि को सकारात्मक रखकर ही राष्ट्र के विकास में भूमिका निभा सकते हैं। प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय ने कहा कि वास्तविक गणतंत्र तब आएगा, जब हम विकास को देश के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में सक्षम हो सकेंगे। छात्रा ख्याति और योगेश देशभक्ति गीत पर नृत्य, गौहर अब्बास ने है प्रीत जहां की रीत सदा... मोहम्मद अजीम ने मेरे भारत की बात कर और अनीस ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत कर खूब वाहवाही लूटी। ब्यूरो

अमर उजाला

19 छात्र-छात्राओं को दी गई छात्रवृत्ति

बृहस्पतिवार, 20 सितंबर 2018

शाह टाइम्स शुक्रवार, 7 सितम्बर 2018

चमनलाल में स्थापना दिवस का आयोजन

अमर उजाला SUNDAY | 02.09.2018

कालेज का स्थापना दिवस मनाया

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय कालेज का शनिवार को स्थापना दिवस मनाया गया। इस मौके पर उच्च शिक्षा गुणवत्ता एवं विकास विषय पर विचार गोष्ठी हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि मनोज नायक, प्रबंध समिति के अध्यक्ष रामकुमार शर्मा और प्राचार्य डॉ. सुशील उपाध्याय ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर स्वर्गीय पंडित चमन लाल शर्मा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

महाविद्यालय परिवार

शिक्षक वर्ग

डॉ. सुशील उपाध्याय, प्राचार्य

कला संकाय

1) **अंग्रेजी विभाग** –
डॉ. दीपा अग्रवाल, सहायक आचार्या
डॉ. अपर्णा शर्मा, सहायक आचार्या

2) **अर्थशास्त्र विभाग** –
डॉ. विमलकांत तिवारी, सहायक आचार्य

3) **इतिहास विभाग** –
डॉ. सूर्यकान्त शर्मा, सहायक आचार्य

4) **चित्रकला विभाग** –
सुश्री कल्पना, अंशकालिक प्रवक्ता

5) **गृह विज्ञान विभाग** –
डॉ. नीतू गुप्ता, सहायक आचार्या
अनामिका चौहान, सहायक आचार्या

6) **भूगोल विभाग** –
डॉ. नवीन कुमार त्यागी, सहायक आचार्य

7) **राजनीति विज्ञान विभाग**–
डॉ. नीशू कुमार, सहायक आचार्य
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, सहायक आचार्य

8) **समाजशास्त्र विभाग**–
श्री नवीन कुमार, सहायक आचार्य
डॉ. हिमांशु कुमार, सहायक आचार्य

9) **संस्कृत विभाग**–
डॉ. अनिता रानी, सहायक आचार्या

10) **हिन्दी विभाग**
डॉ. मीरा चौरसिया, सहायक आचार्या
श्री आशुतोष शर्मा, सहायक आचार्य

11) डॉ. किरन शर्मा, सहायक आचार्या
डॉ. देवपाल, सहायक आचार्य

विज्ञान संकाय

1) **गणित विभाग**–
श्री विनीत कुमार, सहायक आचार्य
डॉ. तरुण कुमार गुप्ता, सहायक आचार्य

2) **जन्तु विज्ञान विभाग**–
डॉ. विंध्य त्यागी, सहायक आचार्या
डॉ. दीपिका सैनी, सहायक आचार्या

3) **भौतिक विज्ञान विभाग**–
श्री विपुल सिंह, सहायक आचार्य
डॉ. अरविन्द कुमार, सहायक आचार्य

4) **भूगर्भ विज्ञान विभाग** –
श्री महेश नौटियाल, अंशकालिक प्रवक्ता

5) **रसायन विज्ञान विभाग**–
डॉ. संजीव कुमार, सहायक आचार्य

6) **वनस्पति विज्ञान विभाग**–
डॉ. मो. इरफान, सहायक आचार्य
डॉ. ऋचा चौहान, सहायक आचार्या

7) **सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग**–
डॉ. प्रभात कुमार सिंह, सहायक आचार्य

8) **कम्प्यूटर सांइस विभाग**–
श्री राजेश कुमार, अंशकालिक प्रवक्ता

पुस्तकालय विज्ञान विभाग–
श्री कुलदीप कुमार, सहायक आचार्य
डॉ. पुनीता शर्मा, सहायक आचार्या

प्रयोगशाला सहायक

क्र.स.	नाम	विभाग
1.	श्री अभिषेक	(भूगर्भ विज्ञान)
2.	श्रीमती रीना गुप्ता	(गृह विज्ञान)
3.	सुश्री सोनिया	(गृह विज्ञान)
4.	श्रीमती प्रणीता भण्डारी	(कम्प्यूटर विज्ञान)
5.	श्री जितेश बगडवाल	(कम्प्यूटर विज्ञान)
6.	श्री अमित बहादुर	(चित्रकला)
7.	श्रीमती प्रियंका शर्मा	(रसायन विज्ञान)
8.	सुश्री दीपाक्षी शर्मा	(माइक्रोबाइलॉजी)
9.	श्री नावेद आसिफ	(भूगोल)
10.	श्री गौरव अग्रवाल	(भौतिक विज्ञान)
11.	श्री भुवन चन्द्र ब्रजवासी	(जन्तु विज्ञान)
12.	सुश्री वैशाली	(वनस्पति विज्ञान)

कार्यालय

क्र.स.	नाम	पद
1.	श्री दिनेश कुमार	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री विदित कौशल	लेखाकार
3.	श्रीमती मंजू लता	उप स. पुस्तकालयाध्यक्ष
4.	श्री निशिथ कुमार	स्टेनो
5.	श्री दिनेश कौशिक	कनिष्ठ सहायक
6.	श्री सचिन शर्मा	कनिष्ठ सहायक
7.	श्रीमती मंजू रानी	कनिष्ठ सहायक
8.	श्री दीपक चौधरी	कनिष्ठ सहायक
9.	श्री विपिन कुमार	कनिष्ठ सहायक
10.	श्री विशाल कुमार	कनिष्ठ सहायक
11.	श्री सुमित कौशिक	कनिष्ठ सहायक
12.	श्री रविन्द्र सिंह	कनिष्ठ सहायक

चतुर्थ श्रेणी वर्ग

क्र.स.	नाम
1.	श्री अमित कुमार गुप्ता
2.	श्री अनुज कुमार
3.	श्री अनुराग पाल
4.	श्रीमती अर्चना
5.	श्री अर्जुन कुमार
6.	श्री अश्वनी शर्मा
7.	श्री दिनेश कुमार
8.	श्री दुष्यन्त कुमार

क्र.सं.	नाम
9.	श्री प्रदीप कुमार
10.	श्री प्रमोद कुमार
11.	श्री राजन हरित
12.	श्री संजय कुमार
13.	श्री सतीश कुमार
14.	श्री सत्तार
15.	श्री विनय कुमार

कम्प्यूटर प्रयोगशाला एवं द्वितीय तल का लोकार्पण

छात्र–छात्राओं का दूरदर्शन टीम के साथ साक्षात्कार

गृहविज्ञान विभाग द्वारा हस्तशिल्प प्रदर्शनी

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित गणित एवं विज्ञान मॉडल प्रदर्शनी

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कवि सम्मेलन

वार्षिक पत्रिका विमोचन

राष्ट्रीय गणित दिवस– 2018

महाविद्यालय में आयोजित NSS गतिविधियां

चित्रकला विभाग की उपलब्धि

महाविद्यालय में आयोजित NCC गतिविधियां

महाविद्यालय छात्रों का संसद भ्रमण

महाविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठियां

स्काउट एंड गाइड प्रशिक्षण शिविर

महाविद्यालय स्थापना दिवस

वीर अमर जवान शहीदों को श्रद्धांजलि

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

सम्बद्ध : श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
बादशाली थौल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड–249149

श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, टिहरी गढ़वाल से सम्बन्धित पाठ्यक्रम

बी.ए./एम.ए.	:	(विषय-हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, चित्रकला, अर्थशास्त्र, भूगोल, गृहविज्ञान राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र)	3 वर्षीय
बी.कॉम/एम.कॉम	:	सी.एफ.ए./नॉन.सी.एफ.ए.	
गणित संवर्ग			
बी.एससी./एम.एससी.	:	भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित भौतिक विज्ञान, गणित, भूगर्भ विज्ञान भौतिक विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान	3 वर्षीय
प्राणी विज्ञान संवर्ग			
बी.एससी./एम.एससी.	:	वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, सूक्ष्म जीवन विज्ञान वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान	3 वर्षीय
बी.एससी./एम.एससी.	:	गृह विज्ञान	2 वर्षीय
बी.लिब.	:	पुस्तकालय विज्ञान	1 वर्षीय

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बन्धित पाठ्यक्रम

एम.लिब.	1 वर्षीय
एम.ए. (योगाचार्य)	2 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (योग)	1 वर्षीय
पी.जी.डी.सी.ए.	1 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (ज्योतिष)	1 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (वास्तुशास्त्र)	1 वर्षीय
पी.जी. डिप्लोमा (पौरोहित्य एवं कर्मकाण्ड)	1 वर्षीय
एम.ए. (आचार्य) हिन्दी एवं भाषा विज्ञान	2 वर्षीय
एम.ए. (आचार्य) इतिहास	2 वर्षीय
एम.ए. (आचार्य) पत्रकारिता	2 वर्षीय

Visit us at:
Website : www.cldcollege.com, Fax/Phone 01332-251492, 251493
E-mail : cldegree21@gmail.com
COntact No.: 7456099119, 9719757846, 7017590322